HOLIKA DAHAN - CHANDAALINI SADHNA VIDHAAN

होली पर्व की आप सभी को ढेर सारी शुभकामनाएं.

जीवन की आवशयकता की प्राप्ति का मार्ग सुगम हो सके और कम प्रयासों में सफलता की प्राप्ति हो.इस हेतु व्यक्ति को काल गणना का ज्ञान होना चाहिए.जब हम उचित समय का चयन कर तदनुरूप प्रयोग कर सके. विशिष्ठ मुहूर्त में की गयी साधना का प्रभाव भी उतना ही तीक्ष्ण और विशिष्ठ होता है. होली की रात्रि का प्रयोग विभिन्न प्रकार की साधना हेतु किया जाता है.साधक की अपनी मनोकामना होती है, कोई सौंदर्य साधनाओं को संपन्न करना चाहता है,कोई यक्षिणी,अप्सरा का प्रत्यक्षीकरण,कोई षट्कर्म में सफलता के लिए इसका प्रयोग करना चाहता है तो कोई देवत्व की प्राप्ति हेतु,किसी का उद्देश्य वशीकरण सिद्धि होता है तो कोई अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति को सुगम करना चाहता है. कहने का अर्थ ये है **की साधक की मनसा पूर्ती के लिए ये अद्भुत रात्रि है**.

हम हमारी कामना अनुसार किसी भी साधना को इस रात्रि में संपन्न कर परिणाम की प्राप्ति कर सकते हैं.**सदगुरुदेव प्रदत्त,तंत्र कौमुदी,ब्लॉग अथवा ग्रुप में किसी भी भाई द्वारा अनुभूत साधना को संपन्न कर हम सफलता की प्राप्ति कर सकते हैं**.

लगभग हममें से सभी ने किसी ना किसी साधना का चयन आज की रात्रि के लिए किया हि होगा,आखिर इतना बहुमूल्य समय हम ऐसे कैसे व्यर्थ जाने देंगे. इसलिए मैंने किसी विशेष प्रयोग को ना देने का हि मन बनाया था क्यूंकि उससे साधक के मन में दुविधा उत्पन्न होती. किन्तु बहुत से साधक के मेल आये थे तीव्र धन प्राप्ति और वशीकरण शक्ति की सम्मिलित प्राप्ति हेतु.अतः मैं ये साधना उसी हेतु यहाँ दे रहा हूँ जो की पूर्ण तांत्रिक साधना है जो नियमों से परे है.और होलिका दहन की रात्रि को मात्र **३ माला** करके इस मंत्र में शक्ति उत्पन्न की जा सकती है,फिर जैसे जैसे भविष्य में आप इस मंत्र को करेंगे,आपको स्वतः ही धन की प्राप्ति होते जायेगी. वस्तुतः ये मंत्र कई नियमों को शिथिलता देता है और शायद इसलिए बहुत से

साधक को ये रुचिकर भी लगेगा. शाम को भोजन नहीं करना है.और होलिका दहन की रात्रि का मतलब आज की रात्रि का **९.३२ से सुबह ३.५६** तक का मुहूर्त पूर्ण साधनामय है.अतः हम इसी मुहूर्त का कोई भी काल खंड प्रयोग कर सकते हैं,और उसके बाद या पहले किसी भी अन्य साधना को संपन्न कर सकते हैं.साधना के पूर्व यदि कुछ ना खाया जाये तो बेहतर है.

पश्चिम दिशा की और मुख करके साधना की जाएगी,लाल या पीले वस्त्र का मात्र आज प्रयोग करना है. दीपक तिल के तेल का प्रयोग होगा,धूप बत्ती का निषेध रहेगा.उड़द के बड़े और कुछ मिष्ठान को भोग के रूप में प्रयुक्त करना है. गुरु पूजन,मंत्र जप,गणपति पूजन के पश्चात आप इस मंत्र की ३ माला मूंगा या रुद्राक्ष माला से करें.

ॐ नमो उच्छिष्ट चंडालिनि पुरपाटण क्षोभणी आकर्षिणी आकर्षिणी आकर्षय आकर्षय द्रव्य आनय आनय ह्रीं फट् स्वाहा ||

OM NAMO UCHCHHISHT CHANDAALINI PURPAATAN KSHOBHNI AAKARSHINI AAKARSHINI AAKARSHAY AAKARSHAY DRAWYA AANAY AANAY HREEM PHAT SWAHA

साधना पूरी होने के बाद आप अगले दिन भोग आदि को सुनसान स्थान पर रख दें और बाद में इस मंत्र को बिना नहाये,शौचादि के लिए जाते हुए भी कर सकते हैं,बिना कुल्ला किये,बिना मुह धोये भी खाने के बाद भी कर सकते हैं. अर्थात **शुचिता अशुचिता का ध्यान रखना अनिवार्य नहीं है.इसका तात्पर्य ये है की भविष्य में बिना माला अथवा माला के मात्र १ माला ही करना है,फिर चाहे आप जप जप स्थल पर बैठ कर करें अथवा बिस्तर पर,या झूठे मुंह की अवस्था में**.

हाँ ये विधान है जरुर अजीब क्यूंकि इसमें शुरू के ७ दिनों तक गंदे स्वप्न आदि दृष्टिगोचर होते हैं.किन्तु ८ वे दिन से आपके जप के प्रभाव से यही शुभ संकेतों में परिवर्तित हो जाते हैं जो की नकारात्मकता समाप्त होकर सकारात्मकता का उदय बताती है.**धन के आकर्षण और वशीकरण की तीक्ष्ण शक्ति की प्राप्ति होना इस**

साधना के द्वारा संभव हो जाती है.इसी मंत्र की सिद्धि के बाद कई अघोर और तीव्र कार्यों का सम्पादन भी किया जाता है.जिसके लिए अलग विधान है.जिन पर हम भविष्य में चर्चा करेंगे.आज की रात्री इस लघु किन्तु विलक्षण विधान को आप प्रयोग कर लाभ पायें,यही कामना करता हूँ**.**

HOLASHTAK KE KUCHH TAANTRIK PRAYOG

जय सदगुरुदेव ,

प्रिय स्नेही स्वजन,

अति विशिष्ट और महत्वपूर्ण दिवस कि शुरुआत हो रही है होलिकाष्टक जो कि होली के पूर्व सात दिन पहले से प्रारंभ होकर धुरेंडी तक चलते हैं,

एक तो तंत्र दिवस और उस पर होलिकाष्टक जैसे दिवस, तो क्यों ना इसका सार्थक और सदुपयोग हो----

साधकों के लिए ही तो इस तरह के दिवस की उपयोगिता होती है क्योंकि साधक ही उस क्षण विशेस को जानकर, समझ कर इसका उपयोग करने से नहीं चूकते, वे जानते हैं कि जो कार्य अन्य दिनों मे संभव ना हो, वो सब कार्य या सिद्धि इन विशेस दिवस मे संपन्न हो ही जाते हैं .

भाइयों बहनों मै जानती हूं कि अब आप सब हमेशा तैयार ही रहते हैं साधना करने के लिए------ :)

वर्ष के महत्वपूर्ण दिवस दारुण रात्रि जो कि होली दहन के दिन को कहा गया . महारात्रि यानि महाशिव रात्रि , मोह रात्रि, यानि कृष्णजन्माष्टमी, और महानिशा यानि दिवाली . इसके अलावा विशिष्ट दिनों मे जो कि दीर्घकालीन दिवस हैं वे नवरात्री (दोनों) और श्रावणमास . इस तरह हमारे पास साधनाओं के लिए बहुत समय मिलता है .

परन्तु जब दीर्घकालीन साधनाओं कि बात आती है तो सबसे पहले ध्यान आता है समय का कि समय कहाँ है , ऑफिस, बिजनिस, टूर और घर के

अन्य कार्य....... वही अनु भैयाजी वाली बात..... टेम नाय है ...... :)

किन्तु भाइयों बहनों क्या हम एक दिन मे ही सफलता पूर्वक साधना कर सकते हैं ? क्या एक दिन मे ही सिद्धि प्राप्त हो सकती है ? नहीं ना !

मेरे पास कुछ ऐंसे मैसेज आते है, कि कोई एक दिन कि ऐसी साधना करवा दीजे जिससे कि मेरी धन सम्बन्धी समस्या हल हो जावे, या मेरी शादी कि समस्या, या कोर्ट कि समस्या, या बिजनस मे नुकशान कि भरपाई हो जाये .

आश्चर्य होता है कि हम जानबूझकर ऐसा कैसे कह या कर सकते हैं, भाइयों मै जानती हूं कि आपकी मजबूरी कभी ऐंसा करवाती है और ये सच भी है, कुछ प्रयोग ऐंसे है जो एक ही दिन् मे अति तीक्ष्ण और शीघ्र प्रभावकारी हैं . किन्तु वो आपको कुछ समय के लिए ही आराम देंगे. जैसे बीमारी मे आप तुरंत दर्द से आराम के लिए दवाई ले लेते हैं किन्तु समझ दार लोग गोली नहीं अपितु टीके का प्रबंध करते हैं, जो कि लाइफ टाइम के लिए होता है....... है ना :)

चलो अब हम मुख्य बात पर आते हैं कि दीर्घकालीन साधना आवश्यक है या लघु प्रयोग ! तो समय विशेष कि उपयोगिता को समझा जाये तो तो लघु प्रयोग भी लाभकारी हैं . परन्तु भाइयों जिन्हें सिर्फ साधना के कई अलग-अलग आयामों को छूना है या सिद्धि के मर्म को समझना है वे अवश्य ज्यादा से ज्यादा समय साधना मे ही लगाते भी हैं

और दीर्घकालीन साधनाओ को ही अपनाते हैं..... :) यानि टीके का ही प्रयोग करते है, किन्तु जिनके पास समय कि कमी है या जिन्हें मजबूरीवश तुरंत आवश्यकता है वे लघु साधना कर भी अपने जीवन कि समस्याओं को सरल करते है....... और इसके लिए हमें समय विशेस को समझना चाहिए.... है ना ... :)

सदगुरुदेव ने इस विषय पर अनेक बार समझाया है, क्षण के महत्व को, समय के महत्व को, कि एक साधक कैसे उस क्षण को पकड़ कर उसका सदुपयोग करता है..... कैसे वो उस क्षण को अपने लिए प्रभावकारी बना लेता है......

अनेकों बार गुरुदेव भजन रोककर या समयानुसार समय देखकर दीक्षाएं और प्रयोग करवा दिया करते थे........

तो क्यों ना हम भी उन क्षणों को पकड़ने कि कला सीखें? क्यों ना हम भी उस समय का सदुपयोग करें..... :) है ना

तंत्र दिवस और उस पर होलिकाष्टक है ना विशिष्ट समय तो पकड़ लीजिए उन क्षणों को, और कर लीजिए आसान राह जिंदगी की ...... क्योंकि यही वो समय है जिसका साधक, विशेसकर तंत्र साधक, बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करते हैं, क्योंकि यही वो समय होता है जब हमे हमारा अभीष्ट बिलकुल सामने दिखाई देता है बस आवश्यकता है उसे पकड़ने की......

भाइयों-बहनों सामान्यतः होली पर जो साधनाएं करना चाहते हैं वे या तो साबर साधनाएं या फिर अप्सरा या यक्षिणी सिद्धि साधना . किन्तु कुछ ऐंसे साधक भी हैं जो इन सबसे हटकर कुछ ओर करना चाहते हैं, किन्तु क्या ?

भाइयों सदगुरुदेव ऐंसे ही प्रश्नों के उत्तर हेतु अक्सर कुछ लघु प्रयोग दे दिया करते थे ------ :)

भाइयों-बहनों तो अब आप तैयार हो जिसका मन जो करे या जिससे सम्बंधित जो साधना करना चाहे का सकता है चाहे तो पूरे समय का उपयोग करे या फिर इन सात दिनों मे से चुन कर १, २, ३ जो करना चाहे कर सकते हैं...... ये साधनाएं जो बदल सकती हैं आपकी क्रिया शैली को, आपकी, नियति को-----

१- वशीकरण मन्त्र- जो आपके जीवन मे सदैव काम आयेगा क्योंकि इसके द्वारा आप कोई भी असम्भव कार्य करवा सकते हैं......

२- विवाद और मुक़दमे आदि मे विजय दिलाने हेतु- ऐंसा कोई व्यक्ति है ही नहीं कि इस तरह कि किसी विबाद मे कभी ना फंसे..... तो वो इसका प्रयोग कर सकते हैं...

३- विवाहोंपरांत कन्या के सुखी जीवन हेतु .... बड़े प्यार और लाड से बेटियों

को पाला जाता है किन्तु शादी के बाद अक्सर कभी दहेज या और किसी बात को लेकर उसका जीवन नर्क कर दिया जाता है और तब हम सोचते हैं कि अब क्या करें...?

तो क्यों ना पहले ही ये उपाय करके रख लिया जाये जिससे कि हमारी बेटी और बहन पूर्ण सुखमय दाम्पत्य जीवन जी सकें....

भाइयों-बहनों ये सभी मन्त्र मैने अनेकों बार आजमायें हैं. अलग अलग स्रोतों से ये विधान प्राप्य हुए हैं किन्तु इनकी सफलता इनके प्रभाव को प्रमाणित भी करती है.

आज से ६-७ वर्ष पहले मेरे पति बहुत बीमार हो गए थे, उस मैने कुछ समय तक ज्योतिष से सम्बंधित कार्य किया और उस मेरे पास हेंडप्रिंट और कुंडलियाँ आती थी तथा मै अपने पति की मदद से ही इन कार्यों को सम्हाल रही थी तब मैंने ये प्रयोग बहुत बार आजमाए, गुरुदेव की कृपा से हर बार पूर्ण सफल भी रही...... अतः इस बार होली पर आप सबके लिए आरिफ जी के कहने पर ये दिव्य और अति तीव्र प्रभावकारी मन्त्र......

एक बात याद रखिये कि इस समय इन मंत्रो और सामग्री को आप सिद्ध कर रहें हैं, इनका प्रयोग तो बाद आवश्यकतानुसार आप कर सकते हैं...... :)

<u>वशीकरण मंत्र -</u>

साधना सामग्री हेतु -- सिन्दूर, रोली, और तेल जिसे आप अभिमंत्रित करना चाहते हैं, तेल सरसों या तिल का हो .

दिशा उत्तर या पश्चिम, आसन लाल, मूंगा माला वस्त्र भी लाल हो तो बेहतर या इक्छा अनुसार .

रात्रि १० बजे के बाद स्नान कर पश्चिम दिशा कि ओर मुंह कर बैठ जाएँ, गुरु, गणपति का संक्षिप्त पूजन कर गुरु मन्त्र कि ४ माला संपन्न करें ओर संकल्प लें कि मै इस मन्त्र को सिद्ध करने हेतु ये साधना संपन्न कर रहा हूं.... अब अपने सामने दो कोरे यानी नए दिये, एक कटोरी जिसमे क्रमशः सिन्दूर, रोली ,और

कटोरी मे तेल भरकर अपने सामने रख लें .....
फिर मूंगा माला से निम्न मन्त्र कि मात्र ५ माला संपन्न करें . और फिर चार माला गुरु मन्त्र कि संपन्न करें व् मन्त्र गुरुदेव को समर्पित करें.....
मन्त्र-

"ॐ नमो आदेश गुरु जी कौ, रो रो जोगणी, रो रो काली, ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली, सुका घट जावै ताली चौसठ जोगणी, अंग-अंग मोड़ी, अस्त्री पुरुष लगावै संग तेल, रै तेल क्या करै खेल अंगनीभिजी माया निलगीत चौसठ योगिनी की आण पडै, छोड़-छोड़ गौरी हीरौं की वाट आवै, जौरी हमारी खाट मोह मन्त्र छूटा जाई तो गुरु गोरख नाथ को मास खाई फुरो मन्त्र ईश्वरो मन्त्र वाचा."

जब भी वशीकरण की क्रिया को प्रयोग करना हो तो इसी मंत्र की १ माला कर तेल को सम्बंधित व्यक्ति के वस्त्र पर लगा दें.

विवाद मुकद्दमे आदि मे विजय दिलाने हेतु....
साधना सामग्री-- काले हकीक की माला, सफ़ेद आक की जड़, जिसे आपको एक दिन पूर्व निमंत्रित कर लाना है, लाल आसन, दक्षिण या पश्चिम, वस्त्र लाल....
अब सफ़ेद आक की जड़ को अपने सामने बाजोट पर लाल कपडे पर ही स्थापित कर लें और गुरु गणपति पूजन संपन्न कर गुरुमंत्र की ४ माला जप कर निम्न मन्त्र की मात्र ११ माला जप सम्पन्न करें----
मन्त्र-

" ॐ नमो भैरवायखड्गपरशुहस्ताय
ॐ हूं विघ्नविनाशय ॐ हूं फट "

इसके बाद भी गुरु मन्त्र की चार माला जप करें .... मंत्र जप के पश्चात दुसरे दिन

उस प्रतिष्ठित आक की जड़ को हाथ मे धारण कर लें.आप स्वयं ही परिणाम की सकारात्मकता के साक्षी होंगे.

भाइयों एक बात का ध्यान रखें की प्रत्येक जप के पहले और बाद मे गुरुमंत्र की चार माला जप संपन्न करना ही है......

३- विवाहोपरांत कन्या के पूर्ण सुखी दाम्पत्य हेतु....

साधना सामग्री- साम्भर नमक, सफ़ेद आसन, दक्षिण दिशा और समय लगभग सवा घंटा, इसमें माला प्रयोग नहीं होगी एवं कर माला का ही प्रयोग होगा, और सांभर नमक जो कि किसी भी पंसारी कि दुकान मे बड़ी आसानी से मिल जाता है.... गुरु पूजन,गणपति पूजन व मंत्र जप के बाद नमक को सामने बाजोट पर रख कर उसके सामने मंत्र का लगभग सवा घंटे तक जप करें.

मंत्र-

"ॐ नमो भौगराज भयंकर पीर भूप सुतई धरइ जो दीखे मार करन्ता, सो-सो दीखे पाँव परन्ता ॐ नमो ठ: ठ: स्वाहा."

कन्या के विवाह उपरान्त वो इस नमक को लाल वस्त्र मे बांध कर स्वयं के शयन कक्ष में रख ले.पूर्ण शान्ति की प्राप्ति होगी.

TANTRA SIDDHI- HAAJRAAT SAADHNAA

फटे कपडे, बिखरे और उलझे बाल , अजीब सी ही वेशभूषा थी उनकी और बहुत असहज सा महसूस कर रहा था मैं उनके साथ , पर बंगाली माँ का आदेश था मेरे लिए की मुझे उनके साथ रहना है और सदगुरुदेव के द्वारा प्रदत्त विभिन्न साधनाओं का जो संकलन और अनुभव उन्होंने प्राप्त किया है वो मुझे उनके सानिध्य लाभ से लेना है. उनके पास ऐसा संकलन है ऐसा सुनकर मैं काली खोह (विन्ध्याचल) से मुगलसराय स्टेशन पहुंचकर जबलपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ गया .

रास्तेभर जो भी माँ ने उनके बारे में बताया था वही सब सोचता रहा , जबलपुर पहुच कर पहले बाज्नापीठ जाकर भैरव के दर्शन किये और फिर माँ नर्मदा के तट

की ओर चल पड़ा. जबलपुर मेरा इसके पहले भी कई बार जाना हो चूका था. और आश्चर्य की बात ये है की हर बार एक नवीन रहस्य ही मेरे सामने खुलते जाता साधना जगत का.

एक से एक सिद्धों से भरा हुआ शहर , चाहे वो जैन तंत्र से सम्बंधित हो या फिर मुस्लिम या शाबर तंत्र से सम्बंधित , किसी ज़माने में यहाँ की जाने वाली तांत्रिक क्रियाओं का कोई जवाब नहीं होता था पर समय के साथ साथ ये सिद्ध और इनकी परम्पराएँ गुप्त सी ही हो गयी थी. भाई अरविन्द, हसदबक्स , जीवन लाल , मणिका नाथ , अवधूती माँ और अब एक नए गुरुभाई पारितोष बनर्जी से मुलाकात होने जा रही थी.

सन १९९३ की बात है चैत्र नवरात्री का शिविर संपन्न होने के बाद मैं अपनी साधनाओं के लिए सीधे विन्ध्याचल बंगाली माँ के पास चला गया था और तबसे से गर्मी, गर्मी और गर्मी.उस शिविर में ही गुरुदेव ने एक नवीन तथ्य का मुझे ज्ञान दिया था की **“तुम शाक्त साधनाओं को संपन्न करने के लिए विन्ध्याचल चले जाओ और ध्यान रखो की शाक्त साधनाओं के स्वर तंत्र का गहन अभ्यास करना,उससे साधनाओं में शीघ्र ही सफलता मिलती है क्योंकि बाये स्वर द्वारा जब श्वास प्रश्वास की क्रिया चल रही हो तभी शक्ति मन्त्रों का जप उचित होता है क्योंकि मन्त्र पुरुष तब चैतन्य होता है और दाये श्वास प्रश्वास की क्रिया के मध्य शक्ति सुप्त रहती है परन्तु और बेहतर होता है की जिस भी मंत्र का जप किया जा रहा हो उस मन्त्र के पहले और बाद में “ईं” बीज जो की कामकला बीज है लगाकर जप करने से भगवती शक्ति की निद्रा भंग हो जाती है” इसी तथ्य को ध्यान में रख कर अपनी साधनाएं मैंने पूरी की.**

वहाँ से जब जबलपुर पंहुचा था तब मई का मध्य आ गया था और मई की गर्मी जैसे दिमाग को फोड ही डालती , सूरज सिर को जैसे पिघलाने को ही आतुर था, बोतल का पानी भी खत्म होने वाला था पर जैसे तैसे जी कड़ा कर मैं लगातार चलते ही जा रहा था . मुझे माँ ने बताया था की तुम्हे सरस्वती घाट से नीचे उतर

कर बस सीधे हाथ की तरफ नाक की सीध में चले जाना. लगभग ३ किलोमीटर के अंदर ही शमशान से लगी हुयी उनकी झोपडी है .

पर मैं उन्हें पहचानूँगा कैसे –मैंने माँ से पूछा था.

तुम उसे नहीं बल्कि वो तुझे पहचान लेगा-माँ ने कहा .

बस इसी शब्द के सहारे मैं चलता चला जा रहा था , नर्मदा जी की धाराओं में जो गति धुआँधार में रहती है उससे कही ज्यादा सौम्यता बस उससे २ कि.मी. आगे इस सरस्वती घाट से लगकर बह रही उनकी धाराओं में थी. तपती दोपहरी में जो सुकून मुझे जल को बहते देखकर हो रहा था वो शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है. सबसे पहले मैंने जी भर कर नहाया ,वस्त्र बदले और आगे बढ़ता चलागया नदी के किनारे किनारे ही. अचानक किसी ने मेरे नाम को पुकारा .... मैंने रुक कर देखा एक मध्यम कद काठी का गौर वर्णीय व्यक्ति मुझे हाथ हिलाकर आवाज़ दे रहा था. मैं उस और बढ़ गया.

जब मैं उनके नजदीक पंहुचा तो उन्होंने 'जय गुरुदेव' कहकर मेरा अभिवादन किया , मैंने भी उत्तर दिया तो उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा, बाकी सब तो ठीक था पर उनकी वेश भूषा से मुझे बड़ी कोफ़्त हो रही थी, खैर जैसे तैसे उनके घर तक पहुचे, कच्चा मकान जिसमे मात्र दो कमरे थे , एक कमरा रसोई और बैठक के काम आता था और दूसरे में बहुत सारे हस्तलिखित ग्रन्थ,खरल,मृग चर्म आसन,बाजोट,बाजोट पर करीने से रखे विविध यंत्र तथा पूर्ण तेजस्वी तथा भव्य सदगुरुदेव का चित्र उस कमरे को भव्य ही बना रहा था.

चाहे बाहर से कितना ही छोटा दिख रहा था वो मकान पर भीतर से अजीब सा सुख लग रहा था उस घर में, उस तपते दिन में भी अजीब सी शीतलता थी वहाँ पर.

शाम हो गयी थी,पारितोष भाई अपनी मध्यान्ह साधना में व्यस्त थे और अब शाम घिर आई थी.वे साधना कक्ष से बाहर निकले और मेरे पास बैठ गए, मैं भी भोजन और नींद लेकर स्फूर्ति से भर गया था.वे मुझे लेकर नदी के तट पर चले गए जहा हम पानी में पैर लटका कर बैठ गए और बहुत देर तक चुप रहने के बाद मैंने उनसे उनके बारे में पूछा तो, उन्होंने कहा-" सन १९८२ में मेरी सदगुरुदेव से

मुलाकात हुयी थी तब मैं अपने ननिहाल मिदनापुर (बंगाल) गया हुआ था, नाना जी कि तंत्र में बहुत रूचि थी और उन्होंने सदगुरुदेव से दीक्षा लेकर विविध साधनाएं भी संपन्न कि थी. बंगाली होने के नाते स्वभावगत हम सभी माँ आदि शक्ति कि पूजा करते थे, मेरा रुझान माँ काली कि साधनाओं में कही ज्यादा था , मैं घंटो नाना जी के पास बैठ कर उनकी साधनाओं के अनुभव को सुना करता था.वे भी अपने अनुभव बताते और कई चमत्कार भी दिखलाते. क्या मैं भी ऐसा कर पाउँगा-मैंने नाना जी से पूछा. बिलकुल कर पाओगे, पर तंत्र का रास्ता इतना सहज नहीं है, तलवार कि धार पर चलने से भी ज्यादा खतरनाक है पर,ये बहुत आसान हो जाता है यदि कोई समर्थ गुरु आपको अपना ले तो. तब मेरी जिज्ञासा और रुझान को देखकर उन्होंने मुझे सदगुरुदेव से मिलवाया और उनसे दीक्षा देने कि प्रार्थना की.सदगुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी और फिर मैं उनके निर्देशानुसार साधनाएं करने लगा, समय के साथ साथ साधनाओं को गति भी मिलने लगी. सफलता असफलता दोनों को पूरे मन से स्वीकार करता था मैं . ये देखकर एक बार सदगुरुदेव जब जबलपुर आये तब,उन्होंने मुझे अपने हाथ से लिखी हुयी एक तीन मोटी मोटी डायरी दी. जिसमे उन्होंने विविध प्रकार के तांत्रिक प्रयोग लिखे थे, बस उन्ही डायरी के आधार पर मैं साधनाएं संपन्न करने लगा और विविध प्रकार की सफलता भी मैंने पाई."

रात होते होते ही हम वापिस लौट आये. रास्ते में उन्होंने बताया की वे जीवन यापन के लिए बैंक में जॉब करते हैं. और उनका स्थायी निवास गोरखपुर(जबलपुर) में है , पर वो अपनी साधनाओं की वजह से विगत कई वर्षों से यहाँ पर रह रहे हैं. और मैं हमेशा ऐसा नहीं रहता हूँ- उन्होंने अपने स्वरुप की तरफ इंगित करते हुए कहा और हँसने लगे.

मैं अभी कोई अघोर क्रम कर रहा हूँ इसलिए ऐसी वेशभूषा हो गयी है, इसके लिए मैंने ३ महीने की बैंक से छुट्टी भी ली हुयी है.

रात में उन्होंने अपनी प्रेत शक्तियों की मदद से मेरा मनपसंद भोजन बुलवाया.

क्या आपको भय नहीं लगता?

किससे-उन्होंने पूछा .

इन भूत प्रेतों से ...
क्यूँ लगेगा भला, ये तो अत्यधिक निरापद होते हैं.और सदगुरुदेव ने इनको सिद्ध करने की इतनी सहज विधियाँ बताई हुयी है की सामान्य व्यक्ति भी भली भांति अपना जीवन यापन करते हुए इनको सिद्ध कर सकता है. रात को उन्होंने कालिका चेटक का प्रयोग कर स्वर्ण का निर्माण कर के दिखाया , पारद विज्ञानं के माध्यम से रत्नों का निर्माण कैसे होता है ये समझाया. उच्छिष्ट गणपति प्रयोग के द्वारा वशीकरण की अत्यधिक सरल क्रिया बताई. रोगमुक्ति, बगलामुखी साधना द्वारा शत्रु स्तम्भन का सरल मगर तीव्र प्रभावकारी प्रयोग,शमशान चैतान्यीकरण प्रयोग , दीप स्तम्भन का विधान समझाया, किन मन्त्रों से तंत्र प्रयोग दूर किया जाता है उसकी मूलभूत क्रिया समझाई. पूर्वजन्म दर्शन की गोपनीय क्रिया बताई. व्यापार वृद्धि के एक से बढ़कर एक प्रयोग प्रायोगिक रूप से करके दिखाया और इन सभी साधनाओं का आधार उन डायरियों को मुझे देखने और नोट करने के लिए दिया, वे डायरियां १९६३,६५,६८ और ७३ की थी मैंने लगभग ४६८ प्रयोगों को उनमे से २२ दिनों में लिखा. बाद में भी कई बार मैं उनके पास गया और उन्होंने उदारतापूर्वक उन क्रियाओं और साधनाओं को मुझे समझाया भी और लिखने भी दिया

एक से बढ़कर एक प्रयोग थे वे सभी,बाद में मैंने उनमे से बहुत से प्रयोग और साधनाएं संपन्न की तथा पूरी तरह सफलता भी पाई. जब इस अंक का विचार आया था तो हम सभी अपनी साधनाओं के लिए ६४ योगनी मंदिर में मिले थे तब मैंने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने मुझे कहा की अब वो प्रयोग तुम्हारे अपने हैं तुम उन्हें निश्चित ही अन्य गुरुभाइयों और बहनों के साधनात्मक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए देने के लिए स्वतंत्र हो

हाजरात प्रत्यक्षीकरण प्रयोग

शुक्रवार को चाँद निकलने के बाद जौ के सवा किलो आटे से एक पुतला बनाओं जिसे की हाजरात कहा जाता है, ये क्रिया शहर या गाँव के बाहर किसी मजार पर जाकर संपन्न की जा सकती है. टोंटीदार लोटे में पानी अपने साथ लेजाकर अपने हाथ पाँव,मुह धो ले और लुंगी तथा जाली दर बनियान या कुरता धारण करे रहे ,

यदि हरा आसान और वस्त्र हो तो ज्यादा बेहतर रहता है .उस मजार पर हिने का इत्र और मिठाई चढ़ा दे और आसन पर वीर आसन की या नमाज पढ़ने की मुद्रा पश्चिम दिशा की और मुह करके बैठ जाये और दिशा बंधन कर अपने सामने हाजरात को स्थापित कर सबसे पहले १०१ बार दरूद शरीफ पढ़े.

अल्लाह हुम्मा सल्ले अला सैयदना मौलाना मुहदिव बारीक़ वसल्लम सलातो सलामोका या रसूलअल्लाह सल्ललाहो ताला अलैह वसल्लम.

इसके बाद निम्न मन्त्र की हकीक माला से ११ माला करे और ये क्रम एक शुक्रवार से दुसरे शुक्रवार तक करना है,पुतला वही रहेगा जिस पर आपने पहले दिन साधना की है.ऐसा करने से हाजरात प्रत्यक्ष हो जाता है तब उससे तीन बार वचन लेकर उसे जाने को कह देना और जब भी जरुरत हो उसे बुलाकर कोई भी उचित कार्य करवाया जा सकता है. कमजोर दिल वाले साधक इस साधना को ना करे और करने के पहले गुरु की आज्ञा अवश्य ले लें.

मंत्र- या यैययल अलऊ इन्नी कलकिया इलैलया किताबून करीम
ईन्न उन्नुहु मिन सुलैमाना मिन्न हु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

MAHAKAALRATRI AUR USKE GOPNIY PRAYOG

===

प्रिय भाइयों और मेरी बहनों,

जय सदगुरुदेव,

दीपावली का पर्व आने वाला है,या ये कहें की हम उसी महापर्व की संक्रांतिकाल में गतिशील हैं.और शास्त्र विदित है की संक्रांतिकाल अपने आपमें अद्विय्तीय शक्तियों का केन्द्र स्वयं में छुपाये रहता है,आवशयकता है मात्र उसका ज्ञान अस्त्र से भेदन करने का.

ये महान पर्व स्वयं में उन रहस्यों को इस बार समेटे हुए है.जो की कभी मात्र कल्पना ही हो सकती है उच्चतर साधकों के लिए भी. मुझे भली भांति इस बात का व्यक्तिगत अनुभव है की कैसे सदगुरुदेव होली और दीपावली के पर्व की तीव्र साधनाओं को शमशान में करने का हमें आदेश देते थे और कैसे हम उन रोमांचकारी अनुभवों से होकर अपने पड़ाव तक पहुंचते थे....पड़ाव हाँ मात्र पड़ाव ही तो रही हैं वे या अन्य सभी साधनाएं चाहे फिर वो महाविद्या साधना ही क्यूँ ना हो......

तब......

तब......

तब लक्ष्य क्या है ???????

लक्ष्य.....

लक्ष्य है इन पड़ावों की रहस्यमयता को स्वयं में उतारते हुए....आत्मसात करते हुए ब्रह्मांडीय चेतना से लबालब होकर उस परम तत्व को स्वयं में उतार लेना....जिसे वेद शास्त्र भी नेति नेति कहते रहें हैं.....और उसे निखिल तत्व कहा गया है....जिसका वर्णन संभव ही नहीं है,और ना ही संभव है उसकी विवेचना भी.....

किन्तु उसे पाने का रास्ता तंत्र की इन्ही क्रियाओं से होकर गुजरता है या फिर होकर गुजरता है पूर्ण समर्पण की क्रिया की दुरुहता से.....

समर्पण और दुरूह ????

ये किसने कहा की समर्पण दुरूह होता है.......

क्या नहीं होता है ???????

होता है और जो कहता है की नहीं ये दुरूह नहीं है...वो एक बार सिर्फ एक बार अपने आप से,अपने दिल से पूछे की क्या उसने श्री सदगुरुदेव के श्री चरणों में अपने आपको पूर्ण समर्पित कर दिया है.

जवाब उसे खुद मिल जाएगा...क्यूंकि पूर्ण समर्पण के बाद कुछ भी शेष नहीं रह जाता है...आकांक्षा भी नहीं....सत्य भी नहीं....आनंद भी नहीं...... तब रहता है तो मात्र पूर्ण हो जाना.

खैर साधनाओं के मार्ग का अनुसरण करते हुए भी हम क्रमशः धीरे धीरे उसी समर्पण को समझते हैं.
और उसी क्रम में दीपमालिका महाकालरात्री के तांत्रिक पर्व पर मैं अपने संकलन में से ३ साधनाओं का प्रकाशन ७ से १० नवम्बर के मध्य करूँगा...ये साधनाएं सामान्य प्राप्त नहीं हैं. और हैं एक से बढ़ कर एक....

हाँ करना है आपको त्रयोदशी से दूज तक.... और सबसे बड़ी बात आप एक समय में मात्र एक ही साधनाएं ही कर पाएंगे...(दीपावली का पूजन और दीपावली की रात्री की धन प्राप्ति की साधनाएं मात्र इसके साथ की जा सकती है)

दूसरी बात **तिब्बती लक्ष्मी वशीकरण की साधना का मुहूर्त अभी नहीं है,वो ३४ दिनों की साधना है,परन्तु उसे और किस तरीके से किया जा सकता है,उसे भी मैं आप सभी को २१ नवंबर को प्रेषित कर दूँगा,ताकि आप उस अद्विय्तीय यन्त्र का प्रयोग कर सकें.**

फिलहाल मैं जिन तीन साधनाओं की बात कर रहा हूँ...ये एक से बढ़कर एक हैं .

और आप अपनी चाहत के अनुसार इसका प्रयोग कर लें...

१. (**सर्व तीव्र शमसानिक शक्ति प्राप्ति) महाकाल भैरव युक्त भगवती धूम्रवर्णा साधना** – भगवती धूमावती की साधना का ये सोपान साधक को शमसान साधना और इतर योनी शक्तियों पर अधिपत्य प्रदान कर देता है.साथ ही रोमांच का,शक्ति प्राप्ति का वो रहस्य जो षट्कर्म साधनाओं की कुंजी साधक को प्रदान कर देता है.फिर भला कैसे साधक सामान्य रह सकता है.

२. **भगवती महाकाली प्राणबल सिद्धि युक्त मुंड चैतन्य साधना** – क्या आपने सोचा है की कैसे आप अज्ञात के भय से कांपते कांपते जीवन गुजारते हो...तिल तिल मर कर...कैसे अपमान,दुर्भाग्य...का दंश आपको दंशित करता रहता है...कैसे कोई भी तंत्र प्रयोग या इतर शक्तियां आपको या आपके परिवार को चुंगल में ले लेती हैं...कैसे कोई भी टुच्चा व्यक्ति आपको वश में कर लेता है,जीवन को बर्बाद कर देता है...कैसे असफलता का भाव हमेशा आपको भयभीत करता है,फिर वो चाहे कार्य का क्षेत्र हो,साधना का क्षेत्र हो या फिर जीवन का महासमर...ये प्रयोग महाकाली की मुंड शक्ति से प्राणों में अग्नि भर कर अविजित कर देता है साधक को.

३. **काम्यसिद्धि ऐश्वर्य प्राप्ति नखानिया पूर्ण सिद्धि विधान** – अद्भुत है नखानिया तंत्र और गुप्त भी,एक से बढ़कर एक प्रयोगों को समेटे हुए नखानिया तंत्र के अंतर्गत आने वाली कई साधनाओं में से वो अद्भुत विधान जो साधक के इच्छित कार्यों में तो साधक को सफलता देती ही है...ऐश्वर्य और लक्ष्मी आबद्ध का गोपनीय रहस्य भी साधक को प्राप्त हो जाता है.

चयन आप करेंगे...कई महीनों की प्रार्थना के बाद मुझे इन्हें अपने आत्मीयों को देने की अनुमति प्राप्त हुयी है उन सिद्धों या साधकों से जिन्हें गुरुकृपा से इनमे पूर्ण सफलता मिली और उन्होंने अनुग्रह करते हुए मुझे मेरी प्रार्थना पर दिया ..अब मात्र आप अपने अपने कामना अनुसार इन्हें गति दे सकते हैं और समर्पण की क्रिया का एक और कदम पूरा कर सकते हैं.

TANTRA SIDDHI AUR PHYSICAL BODY-तंत्र सिद्धि और भौतिक देह

साधना जगत में बड़ी-बड़ी उपलब्धियों को आत्मसात करने के लिए एक गुरु, पूर्ण विधान, उचित स्थान, अनुकूल सामग्री और पूर्ण निष्ठा की बात हमारे वेदों और उपनिषदों में कही गयी है....किन्तु एक अति आवश्यक शक्ति जिस पर बहुत गहन अध्ययन तो नहीं किया गया पर अपने आप में वो शक्ति इतनी अधिक महत्वपूर्ण है की यदि आपने उसका वरन नहीं किया तो सारी की सारी शक्तियाँ, सिद्धियाँ धरी की धरी रह जाती है और वो अमूल्य शक्ति है..... हमारी खुद की देह या शरीर जो भी आप कहना चाहो!!!!!! भारतीय तंत्र शास्त्रों में दो प्रकार से मानव

देह की श्रेष्ठता का वर्णन मिलता है- एक तो समस्त ब्रह्मांड की नियंत्रणकारिणी शक्ति हमारे मास्तिष्क के रूप में, जिसे ब्रह्मा और शिव का स्थान प्राप्त है क्योंकि इसमें सृष्टि के निर्माण और संहार की क्षमता है और दूसरा महाशक्ति महामाया के रूप में जिसे तंत्र में पराशक्ति कहते है और जो इस पूरे ब्रह्माण्ड के कण कण में व्याप्त है किन्तु मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो ना केवल इसे जाग्रत कर सकता है बल्कि इसे चैतन्य कर क्षमता अनुससार इसका उपयोग करने में भी सक्षम है.

साधना जगत में आत्मा और परमात्मा के बाद यदि कोई तथ्य या वस्तु बहुमूल्य है तो वो है – मानव शरीर.....क्योंकि जिस प्रकार परमात्मा का सूक्ष्म रूप या अंश हमारी आत्मा को कहा गया है ठीक वैसे ही हमारा शरीर इस पूरे ब्रह्मांड का लघु संस्करण है क्योंकि पृथवी, आकाश, अग्नि, जल, और वायु इन पंच महाभूतों के एकीकरण से पहले इस समस्त बह्मांड की रचना हुई और फिर उन्हीं पंच तत्वों से हमारे इस पंच-भूतक शरीर को भी निर्मित किया गया जिसे तंत्र में पंचाग्नि कहते हैं......और इसी के तहत पृथ्वी तत्व से हमारे शरीर में चरम और नाड़ीयों का संग्रह बना, जल तत्व से रक्त, मूत्र और वीर्य न निर्माण हुआ, अग्नि ने हममें क्षुधा, तृष्णा, मोह और मैथुन उत्पन्न दिया, वायु प्राणवायु के रूप में हमारी देह में विधमान है और आकाश तत्व ने हममें काम, लोभ और भय जैसी भावनाओं को जन्म दिया.

हमारे इष्ट देव का पता लगाने के लिए भी उस दिन से गणना की जाती है जिस दिन हमारी आत्मा ने एक भौतिक देह को धारण करके इस लोक में जन्म लिया था क्योंकि यह एक निर्धारित तथ्य है की हमारे शरीर में जिस भी तत्व की प्रधानता होगी हमारा मन स्वत: ही उससे संबंधित देवी, देवता की और आकर्षित होता है जैसे आकाश तत्व के साथ भगवान विष्णु, अग्नि देव के साथ जगतजननी माँ आदिशक्ति, वायु तत्व के साथ भगवान भास्कर, पृथ्वी तत्व के साथ भगवान भोलेनाथ, और जल तत्व के साथ विघ्नहर्ता भगवान गणपति की तरफ आकर्षित होना स्वाभाविक है और इसका एक फायदा यह है की हमें पता चल जाता है की हमारा इष्ट देव कौन है.

योग शास्त्र में मनुष्य के शरीर को पिंड मानकर इस पूरे ब्रह्मांड की व्याख्या की गयी है की मानव देह के किस अंग में कौन सी दैवी शक्ति विराजमान है और इस देह की महत्ता को दर्शाने के लिए हमारे मनीषियों ने तो यहाँ तक बताया है की मनुष्य की वाणी, उसका मन, प्राण और बिंदु सब अपार दैवी शक्तियों के आश्रय स्रोत हैं इसीलिए ईश्वर की पराशक्ति इच्छा, ज्ञान और क्रिया के रूप में सबसे अधिक मानव शरीर में ही जाग्रत है. हमारी देह में इन तीनों पराशक्तियों

के केन्द्र क्रमशः हृदय, मास्तिष्क और नाभि हैं और इस बात का महत्व इस तथ्य से शायद आप ज्यादा अच्छे से समझ सकें की यह ईश्वरीय पराशक्ति देवताओं में भी जागृत नहीं होती क्योंकि वो भोग योनी में है जबकि हम कर्म योनी में और हमारे शरीर में यह शक्ति कुंडलिनी के रूप में आश्रित है जिसे जाग्रत किये बिना आगे का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता.

तंत्र शास्त्र में ही स्त्री को माँ आदिशक्ति के रूप में देखा जाता है और उसकी देह पूजा माँ कामाख्या के रूप में की जाती है क्योंकि यदि स्त्री को केवल भोग की वस्तु ना समझा जाए तो उसी को भैरवी के रूप में साध के आप माँ आदिशक्ति के आशीर्वाद के पात्र बन सकते हो क्योंकि ब्रह्मी, वैष्णवी और रौद्री यह तीनो शक्तियाँ एक त्रिकोण के रूप में हर स्त्री के शरीर में स्थापित है इसीलिए इस त्रिकोण को योनिरुपा कहा जाता है और इन शक्तियों की पूजा योनी पीठ के रूप में की जाती है और वास्तव में देखा जाए तो हर स्त्री का शरीर अपने आप में एक योनी पीठ है जिसके बाएं कोण में ज्ञान शक्ति, दायें कोण में इच्छा शक्ति और सब से नीचे वाले कोण में क्रिया शक्ति स्थापित है और योग में इसे कुंडलिनी शक्ति का केंदर माना गया है.

और इसी कुंडलिनी को जाग्रत कर हम घंटों, महीनों या सालों समाधि की अवस्था में रह सकते है और इसका एक जीवंत उदाहरण मेरे मास्टर है जिन्होंने मुझे शरीर को साधना हेतु योग्य बनाने के लिए आसन सिद्धि की साधना करवाई थी क्योंकि मैंने मेरी आँखों से साधना के समय उनका आसन भूमि से उपर उठा देखा था और वो उस पर साधना रत थे, पहली बार आसन सिद्धि का चमत्कार देखा था,तो अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था की जो देखा है वो सच है या मेरी आँखों का भ्रम पर बाद में उन्होंने समझाया की यदि तुम्हारा शरीर तुम्हारे नियंत्रण में है और तुम उसे एक दैवी शक्ति के रूप में प्यार और स्नेह करते हो, तो यह सब तुम भी कर सकती हो क्योंकि यदि शरीर कमजोर और ऊर्जा रहित है तो आत्म चिंतन सम्भव नहीं, इसका अपना एक मूल्य है. यह केवल हड्डियों और मांस से बना एक पुतला नहीं बल्कि इन्द्रियों की ऊर्जा से निर्मित एक शक्ति है और शक्ति के साथ आप संघर्ष नहीं कर सकते उसे केवल साध सकते हो.....और यही सर्वोच्च साधना है.

तंत्र और प्रेत सिद्धि (TANTRA AUR PRET SIDDHI)

तंत्र का क्षेत्र असीम सम्भावनाओं से भरा पड़ा है....इसमें ऐसा कुछ नहीं है जिसे असंभव कह कर नजरअंदाज किया जा सके. एक से बढकर एक विधान, अचूक प्रयोग और अविश्वसनीय रहस्य!!!!! ऐसे ही रहस्यों की श्रंखला में एक नाम आता है प्रेत सिद्धि का.....

सबसे पहले हमें यह समझना होगा की यह प्रेत होते क्या है....स्थूल शरीर आत्मा का सबसे प्रिय और महत्वपूर्ण वाहक है इसीलिए आत्मा अधिक से अधिक अवधि के लिए इसी शरीर में रहना पसंद करती है और इसीलिए योगियों ने भी साधना के लिए स्थूल शरीर को ही महत्व दिया पर इस देह की अपनी एक सीमा और मर्यादा है और इसी मर्यादा का पालन करते हुए भौतिक देह जब अपनी अंतिम सीमा तक पहुंच जाती है तो आत्मा को विवश होकर इसका परित्याग करना पड़ता है जिसे हम मृत्यु कहते है. स्थूल देह को त्यागने के पश्चात अपनी अतृप्त वासनाओं को पूरा करने के लिए आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण करने से पहले एक ऐसे शरीर का निर्माण करती है जिसे हम वासना शरीर या प्रेत शरीर कहते है. वास्तिवकता तो यह है की यह एक ऐसा शरीर है जिसका निर्माण स्वतंत्र रूप से पूर्णतः जीवात्मा ही करती है इसिलए इसकी सिद्धि कष्टदायक ना होकर इसको सिद्ध करने वाले साधक के अनुकूल होती है क्योंकि ऐसे प्रेत यदि आपके वश में आ जाये तो यह आपका हर काम क्षण भर में कर देते हैं.

खैर यह एक दूसरा विषय है!!!!! विषय पर पुनः ध्यान केंद्रित करते हुए......मुद्राओं के विषय में समझाते हुए मास्टर ने एक बार बताया था की जन्म मरण से मुक्त होने के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने ८४ योगासन और ८४ ही मुद्राओं का अलग-अलग ग्रंथों में विवरण दिया है. हर आसन और उससे सम्बंधित मुद्रा का अपना एक विशेष महत्व है क्योंकि इनके संयोजन से एक विशेष उर्जा का जन्म होता है जिससे ईथर में उपस्थित यह प्रेत आपके कार्यों को पूरा करने के लिए शक्ति ग्रहण करते हैं.

तांत्रिक द्रष्टि से देखा जाए तो सत्व, रज, तम इन तीन गुणों का मिश्रित रूप ही प्रकृति है पर यह तीनों गुण इस प्रकृति में जहाँ मिश्रित रूप से व्याप्त हैं वहां इसी ब्रह्मांड में इनकी अपनी अपनी स्वतंत्र सत्ता भी है. सम्पूर्ण जीवित जगत भूमंडल, चन्द्रमण्डल और सूर्यमंडल इन तीनों मंडलों में बंटा हुआ है और यह तीनों मंडल क्रम अनुसार तामसिक, सात्विक और राजसिक गुणों के अधिष्ठाता है.

भूमंडल से चन्द्रमंडल के बायीं ओर तमोगुण तथा दायीं ओर रजोगुण की प्रधानता है. मध्य में जहाँ इन दोनों की सीमाएं मिलती है उसे हम शुन्य मार्ग के नाम से जानते हैं जिसका उपयोग

महासिद्ध योगी सन्यासी एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने के लिए करते हैं. चंद्रमंडल के बायीं ओर स्थित तमोगुण में तामसिक आत्माएं निवास करती हैं जिन्हें भौतिक जगत में हम प्रेत, बेताल, पिशाच इत्यादि नामों से जानते हैं.

इसी शून्य मार्ग के समांतर एक ओर पथ है जिसे डामरोत्तम महा पथ कहते है ओर इसी पथ का उपयोग यह प्रेत योनियां भूलोक पर आने के लिए करती है ओर इन दोनों पथों के इतने पास होने की वजह से ही हमेशा समझाया जाता है की जब भी अपने सूक्ष्म शरीर से कहीं जाना हो तो ऐसी व्यवस्था करके जाओ की कोई आपको उस अवधि में उठाये नहीं क्योकिं एक बार पथ भटक गए तो वापसी संभव नहीं होती. प्रेतों के तमोगुण मार्ग से एक ओर मार्ग निकलता है जिसे महादिव्यौध मार्ग कहते हैं क्योंकि इसी मार्ग के रास्ते राजसी गुण सम्पन्न यक्ष-यक्षिणी, गन्धर्व पृथ्वी लोक पर आते है....इस महाडामरी पथ और महादिव्यौध पथ का संगम भूमंडल के केन्द्र में होता है इसीलिए कभी कभी ऐसा होता है की जिस आत्मा का आवाहन किया जाए उसकी जगह कोई और आत्मा आ जाती है क्योंकि डामरी पथ इन आत्माओं के आवागमन से भरा रहता है.

प्रेत सिद्धि से सम्बंधित यह कुछ मूल तथ्य हैं जिनका ज्ञान हर उस साधक को होना चाहिए जो प्रेत को सिद्ध करना चाहता है क्योंकि यह एक ऐसी योनी हैं जिससे संबंधित अज्ञान उसको आपका नहीं अपितु आपको उसका दास बना सकती है पर यदि एक बार सफलतापूर्वक इसे साध लिया तो यह अप्रत्क्ष रूप से सदा आपके साथ रहते है और ना सिर्फ आपके मनोवांछित काम करते है बल्कि अदृष रूप से हमेशा आपकी रक्षा भी करते हैं और तब तक सामने नहीं आते जब तक इनके स्वामी द्वारा इनका आवाहन ना किया जाये. अनुमति मिलने पर इससे सम्बंधित प्रयोग और साधना भी दूंगी जिससे प्रेत सिद्ध होता ही है.

ज्योतिष तंत्र रहस्यम – स्वप्नसिद्धि मयंक साधना

सर्व प्रोक्तः सर्व ज्ञानः सर्व काले सर्वात्मने,
सर्व ज्ञान प्रदात्री श्री देवी मयंक युक्तं तवं चरणारविन्दे ||

श्रीसूक्त को लोग मात्र ऐश्वर्य प्राप्ति का ही स्तोत्र मानते रहे हैं,और ऐसा मानना उचित भी था. क्यूंकि समय और पात्र को देखते हुए मन्त्र मनीषियों ने अथवा मन्त्र मर्मज्ञों ने इसके भीतर के

रहस्यों को गुप्त ही रहने दिया. इसका बाह्य पक्ष ही प्रकाश में आ पाया. और समय के साथ साथ हम यही मान बैठे की श्रीसूक्त मात्र धन प्राप्ति हेतु भगवती महालक्ष्मी से की जाने वाली एक स्तुति है,और दीपावली पर इसका पाठ करने से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है. जबकि सत्य इससे बिलकुल उलट है,इसकी प्रथक प्रथक ऋचाएँ साधक को ना सिर्फ उसका अभीष्ट प्रदान करती हैं,अपितु ग्रह,काल,वस्त्र,दिशाओं का उचित संयोग साधक को प्रथक प्रथक परिणाम देता है.

तंत्र की गुह्यता को समझ पाना तभी संभव हो पाता है,जब उसी राह का कोई पथिक जिसने पहले उस सफर को तय किया हो,आप को उस राह की दुरुहता और दुर्गमता से परिचित करवा दे.मेरी उत्कंठा **सहस्त्राक्षरी चंडी** की साधना और उससे जुड़े रहस्य को समझने की थी,और मैंने पत्रिका के पुराने अंकों में इसके बारे में पढ़ा भी था और जब मैंने इस बारे में मास्टर से पूछा तो उन्होंने बताया की "हमारे कई गुरु भाई बहनों ने इसकी गोपनीय कुंजियाँ सदगुरुदेव से प्राप्त करी हैं और उनके माध्यम से अपने जीवन के मनोरथ तो पूर्ण करे ही हैं साथ ही साथ उन रहस्यों को भी समझा है,जिसे शास्त्र अभी तक गुप्त रखते आयें हैं और इसकी कई प्रक्रियाओं को मैंने रजनी निखिल जी को संपन्न भी करते देखा है.और सदगुरुदेव ने कभी भी कोई ज्ञान लुप्त नहीं रखा है,बहुतेरे साधक हैं जिन्हें साधना की कुंजियाँ मिली,पर वो अब किसी के सामने नहीं रखना चाहते हैं".

साधना एक ही हो सकती है,मंत्र एक ही हो सकता है किन्तु उसके प्रयोग करने की पद्धति ही उसके द्वारा प्राप्त परिणाम को स्पष्ट करती है. जैसे हम स्वर विज्ञान की साधना तो करते हैं,परन्तु हम उसके इस रहस्य से अनभिज्ञ ही रहते हैं की स्वरोदय विज्ञान या स्वरोदय तंत्र की पूर्ण सिद्धि पञ्च तत्व की सिद्धि के पश्चात ही प्राप्त होती है और पञ्च तत्वों की सिद्धि के द्वारा भौतिक सफलता तो प्राप्त होती ही है साथ ही व्यक्ति जीवन के आध्यात्मिक लक्ष्यों को भी सहजता से प्राप्त कर लेता है.और ये मात्र सांकेतिक नहीं होता है,अपितु तत्व सिद्धि का अभ्यास करने वाला साधक जैसे ही उस तत्व का ध्यान उचित मार्गदर्शन में करता है उसकी नासिका उस तत्व विशेष की सुगंध से सुवासित हो जाती है.

जैसे नवार्ण मंत्र से अभिमंत्रित विभिन्न सामग्री साधक के अलग अलग उद्देश्यों की पूर्ती करती हैं.श्रीसूक्त के गूढार्थ की यदि बात की जाए तो इसकी प्रत्येक ऋचा के सैकडो अर्थ निकलते

हैं,क्यूंकि इनका संयुग्मन विभिन्न अर्थों को दर्शाता है,विभिन्न विज्ञानों और विभिन्न तंत्रों के अज्ञान को इन ऋचाओं के द्वारा समझा जा सकता है. स्वर्ण निर्माण की पद्धतियाँ,सूर्य विज्ञान के गोपनीय सिद्धांत,विभिन्न सिद्धियों की प्राप्ति, अमृतत्व का संचार आदि इस सूक्त के ज्ञान द्वारा संभव हो जाता है.

जब हम साधना करने के लिए तत्पर होते हैं तो सफलता प्राप्ति के या सिद्धि प्राप्ति के चिन्हों या संकेतों को हम समझना चाहते हैं,जिससे हम उस मार्ग में आ रही बाधाओं को पूर्णतयः पार कर सकें.वैसे तो बहुत से ऐसे संकेत होते हैं जिनके द्वारा सिद्धि असिद्धि को समझा जा सकता है,किन्तु स्वप्न के द्वारा हमें अचूक ज्ञान की प्राप्ति होती है,और यदि निम्न क्रिया का प्रयोग साधक अपने जीवन में कर ले तो वो ना सिर्फ भविष्य सूचक स्वप्न संकेतों को समझने लगता है अपितु वो व्यक्ति विशेष से भी सम्पर्कित हो सकता है,मतलब जिस व्यक्ति के,व्यवहार,चरित्र,हाल चाल को उसे जानना है,उस व्यक्ति की ये सब जानकारियाँ भी उसे स्वयं के स्वप्न के माध्यम से पाता चल जाती हैं.
किसी भी सोमवार की रात्रि को ९ बजे के बाद पूर्णतया शुद्धावस्था में श्वेत वस्त्र धारण कर सफ़ेद आसन पर बैठ जाएँ,और सामने भूमि पर सफ़ेद कपडा बिछाकर,उस पर केसर मिश्रित सफ़ेद चन्दन के द्वारा एक गोला बना लें,गुरु पूजन और गणपति पूजन के बाद घी का दीपक जला कर,उस गोले में अनामिका ऊँगली से "सों सोमाय नमः" लिख दें और फिर उस गोले को सफ़ेद अक्षत से भर दें,इसके बाद सामने एक चांदी के अथवा ताम्बे के पात्र में जल भर कर उन अक्षतों के ऊपर स्थापित कर दें.फिर स्थिर चित्त होकर स्फटिक या सफ़ेद हकीक माला से १ माला "ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रायै नमः" मंत्र की करें और इसके बाद निम्न ऋचा का ३ माला जप करें और जप के बाद उस पात्र पर फूँक दें अर्थात १ माला जप के बाद एक फूँक मारना है.

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् |
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ||

जप के बाद पुनः पहले वाले मंत्र की १ माला करना है,और जप के पश्चात उस जल का पान कर लेना है,जल का पान किसी और पात्र में लेकर करना है,ये क्रम ५ दिनों तक करना है और उसके बाद आगे के दिनों में सोने के पहले २१ बार उपरोक्त ऋचा का जप करके जल पी लें. और सो जाए.साधना कार्य कर रही इसका पता आपको ऐसे लगेगा की अब आप स्वप्न भूलेंगे

नहीं,आगे समय के साथ आप उसके गूढार्थ को भी समझने लगेंगे और वो आपको स्मरण भी रहेगा,तथा अब आपको जिसके बारे में जो जानना है आप उसे एक सफ़ेद कागज पर हल्दी से लिख कर अपने तकिये के नीचे रख कर सो जाएँ,आपको स्वप्न में उसकी अवश्य जानकारी प्राप्त हो जायेगी, ये साधना आपको भविष्य संकेतों की सूचना देती है जो की स्वप्नेश्वरी साधना से प्रथक विधान है,साथ ही इस प्रयोग को संपन्न करने वाला व्यक्ति दु:स्वप्नों और स्वप्नदोष जैसे विषाक्त प्रभावों से भी मुक्त हो जाता है,तथा वो यदि किसी और व्यक्ति को इस साधना का ५ दिन का क्रम पूरा करने के बाद अभिमंत्रित जल दे दे तो उसके सेवन से वो व्यक्ति भी इन बाधाओं से मुक्त हो जाता है,तथा साधक अपनी साधना में अपनी गति को तो इस साधना के द्वारा समझ ही लेता है.वास्तव में ये चंद्र नाड़ी को जाग्रत करने का सरल विधान है जिसे हमें करना ही चाहिए,साथ ही यदि व्यक्ति रजनी निखिल दीदी द्वारा लिखित **BHAGWATI BAGLAMUKHI TANTRAM - MAYA KAAL DRISHYAANVITA PARASHAKTI PRAYOG** कर लेता है तो वो इड़ा और पिंगला नाड़ियों की शक्ति को भी प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो जाता है,जिससे पराविज्ञान का मार्ग उसके लिए प्रशस्त हो ही जाता है.साधनाएं मात्र पढ़ने के लिए नहीं है,अपितु इन सरल विधानों को भी हम ना कर पाए तो अब दोष किसका है.

LAAKINI SADHNA

मनुष्य जीवन में ज्ञान का बोध निश्चित रूप से एक ऐसा तथ्य है जिसे किसी भी रूप से नाकारा नहीं जा सकता. जन्म से ले कर मृत्यु तक व्यक्ति अपने नित्य क्रिया कलापों के माध्यम से कार्यों के माध्यम से या विचारों के माध्यम से अपनी आतंरिक तथा बाध्य गतिशीलता के माध्यम से अपनी चेतना का विकास करता है, अपने अस्तित्व को ज्यादा से ज्यादा निखारने की ओर हमेशा प्रयत्नशील रहता है. लेकिन इन सब के मूल में जो तथ्य सारी क्रियाओं का आधार बन कर चेतना को और विकसित करने की प्रेरणा प्रदान करता है वह है ज्ञान का बोध. मनुष्य को जितना भी ज्ञान का बोध होता है और जिस प्रकार के ज्ञान का बोध होता है उसकी कार्यों की गतिशीलता भी उसके अनुरूप ही चलती है. और यह यात्रा स्व भवति से ले कर अहं ब्रम्हास्मि तक चलती है. क्यों की पूर्ण ज्ञान पूर्ण सत्ता का ज्ञान प्राप्त होने पर व्यक्ति की चेतना भी उसी तरफ गतिशील होने लगेगी. कार्यों तथा गतिशीलता का आधार वही बनेगा. ब्रम्हांड की संरचना की मुख्य सत्ता ब्रम्ह है. और उसी का ज्ञान ब्रम्हज्ञान है. और इसी ब्रम्ह का पूर्ण अंश ब्रम्हांड के सभी सूक्ष्म से सूक्ष्म में भी प्रस्थापित है. उसी पूर्ण सत्ता के विखंडन से ही तो पूर्ण

ब्रह्माण्ड का सर्जन हुवा है. और उसका मुख्य विखंडन दो भाग में हुवा. सदाशिव तथा शक्ति. आगे उनके ही विभिन्न अंश विखंडित अवस्था में सभी जड़ तथा चेतन बने.
शक्ति स्त्री तत्व का प्रतिनिधित्व करती है. तथा उन्ही के अगणित स्वरुप हम सब के मध्य विद्यमान है. किसी भी ठोस में तब तक चेतना नहीं होती जब तक वह शक्ति संयुक्त नहीं हो जाता. हमारे आतंरिक तथा बाह्य ब्रम्हांड में जो भी चेतना का आधार है वही शक्ति है. तथा जहाँ पर भी इसकी सत्ता है वहाँ पर उसका एक नूतन ही स्वरुप है.
मनुष्य तथा बाकी जिव में एक मुख्य अंतर यह है की मनुष्य अपनी चेतना का विकास अनंत रूप से कर सकता है. क्यों की मनुष्य में मुख्य शक्ति का स्वरुप कुण्डलिनी के रूप में शरीर में ही विद्यमान होता है. इस लिए मनुष्य को बाह्यगत चेतना की खोज तथा प्राप्ति नहीं करने के लिए किसी नूतन तथ्य की आवश्यकता नहीं है, या फिर बाह्य रूप से उसके लिए वैचारिक भावभूमि की आवश्यकता नहीं है. वह खुद अपने अंदर की सुप्त शक्तियो के जागरण मात्र से पूर्ण ब्रम्हज्ञान की प्राप्ति कर सकता है. क्यों की जो भी बाह्य है वह आतंरिक भी है. इस लिए जिस प्रकार से ब्रम्ह तथा ब्रम्हांड बाह्य रूप में विद्यमान है उसी प्रकार वह आतंरिक रूप में भी वही विद्यमान है.
और मनुष्य अपने अंदर एक पूर्ण ब्रम्हांड को समाहित किये हुवे है तो वह कुण्डलिनी के स्वरुप में ही है. कुण्डलिनी के मुख्य सात चक्रों में मूलाधार से ले कर सहस्त्रार तक सप्त चक्रों में पूर्ण वर्ण तथा मातृका शक्तियां निहित है, जो की सभी देवी तथा देवता के बीज है. मंत्रो का आधार है. इस लिए अगर इनको चेतन कर लिया जाए तो निश्चित रूप से सभी देवी तथा देवता को साध लिया जा सकता है और इन सब विखंडित स्वरुप का मूल ब्रम्ह ही तो है. इसी लिए यह अपने मूल तत्व तक पहोचने से सबंधित प्रक्रिया है. इस प्रकार व्यक्ति क्रमशः एक एक चक्रों से सबंधित देवी या देवता की साधना को पूर्ण कर लेता है. वास्तव में यह एक कठिन और धैर्यपूर्ण सफर है.
जेसे की स्पष्ट है, शक्ति के विभिन्न स्वरुप ही आधार बनते है किसी ठोस, शव, पुरुषतत्व या घनात्मक की चेतना प्रक्रिया से. इसी आधार पर सभी चक्रों के नियंत्रण तथा संचार से सबंधित हर एक चक्र की अपनी एक अधिष्ठात्री शक्ति है. अधिष्ठात्री के भी कई अलग अलग स्वरुप चक्रों के मध्य विद्यमान रहते है. स्वाभाविक है की यह देवी स्वरुप जो की चक्रों से सबंधित है वह अत्यधिक शक्तिसम्प्पन होती है तथा अपने साधको के कल्याण करने के लिए हमेशा तत्पर

रहती है. साधक कल्पना कर सकता है की जो कुण्डलिनी में पूरा ब्रम्हांड समाहित है उनके मुख्य चक्र की अधिष्ठात्री साधक को क्या कुछ प्रदान नहीं कर सकती.

वास्तव में इन शक्तियोंकी साधना तथा साधना पद्धतियाँ गुप्त और गुढ़ रही है. क्यों की साधक निश्चित रूप से अत्यधिक शक्ति सम्प्पन इन साधनाओ के माध्यम से हो सकता है.

मणिपुर चक्र अपने आप में एक अत्यधिक गुढ़ तथा रहस्यमय चक्र रहा है. इस चक्र प्राण का केन्द्र है. सर्जन क्षमता से संयुक्त है. क्यों की व्यक्ति जब गर्भ में होता है तो उसकी चेतना नाभि के माध्यम से ही बनी रहती है. इसके अलावा सर्जन या संरचना करने की क्षमता इस चक्र में है इसके पौराणिक कई उदहारण मिलते है. प्राणों के विखंडन तथा सूर्य और अग्नि रूप यह चक्र मनुष्य शरीर का केन्द्र रहा है. मनुष्य के आतंरिक शरीर भी इसी जगह से जुड़े हुवे होते है. वस्तुतः जब मनुष्य के स्थूल शरीर से वासना, सूक्ष्म इत्यादि कोई भी शरीर अलग होता है तो भी वह नाभि से रजतरज्जू के माध्यम से जुड़ा हुवा रहता है.

इस चक्र की मुख्य शक्ति देवी लाकिनी है. देवी के कई स्वरुप इस चक्र में विद्यमान है. तथा इनकी साधना पद्धति अपने आप में अत्यधिक कठिन उग्र और गुप्त कही जाती है. क्यों की साधना के बाद, साधक को कई प्रकार के लाभों की प्राप्ति होती तथा इन शक्तियों की साधना में कई बार अत्यधिक भयावह स्थिति भी बन जाती है.

लेकिन प्रस्तुत साधना देवी से सबंधित एसी साधना है जो की सौम्य है. इसमें साधक को किसी भी प्रकार की भय की स्थिति नहीं बनती है. इस साधना से साधक को कई लाभों की प्राप्ति होती ही है जेसे की रोग मुक्ति, पेट से सबंधित समस्याओ का समाधान, योगशक्ति का विकास, चेतना का विकास, मानसिक शक्तियों की प्राप्ति लेकिन इस साधना की सबसे बड़ी उपलब्धि है साधक चतुर्थ आयाम के स्थानों में विचरण करने के योग्य बन जाता है. साधक में यह क्षमता आ जाती है की वह अपने शरीर में आतंरिक शरीर को जागृत कर चतुर्थ आयाम के स्थानों में प्रवेश कर सके. इसे स्थानों को देख सके जिसको देखना सामान्य द्रष्टि से संभव नहीं हो तथा इसे सिद्ध स्थलों की यात्रा कर सके जहां पर स्थूल शरीर के माध्यम से जाना सामान्यतः संभव नहीं है. इस साधना में किसी भी प्रकार की कोई भय की स्थिति नहीं बनती है. साधक को हो सकता है साधना समय में शरीर का तापमान बढ़ता हुवा अनुभव हो लेकिन इसमें भय वाली कोई बात नहीं है साधक निश्चिंत हो कर पूरी साधना करे.

साधक यह साधना किसी भी दिन शुरू कर सकता है. यह साधना रात्रिकाल में १० बजे के बाद ही की जाए. साधक लाल वस्त्र पहेन कर लाल आसान पर बैठ कर उत्तर दिशा की तरफ मुख बैठ जाए.

साधक को अपने सामने एक तेल का दीपक लगाना चाहिए. इसके अलावा ओर किसी भी चीज़ की आवश्यकता इसमें नहीं है. इसके बाद साधक लाकिनी ध्यान का ११ बार उच्चारण करे

लाकिनी ध्यान –

नीलांदेवीं त्रिवक्तां त्रिनयनलसितां द्रंष्टिणिमुग्ररूपां
वज्रंशक्तिं दधानामभयवरकरां दक्षवामे क्रमेण
ध्यात्वा नाभिस्थ पद्मे दशदलविलसत्कर्णिके लाकिनिं तां
मांसाशीं गौररक्तासृकहृदयवतीं चिन्तयेत साधकेन्द्रः

ध्यान मंत्र के उच्चारण के बाद साधक अपनी आँखे बंद कर के निम्न मंत्र का उच्चारण करे. साधक को स्फटिक माला से ११ माला मंत्र जाप करना है. मंत्र जाप करते समय साधक का ध्यान आतंरिक रूप से नाभि पर हो.

लाकिनी मणिपुर मन्त्र - गुं रं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं रं गुं

साधक को यह क्रम ७ दिन तक करना चाहिए. ७ दिन में साधक को विविध प्रकार के अनुभव हो सकते है लेकिन ७ दिन बाद साधक को निश्चित रूप से यह क्षमता प्राप्त होती है की वह अपने शरीर के आतंरिक शरीर को जागृत कर चतुर्थ आयाम के गुप्त क्षेत्रो को देख सके तथा प्रवेश कर सके. लाकिनी मंत्र टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं है, लेकिन अनुभव आया है की मणिपुर के मुख्य बीज का सम्पुट करने पर इस मंत्र की तीव्रता बढ़ जाती है, इसके अलावा कंकालमालिनी में निर्देशानुसार इस मंत्र में गुरुबीज का सम्पुट दिया जाना चाहिए जिससे सफलता सुनिश्चित हो ही जाए. इस प्रकार यह पूरा मन्त्र गुं रं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं रं गुं बनता है. जो की कई प्रकार की सिद्धि दे सकता है. माला का विसर्जन नहीं करना है. साधक इससे भविष्य में भी इस मंत्र का जाप कर सकता है.

जो व्यक्ति यह पूर्ण क्रम नहीं कर सकते वे लोग नित्य रात्रि में सोते समय आँख बंद कर के इसी मंत्र का मानसिक उच्चारण नाभि पर ध्यान केंद्रित कर करते रहे तो इससे सबंधित अनुभव होने लगते है.

YAKSHINI,APSARA SADHNA KI KUNJI - YAKSHINI APSARA SAAYUJYA SHASHTH MANDAL



Saundaryavataam saa urdhvorvataam purna tantramev sindhum |

Divyorvataam saa saahcharya praaptum ||

Yakshini apsaraavai sahchari sadaam saa |

Rudrormandal sthiraam ch bhavati vashyavaa ||

It'snext to impossible to describe the wonders of Tantra Field. Therefore by pseudolanguage of suggestive method in the composed **"Saundarya Kalpalataa Sindhum"** it has been said that in the ocean of Tantra, the saudrya and upwardrace is not easily achievable, rather for achieving one has to do churning process in oceanictantra field, which at least in today's date is not at all easy. Because, purity of character and toughpersonality are the essential key factors of measuring depth in Tantra field and a prime quality as well.And the one who has these qualities can

speedily go high and achieve the beauty of it.And a sadhakwho got control on Beauty and sharpness, can achieve divinity very easily. And for this Yakshini and Apsarasadhnaas are chief, continuously introducing the new facts and secret mysteries of Tantra field, guiding and supporting like best friend and giving right suggestions are main aspects.There are no lackings in methods of Shastraas, Mantra Maharnav, mantra, saundaryaanavpaddhati,tantraratnakar, bhutdamartantraetc are filled with such sadhnaas only. Still after taking help but why is it like that we didn't get support of these Saundaryaas..?

Is the method is wrong?

Is there any fault in Mantra?

Is the method incomplete?

Nope… it is not like that. Rather we may have forgotten that every sadhna contains some secretive facts, after following and using it, if we do authentic provision then for sure the percentage of success becomes multiple. As per our Personnel speed we may get late in achievement of success, but after making right hardship didn't get success is just impossible.

For Sadhnaa different type of material is required, Time, space, in creation of positive environment which always provokes your conscious towards sadhna. You can't deny the necessity of these sadhna material. Every sadhna contains a specific liquid and yantra whose absence gives bad results. For achievement in Sadhna Field mantra, yanta and tantra all three are required. Then only success is possible. And this is not just happens with MahavidyaSadhnas but also applied on each sadhna procedure.

Conversation forum which is organise on YakshiniApsarasadhna at Jabalpur on 12th August, in which we are going to discuss about the base facts of these sadhnas and the material as well and which will be provided only to the participants our guru brothers and sister of this seminar.And which i.e. YakshiniApsarasaayujyashashthmandal.And the speciality of this Mandal is I am explain below.. Studiously we have decided that only for those participating brothers and sisters we will provide this only o them. By which they can treasure the rare and important material for their whole life and

take maximum benefit. The whole procedure of Yantra is going to be explained in seminar only.
Whosoever brothers and sisters had participated in Sadgurudev'sshivir, they very well know the significance of Yantras and sadhna material. If you have to MahavidyaSadhna then also you need to form three Mandal, then only their physical establishment, self-establishment, collaboration, attraction, success and their complete association can be achieved. **If any MaaValgamukhiSadhnak had not done the base primordium process, the whole activation of Atharva sutra process and the purifaication process, then he cannot get the complete association of Mahavidhya.** May he gets compatibility in his work is different thing. Because it is for sure that you definitely get Sadhna effects. As this is mere impossible that we do actions and less result is achieved.

And for this if we understands the above shloka then it is clearly mentioned that –

Yakshini Apsara vai sachari sadaam saa

Rudrormandal sthiraam ch bhavati vashyavaa

We can get forever association of Yakshini and Apsaras but for this some freezing and establishment has to be done in **Rudra Mandal.**

literally we need to understand as to what is the meaning of Mandal???

For getting success in Apsara and YakshiniSadhnas the formation of three Mandals and the coincidence of **Purna Yakshini Apsara Saayujya Shashth Mandal** is essential. The formation process is that tough that a normal sadhak cannot do it. The whole mandals are divided into 3 parts.

1. **RudraMandal**
2. **ApsaraYakshiniMandal**
3. **Yakshini Siddhi Mandal**

And each three Mandals have 2-2 sub mandals on combining which a whole mandal is formed. And this is how 3 complete mandal forms a complete mandal. And which joining of 6 yantras forms a complete Siddhimandal, then only complete success becomes possible for Sadhak. If we try to understands this sequence –

In the**Rudra Mandal** first Mandal or the Yantra is **Siddhi Shiv KuberMandal** , in which the **Lord Mahakaal** who is the owner of Sharpness and Beauty and on kindness of his sadhak gets whole KaamBhav and gets a boon to establish complete control over it. In the success of these saundaryaSadhnas, his establishment is done in complete Tantrokt Form, which consists some special kriyaas, on using this, the component establishment, worship, geometrical notation, cosmic consciousness etcis achieved. And the PaurushBhav or the AdhipatyaBhaav which is must in Sadhna is given by him. Due to which at the time of Sadhna complete control is there and doesn't get affected by sexual excitement. Nor he needs to face problems like night fall and neither erotic thought breaches his sadhna. Along with that Lord Mahakaal and his disciple **Yakshraj kuber**and notation of **his Shakti** is added in same yantra, because we all are aware about this fact that Kuber is lord of Yakshinis and without his kindness the association of Yakshini is far away, no glimpse of experience is achieved.

The second Yantra of this RudraMandal is **Kamakshi Bramhaand Aakarshan Yantra** in which the **Bhagvati kaam Kala Kaali's kalaas** are established via which the connection between the sadhak and Apsara and Yakashini is formed. And they easily contact the sadhak, and along with their Art forms and knowledge they give their association to sadhak and sets free from obstacles. The both yantraas of **Rudra Mandal**gives success in **Yakshini and Apsara** .Now in any classified forms of this sadhna, **you the need this mandals at any cost..**

Now turns come of second mandal which is **Apsara Siddhi Mandal.** In this mandal two other mandals are there.

1.**ApsaraMandal**– which makes sadhak capable of doing this sadhna and keeps away his negativity from him in sadhna duration, doing the purification of sadhak and preparing him to become capable enough for imbibing the beauty, is the main work area of this Mandal. The whole Apasaras are presented in their geometrical form. Due to which it becomes easy to do notation process of them later which becomes their universal residence. In **1993 Sadgurudev**told, that this Yantra is

must in Apsara and TantraSadhnas and maximum sadhak had achieved complete success in it.

The sub mandal of the same one or yantra is **Saundarya Bhaagya Lekhen mandal,** by its support whichever powers sadhak achieved in saundaryasadhna becomes capable to treasure is properly, and this beauty is not just external but also see the effects in every aspect of life. When sadhak do complete self-activation then, all these Saundarya Balas are bound to come close to him.

Now the Third Mandal is **Yakshini Siddhi Mandal**. In this 2 other sub mandals are there. 1. **Shodashi Mandal** its main work is to provide the invisible association of those 16 main Yakshinis who consists 4-4 yakshinis under them. This is how each yakshini hold 4 Vidyaas, of which achievement is bowed in form of success. By the way in shastras, every Yakshini is said to be a holder of one Art form and one Vidya, but being the owner of 4-4 yakshinis indirectly they become the holder of 4 Vidyaas. Now this how 16*4 = 64, they becomes the holder of 64 Tantras and Vidyaas. The formation which tatva of sadhak is needed or which class is fructifying him, such indication is given to sadhak in his sadhna duration via dreams. Then after what type of miniature efforts is needed by sadhak is also indicated by them. The same mandal's sub mandal is **Purna sammohan Vashikaran Mandal** – in sadhna duration the only attraction is not important but also they get under control of sadhak and provide complete reconcilability, is also a must knowing fact.Whole personality of sadhak becomes magnetic and with the help of such powers he should get continously upgrade towards Devvarg. Not only just other persons contact him personally but also the other Vargclass also get eager to do that so. And providing such capabilities is the main area of this mandal

In this way the combination of these three mandals forms a **Yakshini Apsara Sayujjya Shashth Mandal** . In this one yantra this 6 yantraas are inclusive which are noted in the same sequential manner as explained above. Every sub mandalPraanpratishtha, Abhishek (pious ritual), Chaitanyikaran (activation) and diptikaranpracess is done by different types of material, herbs and mantras. Some of them pranpratishtha is done via Vajramarg, some by Shakti marg, some in mid night or some in early morning in brahma muhurt. And when all process is done on 6 yantras then they are summon up and collaborated then only they are fruitful. Well, it is not easy to activate any yantra. Tons of soul force is required.. Because sadhak should know that the whole notation process is done in order of nature, say which type of methods and all is required… etc..

After getting this yantra, more you need is some essential materials like AbheeshtYakshiniApsara basic Yantra, rosary and process. Rest secret methods are done after attempting the combination in the yantra. Thereafter which Mudras are need to be done... which facts should be adhere, what type of routine is required are must to know. |

On this one Yantra the desired cost is too much, whosoever wants to make it on his own or wants to understand the process of formation need to spend 14 days and 7-7 hours, they themselves will come to know the authenticity of this Yantra. You can understand the method of Praanpratishtha, Mantras and Mudraas and what material should be collected, which is not related to us because you only are involved in creation process. |

Well we are fortunate that we got financial support from many our brothers and sisters, and due to that support only this plan is executed. Their selflessness always inspired us to step forward. Therefore in togetherly in making of these yantras it made large difference and became cost effective. Due their support I dared to putforth this infront of you. Fortunately when we will meet in Jabalpur I would explain the whole process and all as how to use it.| Sadgurudev told the usage of above Yantras are at different time spans. And this is got by that grand tradition. These individual yantras are used in various types of sadhnas and every experiment was successful. He clearly mentioned that amongst Siddhas these yantras are famous with their different names.

I have expressed my heart feeling…. Whether they have reached to you or not…. Is depending up on your thoughts and time span…..

==

सौंदर्यवतां सा उध्वोर्वतां पूर्ण तंत्रमेव सिन्धुं |

दिव्योर्वतां सा साहचर्य प्राप्तुम ||

यक्षिणी अप्सरा वै सहचरी सदां सा |

रुद्रोमंडल स्थिरां च भवति वश्य वा ||

तंत्र जगत की अद्भुतता का वर्णन कर पाना असंभव ही है....तभी तो व्यंजना पद्धति के कूट भाष में रचित **"सौंदर्य कल्पलता सिंधु"** में ये कहा गया है की तंत्र के सागर में सौंदर्य और उर्ध्वरेतस गति की प्राप्ति सहज संभव नहीं हो पाती है,अपितु उसके लिए तंत्र रुपी सागर का मंथन करना अनिवार्य होता है,जो की इतना सहज कम से कम आज तो नहीं है,क्यूंकि चरित्र की शुद्धता और व्यक्तित्व की सुदृढता तंत्र सागर की गहराई को मापने का अनिवार्य गुण होना चाहिए साधक में | और जिस साधक में ये गुण होता है वो सहज ही तीव्रता और सौंदर्य दोनों को ही हस्तगत कर लेता है | और जिसने सौंदर्य और तीव्रता को अपने वश में कर लिया,उसे दिव्यत्व तो सहज ही प्राप्त हो जाता है |और इस हेतु यक्षिणी और अप्सरा की साधना ही सर्वोपरि होती हैं, नवीन तथ्यों और गूढ़ रहस्यों से साधक को सतत परिचित करवाना, उसका मार्गदर्शन करना और सच्चे मित्र की भाँति उसे साहचर्य और अपनी सलाह प्रदान करना ही इनका गुण होता है | शास्त्रों में विधियों की कमी नहीं है , मंत्र महार्णव,मंत्र सागरी,मंत्र सिंधु, सौन्दर्याणव पद्धति, तंत्र रत्नाकर,भूत डामर तंत्र आदि ग्रन्थ इन साधनाओं से भरे हुए हैं | किन्तु इनका सहयोग लेने पर भी इन सौंदर्य कृतियों का साहचर्य क्यूँ नहीं प्राप्त हो पाता है ?

क्या विधान गलत है ?

क्या मंत्र में त्रुटि है ?

क्या पद्धति अधूरी है ?

नहीं .... ऐसा कदापि नहीं है | अपितु हम शायद ये भूल गए हैं की किसी भी साधना की कुछ गुप्त कुंजियाँ होती हैं,जिनका अनुसरण और प्रयोग करते हुए यदि प्रामाणिक विधान किया जाए तो सफलता का प्रतिशत कई गुना बढ़ जाता है | हमारी कार्मिक गति के आधार पर भले ही सफलता मिलने में विलम्ब हो,किन्तु परिश्रम करने पर सफलता ना मिले ऐसा संभव नहीं है |

साधना के लिए विभिन्न सामग्रियों की अनिवार्यता होती ही है, काल, स्थान,वातावरण को अनुकूल करते हुए जो आपके चित्त को लगातार साधनोंमुख करते रहें | और इन सामग्रियों की अनिवार्यता को आप नकार भी नहीं सकते | प्रत्येक साधना में किसी खास द्रव्य या यन्त्र की अनिवार्यता तो बनी ही रहती है,जिसके अभाव में साधना से परिणाम की प्राप्ति दुष्कर ही होती है | साधना जगत में परिणाम प्राप्ति के लिए मंत्र,यन्त्र और तंत्र इन तीनों का ही सहयोग अनिवार्य होता है,तदुपरांत ही परिणाम संभव हो पाता है | और ऐसा मात्र महाविद्या साधनाओं

में ही नहीं होता है अपितु प्रत्येक साधना के लिए ऐसा ही विधान है |

जबलपुर में १२ अगस्त को जो यक्षिणी अप्सरा साधना पर हम गोष्ठी आयोजित कर रहे हैं, उसमे इन साधनाओं की आधारभूत सामग्री के रूप में जिस सामग्री को हम गोष्ठी में भाग लेने वाले भाई-बहनों को प्रदान करने वाले हैं वो है,यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ठ मंडल | और इस मंडल की विशेषता क्या है,इसका वर्णन मैं नीचे की पंक्तियों में कर रहा हूँ | हमने पूर्ण मनोयोग से मात्र गोष्ठी में सहभागी होने वाले भाइयों और बहनों को ही इसे देने का निश्चय किया है,ताकि उपरोक्त साधनाओं से सम्बंधित सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामग्री सम्पूर्ण जीवन के लिए उनके पास हो और वे उसका प्रयोग कर पूर्ण लाभ उठा सके | यन्त्र के प्रयोग का पूर्ण विधान गोष्ठी में ही बताया जायेगा |

जिन भी भाइयों और बहनों ने सदगुरुदेव के सानिध्य में साधना शिविरों में भाग लिया है वे ये तथ्य भली भांति जानते हैं की यंत्रों और सामग्रियों की अनिवार्यता का क्या महत्त्व होता है | यदि आपको महाविद्या साधना करनी हो तब भी उस हेतु आपको तीन मंडलों का निर्माण करना ही होता है, तभी उनका शरीर स्थापन,आत्म स्थापन,सायुज्यीकरण, आकर्षण,सफलता प्राप्ति और पूर्ण साहचर्य प्राप्त किया जा सकता है | **यदि माँ वल्गामुखी का कोई साधक हो और उसने मूल उत्स जागरण और अपने अथर्वासूत्र का पूर्ण जागरण और निर्मलीकरण ना किया हो तो उसे इस महाविद्या का पूर्ण साहचर्य नहीं मिल पाता है** हाँ उसके कार्यों को अनुकूलता मिल जाये ये एक अलग बात है | क्यूंकि साधना का प्रभाव तो आपको प्राप्त होता ही है....ऐसा हो ही नहीं सकता है की हम कर्म करें और उसका अल्प परिणाम भी प्राप्त ना हो |

और इस हेतु यदि हम ऊपर लिखी हुयी श्लोक की पंक्तियों के भावार्थ को समझे तो उसमे स्पष्ट लिखा हुआ है की -

यक्षिणी अप्सरा वै सहचरी सदां सा |

रुद्रोर्मंडल स्थिरां च भवति वश्य वा ||

यक्षिणी और अप्सरा का साहचर्य तो सदैव प्राप्त हो सकता है किन्तु इस हेतु उसका कीलन और स्थापन **रूद्र मंडल** में करना होता है |

वस्तुतः ये समझना अति आवश्यक है की ये मंडल क्या है ???

अप्सरा और यक्षिणी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु तीन मंडलों का संयोग कर **पूर्ण यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ठ मंडल** का निर्माण आवश्यक कर्म होता है | इस मंडल की निर्माण प्रक्रिया ही इतनी जटिल है की इसे सामान्य साधक नहीं कर सकता है, सम्पूर्ण मंडलों को ३ भागों में विभक्त किया गया है |

१. **रूद्र मंडल**

२.**अप्सरा सिद्धि मंडल**

३.**यक्षिणी सिद्धि मंडल**

और इन तीनों मंडल में से प्रत्येक मंडल में २-२ उपमंडल होते हैं जिनके योग से एक पूर्ण मंडल का निर्माण होता है |और इस प्रकार ३ पूर्ण मंडलों के मिलने से १ परिपूर्ण मंडल का निर्माण होता है | और इस प्रकार इस पूर्ण सिद्धि मंडल में एक साथ ६ यंत्रों का योग होता है,तभी पूर्ण सफलता के दर्शन साधक को संभव हो पाते हैं | यदि हम इसे समझे तो क्रम इस प्रकार होगा -

रूद्र मंडल में प्रथम मंडल या यन्त्र **सिद्ध शिव कुबेर मंडल** होता है, जिसमे **भगवान महाकाल** का जो तीव्रता और सौंदर्य के अधिपति हैं और जिनकी कृपा से साधक को पूर्ण काम भाव,और काम भाव पर विजय प्राप्ति का वरदान मिलता है,इन सौंदर्य साधना में सफलता के लिए इनका स्थापन पूर्ण तांत्रोक्त रूप से किया जाता है जिसकी कुछ विशिष्ट क्रियाएँ हैं जिनके प्रयोग से अंग स्थापन,पूजन,ज्यामितीय अंकन,ब्रह्माण्ड चेतना प्राप्ति आदि संभव हो पाती है और साधना में जो पौरुष भाव और अधिपत्य का भाव अनिवार्य है ये उसे ही प्रदान करने वाले हैं जिससे साधना के समय संयम भाव के वो पूर्ण नियंत्रण में होता है,जिससे कामोद्वेग से वो पीड़ित नहीं होगा |ना ही उसे स्वप्नदोष जैसी बाधा का सामना करना पड़ेगा और ना ही कामुकता की तीव्र लहर उसकी साधना को ही भंग कर पायेगी | साथ ही भगवान महाकाल के साथ उनके ही शिष्य **यक्षराज कुबेर** और **उनकी शक्ति** का अंकन भी इस एक यन्त्र में ही संयुक्त रूप से होता है,क्यूंकि इस तथ्य से हम सभी अवगत हैं ही की कुबेर यक्षिणियों के स्वामी हैं और इनकी कृपा के बगैर यक्षिणी का साहचर्य तो दूर साधक को अनुभूति का अनुभव भी दूर दूर तक नहीं हो सकता है |

इस रूद्र मंडल का दूसरा यन्त्र **कामाक्षी ब्रह्माण्ड आकर्षण यन्त्र** होता है,जिसमे **भगवती काम कला काली** की **कलाओं** का स्थापन किया जाता है और जिसके द्वारा साधक और अप्सरा तथा

यक्षिणी के बीच एक सूत्र का निर्माण होता है | और वे सुगमता से साधक से संपर्क स्थापित कर सकती हैं,अपनी सम्पूर्ण कलाओं और विद्याओं के साथ वे साधक को अपना साहचर्य प्रदान करती हैं और उसे प्रतिकूलता से मुक्त रखती हैं | **रूद्र मंडल** के दोनों यन्त्र साधक को **यक्षिणी और अप्सरा** दोनों ही साधनाओं में सफलता प्रदायक होते हैं, अब चाहे आप किसी भी एक वर्ग की साधना करें **तब भी ये एक मंडल तो आपको चाहिए ही** |

अब बारी आती है द्वितीय मंडल की जो की **अप्सरा सिद्धि मंडल** होता है | इस मंडल में भी दो मंडल होते हैं १.**अप्सरा मंडल** –जो साधक को अप्सरा साधन के योग्य बनाता है और उसकी नकारात्मक उर्जा को साधना काल में दूर रखता है,साधक का शोधन कर उसे साधना के योग्य बनाना तथा सौंदर्य को आत्मसात करने की क्षमता देना,इस मंडल का प्रमुख कार्य है | सम्पूर्ण अप्सराओं की इस मंडल में सांकेतिक उपस्थिति होती है | जिसके कारण उनका अंकन इसमें सहज हो जाता है और इस प्रकार ये उनका ब्रह्मांडीय आवास ही हो जाता है | **सदगुरुदेव** ने १९९३ में इस यन्त्र को **अप्सरा साधना और तंत्र साधना के लिए अनिवार्य ही बताया था**,और बहुतेरे साधकों ने उस समय इसका प्रयोग कर सफलता पायी थी |

इसी मंडल का दूसरा उपमंडल या यन्त्र **सौंदर्य भाग्य लेखन मंडल** होता है,इसके सहयोग से साधक सौंदर्य साधनाओं के द्वारा जिन शक्तियों की प्राप्ति करता है,उसे सहेज कर रखता है और ये सौंदर्य सिर्फ बाह्यागत नहीं होता है अपितु,जीवन के प्रत्येक पक्ष और साधनाओं में इसका प्रभाव वो स्वयं देख सकता है,जब साधक से इस मंडल का पूर्ण आत्म चैतन्यीकरण हो जाता है तो बरबस ही इन सौंदर्य बालाओं को अपने लोक से इसके पास तक आना पड़ता है |

अब तीसरा मंडल **यक्षिणी सिद्धि मंडल** होता है,इसमें भी २ उपमंडल या यन्त्र होते हैं १. **षोडशी मंडल** इस मंडल का मुख्य कार्य साधक को उन १६ मुख्य यक्षिणियों का अगोचर साहचर्य प्रदान करना होता है जिनके अधिकार में ४-४ यक्षिणी होती है | इस प्रकार प्रत्येक यक्षिणी के अधिकार में ४ विद्याएं होती है,जिसकी प्राप्ति वो साधक को साधना के परिणामस्वरूप करावा सकती है |वैसे शास्त्रों में प्रत्येक यक्षिणी को एक विद्या या कला प्रदान करने वाला कहा गया है,किन्तु चार चार के समूह की एक स्वामिनी होती हैं तो अपरोक्ष रूप से ४ विद्याओं पर उनका अधिपत्य सहज होता है | इस प्रकार १६ गुणित ४=६४ तंत्र या विद्याओं की ये अधिस्वामिनी होती हैं | साधक के निर्माण तत्व के आधार पर कौन सा वर्ग उसे फलीभूत होगा,इसका संकेत ये १६ यक्षिणी साधना काल में ही साधक को स्वप्न के माध्यम से दे देती हैं| तथा साधक को और क्या प्रयत्न करना चाहिए इसके सूक्ष्म संकेत भी साधक को वे प्रदान करती हैं | इसी मंडल का दूसरा उपमंडल या यन्त्र होता है **पूर्ण सम्मोहन वशीकरण मंडल** – साधना काल में बात मात्र आकर्षण की ही नहीं होती है अपितु वे पूरी तरह साधक के वशीभूत होकर

पूर्ण अनुकूलता भी प्रदान करे,ये भी अनिवार्य तथ्य होते हैं | साधक का व्यक्तित्व पूर्ण चुम्बकीय हो और वो इन शक्तियों के साहचर्य से स्वयं भी देव वर्ग की और अग्रसर हो,मात्र मानव वर्ग ही नहीं अपितु उसकी सम्मोहन शक्ति से अन्य वर्ग भी उससे संपर्क करने के लिए आतुर हो,ये क्षमता प्रदान करना इसी मंडल के अंतर्गत आता है |

इस प्रकार इन तीन मंडलों का योग करने से **यक्षिणी अप्सरा सायुज्य षष्ट मंडल** का निर्माण होता है| इस एक यन्त्र में ६ यंत्रों का समावेश होता है,जो इन्ही क्रमों से इस महामंडल में अंकित होते हैं| प्रत्येक उपमंडल की प्राणप्रतिष्ठा,अभिषेक,चैतन्यीकरण और दिप्तिकरण अलग अलग सामग्री,वनस्पतियों और मंत्र से होती हैं,किसी की प्राण-प्रतिष्ठा वज्रमार्ग से होती है,तो किसी की शाक्त पद्धति से,किसी की मध्य रात्रि में तो किसी के लिए ब्रह्ममुहूर्त का विधान है | और जब छहों यन्त्र पर क्रिया पूर्ण हो जाती है तब इनका योग करवाकर सायुज्यीकरण करवाया जाता है,तभी ये फलदायक होते हैं | किसी भी यन्त्र को चेतना देना इतना सहज नहीं होता है,क्यूंकि साधक को ये भली भांति ज्ञात होना चाहिए की इस यन्त्र का अंकन सृष्टि क्रम से हो रहा है या संहार क्रम से,किस पद्धति से इसका आवरण पूजन इत्यादि होगा आदि आदि |

इस मंडल की प्राप्ति के बाद साधना काल में आवश्यक सामग्रियों में आपको आपकी अभीष्ट यक्षिणी अप्सरा का मूल यन्त्र,माला और विधान ही लगता है,बाकी की गोपनीय क्रियाएँ तो उसका संयोग इस यन्त्र से करने से ही संपन्न होती है... तदुपरांत किन मुद्राओं का प्रदर्शन होना चाहिए...किन बातों का ध्यान आवश्यक है...क्या दिनचर्या होनी चाहिए आदि बाते ही आवश्यक होती हैं |

इस एक यन्त्र के निर्माण पर लागत मूल्य ही बहुत आ जाता है,और जो भी भाई बहन इसका निर्माण विधान समझना चाहे और स्वयं इसकी निर्माण विधि को प्रमाणिकता से आत्मसात करना चाहे वो अपने बहुमूल्य समय में से मात्र १४ दिन और उन दिनों के ७-७ घंटे देकर स्वयं ही इस यन्त्र का निर्माण कर सकते हैं...इस की प्राण प्रतिष्ठा विधि और मन्त्रों तथा मुद्राओं को समझ सकते हैं तथा हेतु इसकी जो भी सामग्री लगेगी,वो आपको ही जुटानी है,उससे हमारा कोई लेना देना नहीं है,क्यूंकि निर्माण काल में आप स्वयं ही इस कार्य को सम्पादित करेंगे |

हम इस कार्य में सौभाग्यशाली रहे हैं की हमें अपने कई भाई बहनों का आर्थिक सहयोग मिला है और उस सहयोग की वजह से हमारी कई योजनाओं को गति भी मिली है,उनकी निस्वार्थता हमें निरंतर कर करने की और प्रेरित करती है और इसी कारण एक साथ इनकी प्राण प्रतिष्ठा आदि करने के कारण इनके निर्माण मूल्य में बहुत अंतर आ गया है| उन सभी सहयोगियों के कारण ही आज पुनः इस कल कवलित विधान को मैं सबके सामने रखने का साहस कर रहा हूँ|

जब आप सभी से जबलपुर में मिलने का सौभाग्य मिलेगा तो इस महा मंडल का कैसे प्रयोग किया जाता है,उस हेतु हम विधान भी स्पष्ट करेंगे | उपरोक्त यंत्रों का अलग अलग समय पर **सदगुरुदेव** ने प्रयोग कराया है,और ये उसी महान परंपरा से प्राप्त हुए हैं,इनमे से प्रत्येक यन्त्र को भिन्न भिन्न साधनाओं में भी प्रयोग किया गया है,और प्रत्येक प्रयोग प्रभावी रहे है | उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा था की सिद्धों के मध्य ये यन्त्र अलग अलग नामों से भी प्रचलित रहे हैं |

मैंने तो अपने दिल की बात कह दी..... अब वो आप तक पहुँचती है या नहीं......ये तो आपके भावों और कालगति पर ही निर्भर है.....

"निखिल प्रणाम"

"जय सदगुरुदेव"

*******ARIF*******

******NPRU******

Posted by Nikhil at 2:09 PM 3 comments:
Labels: APSARA, SEMINAAR, TANTRA SIDDHI, YAKSHINI SADHNA

Tuesday, June 19, 2012

AMBUVACHI YOG AUR POORN TANTRA SIDDHI – GUPT NAVRATRI VIDHAAN



Kaalo Ashwo Vahti Saptrashmih Sahastraksho Ajaro Bhuriretah |
Tamarohanti Kavyo Viyashichatstasay Chakraa Bhuvanaani Vishwa ||

It means that Kaal (Time) have seven ropes, it drives thousands of axis and is immortal and have ever-young body. It is running continuously on his path like mahabali ashv (Horse).And entire world, all evolved material and creatures are roaming being entangled in its circle and they are not able to cross it.....Only stable, learned ones and sadhak who is free from infatuation of mind can ride this horse of time and can go beyond it or accomplish it.

Sadhak's life is something similar to it where he continuously put his efforts to get himself introduced to secrets of Kaal. But without right hard-work, continuous practice and authentic guidance, this will remain merely as imagination. But with it other things are to be kept in mind that sadhak should have the knowledge of correct moments of time. Therefore, it is necessary to know about how to use these moments, how to give completion to these processes.

The seven sadhnas which we selected for June month, yantra related to it have reached all brothers and sisters. But we deliberately delayed the providing of the Vidhaan. Because merely giving procedures and Vidhaan cannot give completeness in this subject and nor the festival of sadhna can't be celebrated fully. Because all these preparation were incomplete. Remember that for this purpose there was shortage of one important sequence not only for these seven sadhnas but also thousands of sadhna process in future would have remained incomplete. Remember that sadhna of sadhak can't be complete without authentic sadhna article. For example if you understand that if I want to talk only then any of mobile phones will do...is it right?.....if you have to listen songs, then you have to select the phone having facility of F.M .But when we talk about internet surfing......mobile

banking....chatting....video calling....ticket booking...then....we need one phone which have all these facilities and multimedia facility.
Now you will get authentic yantra every time, but for getting complete power, how you will get **"Sarv Vidya Saadhy Kaamna Poorti Vijay Maala"???**
Do you know that this time, **time from 20 June to 28 June is amazing......this time is best for accomplishing various sadhnas. Presence of Guru Pushya constellation......that too on 21 date, days of Gupt Navraatri ......2-2 Sarvarth siddhi yog, first on 21 and second on 28.....and amazing Ambu Baachi yog**......can any Muhurat better than this can be obtained......But if we accomplish the above rosary fully then for getting the success in all births and for the coming generations, this rosary being present as legacy will keep on providing accomplishment. This is not a normal rosary but describing its importance is very cumbersome task. But still I will describe following qualities.....
Providing full cooperation in fulfillment of wish
Beneficial in combining with Sammohan power
To increase self confidence
Saving from untimely deaths and bad incidents
Providing the pleasure of children
For getting desired business or job
For getting desired life partner
For getting respect and dignity
For establishing full control over Kaam Element
For providing luxury
For increase in remembrance power
Capable of augmenting concentration power and meditation capability
For remedying tantra obstacle
For attaining security chakra.
For definite success in Tantra sadhnas
For complete success in various sadhnas
By this rosary, various sadhnas can be done and it is not necessary to immerse it rather after each sadhna there will be successive addition in its power. And wearing it provides good fortune.
Do you think that something can be more important than its construction that too doing this all important activity by your own hands? Now the time has come that we not only have the knowledge about energizing of sadhna articles and process to instill consciousness in them but also we can do it ourselves. Side by side, we have to accomplish the **Poorn Tantra Safalya Mantra** also. We can utilize this precious time for progress of our life. And once we accomplish these two processes fully, then future sadhna life becomes completely safe from negativity of fear and failure.
Vidhaan-

1. First of all clean the worship place with clean water and do the arrangements in such a way that we can face North.
2. Dress and aasan will be of red colour.
3. Spread clothes of red colour also on wooden plank (Baajot)

4. Time will be second phase of night i.e. from 10:00 P.M to 3:00 P.M.
5. Take bath and sit on the aasan after wearing clothes.
6. Worship items will primarily consist of kumkum mixed I kg rice , oil Deepak(whichever you use for worship), Bhoj Patra or piece of white paper, Rakt Pushp,6 lemon ,4 coconut, leaf of Paan (everyday new) and if you do not get it then supaari used for worship purpose,new knife,Kumkum,9 cardamom,27 clove,small-2 9 red colored handkerchiefs, water container made up of copper, sweet made up of milk or mishri (sugar-candy), any fruit.
7. The rosary you need to accomplish(Rudraksh, sfatik, Hakik (white, yellow or red),Munga ,Kamal gatta rosary will be better)
8. For chanting Guru Mantra, it is correct to use Guru Rosary.
9. In other word, separate rosaries have to be used for accomplishment and for chanting guru mantra.

Pronounce "Om" 5 times in complete manner after establishing picture of Guru, Guru Yantra, Ganpati yantra or picture on Baajot. Do the poojan of Sadgurudev and Lord Ganpati in complete panchopchar way. Then chant at least 4 rosaries of Guru Mantra and 1 rosary of Tantrokt Ganpati Mantra.

OM GANADHYAKSHO KRISHN PINGLAKSHAAY NAMAH ||

After that, pray to Sadgurudev and lord Ganpati for success in sadhna.

Now make one maithun chakra by kumkum on floor in front of Baajot. Establish one small plate of cooper on Baajot in front of Guru Picture and also make yantra inside it. Now wash the rosary with clean water in different container and after wiping it, place it in that plate in which maithun chakra has been made and which is established on Baajot.

Now pronounce dhayan mantra 5 times

Ati Sulalit Veshaam Haasay Vaktraam Trinetraam,
Jit Jald Sukaantim Patt Vastaam Prakashaam |
Abhay Var Karadhyaam Ratn Bhushaabhi Bhavyaam,
Sur Taru Taal Peethe Ratn Sinhasansthaam ||

Now the new knife which you have kept put an ornamental mark on it by kumkum. Pronounce below mantra 21 times and press it under aasan which is beneath your left feet.

FREM FREM KROM KROM PASHUN GRIHAAN PHAT SWAHA

And after that do the 3 rosaries of Maha mantra of Aadya Shakti Maa Kamakhya "Treem Treem Treem".

After that, write the Poorn Tantra Safalya mantra by kumkum on Bhoj patra. Establish it over the bindu in center of triangle written on floor.

OM HREENG AING KLEENG KREEM HUM HUM KREEM KREEM PHAT

And now place one lemon in one of the angles of triangle. Again while chanting mantra, place second lemon inside second triangle. In this way place 6 lemons in six triangles.

OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE STHAPYAAMI NAMAH ||

After that do the poojan of Bhoj Patra by kumkum-mixed rice while chanting below mantra.

OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE AKSHATAAN STHAPYAAMI NAMAH ||

Now do the poojan of Bhoj Patra by kumkum while chanting below mantra
OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE KUMKUM STHAPYAAMI NAMAH ||

Now offer flowers
OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE PUSHPAM STHAPYAAMI NAMAH ||

Now do the poojan through dhoop-deep.
OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE DHOOPAM DEEPAM STHAPYAAMI NAMAH ||

Now do the poojan by navidya and fruit
OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE PHALAM-NAIVEDYAM STHAPYAAMI NAMAH ||

Now offer one coconut.
OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE NAARIKEL STHAPYAAMI NAMAH ||

Now the rosary which need to be accomplished, take it out from that container and rotate it in your hand while pronouncing below mantra 11 times i.e. the way we use thumb and fingers in chanting, do it like that.

Maale Maale Mahamaale Sarv Tatv Swrropini|
Chatuvargstavyi nyast stsmame Sidhida Bhav ||
Now with that rosary, chant one round of below mantra
OM HREEM SHREEM AKSHMAALAAYAI NAMAH ||

Now chant one round of below mantra from same rosary-

OM SARVMAALAA MANIMAALAA SIDDHI PRADAATRAYI SHAKTI RUPINYAI NAMAH ||

Now again establish that rosary in that container. And do its poojan by Rakt pushp, coconut, leaf of paan (everyday new) and if not possible then supaari used for worship, 1 cardamom, 3 clove and navidya. When you are offering sadhna article, then pronounce below mantra and chant "Samarpayaami Namah" in end of mantra after taking the name of article which you are offering.

Example-

OM HREEM SHREEM AKSHMAALAAYAI NAMAH RAKTPUSHPAM SAMARPAAYIMI ,NAARIKEL SAMARPAAYIMI.....etc etc

After that, accomplish chetna Kriya on that rosary by kumkum-mixed rice while chanting below mantra. This mantra has to be chanted for at least 20 minutes or 108 times and Akshat has to be offered while chanting.

OM AING HREENG SHREENG AM AAM IM EEM RIM RRIM LRM LRIM EM AIM OM OUM AM AH KAM KHAM GAM GHAM INGAM CHAM CHHAM JAM JHAM INYAM TAM THAM DAM DHAM NNAM TAM THAM DAM DHAM NAM PAM PHAM BAM BHAM MAM YAM RAM LAM VAM SHAM SHHAMSAM HAM KSHAM ||

Now pray that rosary by below mantra and offer flowers on it.

Om Tvam Maale Sarv Devanaam Sarv Siddhi Prada Mta |
Tem Satyen Mem Siddhim Dehi Maatarnamoostute ||

Now chant 5 rounds of "**Poorn Tantra Safalya Mantra**". And in the end, offer mantra Jap in feet of Sadgurudev. This sequence will go on up till 28 June...Remember lemon should be placed on first day only. Coconut should be established on first and last day. After the sequence is completed, put the rosary in that container and cover it with red cloth. On second day, it has to be covered with other cloth.in the same way on all 9 days; it has to be covered with new cloth...and the old one have to be kept separately. On 29th June, all articles(except rosary and Bhoj patra),along with the cloth spread on Baajot should be tied and after praying to Sadgurudev for success, keep it in any place where nobody comes and wash the floor....Yes keep in mind that Maithun chakra will be made only on first day on floor and container. There is no need to make it daily. Immerse the Bhoj patra in clean water.

I will only say that such fortune is attained by few ones that there is right opportunity and secret process are obtained. You all get full benefits from this fortunate festival, I pray to lotus feet of my Praanadhar.

===

"कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि: सहस्राक्षो अजरो भुरिरेता: |

तमारोहन्ति कवयो वियश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा ||"

अर्थात काल सात रस्सियों वाला और हजारों धुरियों को चलाने वाला तथा निर्जरादेह से युक्त और अमर है | वह महाबली अश्व के समान निरंतर अपने पथ पर दौड़ रहा है | और समस्त संसार,उत्पन्न पदार्थ तथा जीव आदि उसके इसी चक्र में फंसकर घूम रहे तथा उसे पार नहीं कर पा रहे हैं…मात्र स्थिरप्रज्ञ,ज्ञानी और मन की आसक्ति से मुक्त साधक ही इस काल रुपी अश्व की सवारी कर इससे परे जा सकते हैं या साध सकते हैं |

कुछ ऐसा ही तो है एक साधक का जीवन,जहाँ वो लगातार प्रयास करता रहता है,काल के रहस्यों से परिचित होने का | किन्तु उचित परिश्रम,सतत अभ्यास और प्रामाणिक मार्गदर्शन के ऐसा होना मात्र कपोल कल्पना ही कहलाती है | किन्तु इसके साथ साथ ये भी ध्यान रखना आवश्यक है की **साधक को काल के उपयुक्त क्षणों का ज्ञान भी हो**, अतः किन क्षणों का कैसा प्रयोग करना है,उनमे किन क्रियाओं को पूर्णता दी जा सकती है,ये जानकारी भी होना आवश्यक है |

हमने जिन सात साधनाओं का चयन जून माह के लिए किया था | उनसे सम्बंधित यन्त्र तो सभी भाई बहनों के पास पंहुच ही गए हैं,किन्तु हमने जान बूझ कर साधना विधान देने में विलम्ब किया था | क्यूंकि मात्र प्रक्रिया और विधान पंहुचा देने से ही इस विषय को ना तो पूर्णता मिल सकती थी और ना ही सफलता का पूरी तरह से उत्सव मनाया जा सकता था | क्यूंकि ये तैयारी ही अपूर्ण थी | याद रखिये इस हेतु एक बहुत महत्वपूर्ण क्रम का अभाव था और मात्र इन सात साधनाओं के लिए ही नहीं अपितु भविष्य में किये जाने वाले हजारों साधनात्मक विधान अपूर्ण ही रहते | याद रखिये साधक की साधना प्रामाणिक साधना सामग्री के बगैर पूर्ण नहीं हो सकती है | उदाहरण के लिए आप ये समझिए की यदि मुझे मात्र बात करनी है तो कोई भी मोबाईल फोन चलेगा नहीं बल्कि दौड़ेगा….. ठीक है ना… अब गाने भी सुनना हो तो फिर ऐसा फोन चुनना पड़ेगा, जिसमे एफ.एम. की सुविधा हो किन्तु जब बात उसमे इन्टरनेट सर्फिंग की हो…मोबाइल बैंकिंग की हो…चेट की हो….वीडियो कालिंग की हो…टिकट बुकिंग की हो…तब…..तब..हमें एक ऐसा फोन चाहिए ना,जिसमे ये सारी सुविधाए और मल्टीमीडिया की सुविधा भी हो….|

अब आपके पास प्रामाणिक यन्त्र तो हर बार पंहुच जायेगा,किन्तु आप पूर्ण शक्ति प्राप्ति के लिए “**सर्व विद्या साध्य कामना पूर्ती विजय माला**” कहाँ से लाओगे ????

क्या आप जानते हैं की **इस बार २० जून से २८ जून तक का काल अद्भुत है…विविध साधनाओं को सिद्ध करने के लिए पूर्ण सफलता प्रदायक है | गुरु पुष्य नक्षत्र की उपस्थिति…वो भी २१ तारीख को,गुप्त नवरात्रि के दिवस ….२-२ सर्वार्थ सिद्धि योग,पहला २१ को और दूसरा २७ जून को…और अद्विय्तीय अम्बुबाची योग**…क्या इससे अद्भुत मुहूर्त साधना के लिए प्राप्त हो सकता था| हम मात्र एक साधना ही इस गुप्त नवरात्री में कर पाएंगे…किन्तु यदि हम उपरोक्त माला को पूर्ण सिद्ध कर ले तो जन्म जन्मांतर की साधनाओं में सफलता हेतु और आने वाली पीढ़ी के लिए भी ये माला एक धरोहर के रूप में उपस्थित रहकर सिद्धि प्रदान करती

रहेगी | ये कोई सामान्य माला नहीं है,अपितु इसके महातम्य का वर्णन करना दुष्कर है,फिर भी निम्न विशेषताओं का मैं उल्लेख करना चाहूँगा –

मनोकामना पूर्ती के लिए पूर्ण सहयोगी |
सम्मोहन शक्ति से युक्त करने में लाभकारी |
आत्मविश्वास वृद्धिकारक |
अकालमृत्यु और दुर्घात से बचाने वाली |
संतान सुख देने में समर्थ |
मनोवांछित व्यवसाय या नौकरी की प्राप्ति हेतु |
मनोवांछित जीवन साथी प्राप्ति हेतु |
सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु |
काम तत्व पर पूर्ण नियंत्रणकारी |
ऐश्वर्य प्रदात्री |
स्मरण शक्ति में वृद्धि कारक |
एकाग्रता शक्ति और ध्यान क्षमता की अभी वृद्धि करने में सक्षम |
तंत्र बाधा निवारण हेतु |
सुरक्षा चक्र प्राप्ति हेतु |
तंत्र साधनाओं में निश्चित सफलता दायक |
विविध साधनाओं में पूर्ण सफलता प्रद |
इस एक ही माला से विविध साधनाएं की जा सकती है,और उसका विसर्जन अनिवार्य नहीं है,अपितु प्रत्येक साधना के बाद इसकी शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जायेगी | और इसे धारण करना ही पूर्ण सौभाग्यदायक है |

क्या आपको लगता है की इसके निर्माण से महत्वपूर्ण कुछ भी हो सकता है वो भी स्वयं के हाथों ही इतनी महत्वपूर्ण क्रिया संपन्न करने से | कालानुसार अब समय आ गया है की सामग्रियों की प्रतिष्ठा और उनमे चेतना का प्रवाह करने की क्रिया का ना सिर्फ हमें ज्ञान हो अपितु,उसे हम स्वयं ही संपादित भी कर सके | साथ ही **पूर्ण तंत्र साफल्य मंत्र** को भी इसी काल में हमें अंगीकार कर सिद्ध करना है | हम इस बहुमूल्य समय को अपने जीवनोत्थान हेतु उपयोग कर सकते हैं | और एक बार जब हम इन दोनों क्रियाओं को पूर्ण रूपेण सिद्ध कर लेते हैं,तो आगे का साधना जीवन भय और असफलता की नकारात्मकता से सदैव सुरक्षित रहता है |

विधान –

१. सर्वप्रथम पूजन स्थल को भली भांति स्वच्छ जल से साफ़ कर ले,और उत्तर दिशा की और मुख कर सके,ऐसे स्थान का चयन कर ले |
२. वस्त्र व आसन लाल रंग के होंगे |
३. सामने बाजोट पर भी लाल रंग का वस्त्र बिछा दें |
४. समय रात्रि का दूसरा प्रहर अर्थात १० बजे से ३ बजे के मध्य का होगा |

५. स्नान कर वस्त्र धारण कर अपने आसन पर बैठ जाएँ |
६. पूजन सामग्री में मुख्यतः कुंकुम मिश्रित १ किलो अक्षत (साबुत चावल),तेल का दीपक (जो भी आप पूजन के लिए प्रयुक्त करते हों),भोज पत्र या सफ़ेद कागज़ का टुकड़ा,रक्त पुष्प,६ निम्बू,४ नारियल,पान का पत्ता(रोज नया) और नहीं मिले तो पूजा की सुपारी,नया चाकू,कुंकुम,९ इलायची,२७ लोंग,छोटे छोटे ९ लाल वस्त्र के रुमाल जैसे टुकड़े, ताम्बे का जल पात्र,दूध की मिठाई या मिश्री,कोई भी फल |
७. जिस माला को आप सिद्ध करना चाहते हैं(रुद्राक्ष,स्फटिक,हकीक सफ़ेद,पीला या लाल,मूंगा,कमलगट्टे की माला का प्रयोग करना बेहतर है) |
८. गुरु मंत्र जप करने के लिए अपनी गुरु माला का प्रयोग किया जाना उचित है |
९. अर्थात सिद्ध करने के लिए अलग और गुरु मंत्र जप के लिए अलग माला का प्रयोग करना है | ये बात बार बार बताना उचित नहीं होगा |

बाजोट पर गुरु चित्र,गुरु यन्त्र,गणपति,यन्त्र या चित्र की स्थापना कर,"ॐ" का पूर्ण रूप से ५ बार उच्चारण करें तथा सदगुरुदेव और भगवान गणपति का पूर्ण पंचोपचार विधि से पूजन करें | तथा गुरु मंत्र की कम से कम ४ माला संपन्न करें और १ माला तांत्रोक्त गणपति मंत्र की संपन्न करे |

"ॐ गणाध्यक्षो कृष्ण पिंग्लाक्षाय नमः ||"

OM GANADHYAKSHO KRISHN PINGLAKSHAAY NAMAH ||

तत्पश्चात सदगुरुदेव और भगवान गणपति से साधना विधान में सफलता के लिए प्रार्थना करे | अब कुंकुम से बाजोट के सामने भूमि पर एक मैथुन चक्र का निर्माण करे | और ताम्बे की एक छोटी सी थाली बाजोट पर भी गुरु चित्र के सामने स्थापित करें और उसमे भी मैथुन चक्र का अंकन कर लें |

अब माला को किसी अलग पात्र में शुद्ध जल से स्नान करवाकर और पोंछ कर उस थाली में स्थापित कर दें जिस में मैथुन चक्र अंकित है और जो बाजोट पर स्थापित है |

अब ध्यानमंत्र का ५ बार उच्चारण करे –

अति सुललित वेशां हास्य वक्त्राम् त्रिनेत्राम,
जित जल्द सुकान्तिम् पट्ट वस्त्रां प्रकाशं |
अभय वर कराढयां रत्न भूषाभि भव्यां,
सुर तरु ताल पीठे रत्न सिंहासनस्थाम् ||

अब जो नया चाकू आपने रखा हुआ है उस पर कुंकुम का तिलक लगाकर निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण कर उसे अपने बांये पैर के आसन के नीचे दबा लें-

फ्रें फ्रें क्रों क्रों पशुन् गृहाण हुं फट् स्वाहा ||
FREM FREM KROM KROM PASHUN GRIHAAN PHAT SWAHA

और इसके बाद गुरु माला से ही **आद्य शक्ति माँ कामाख्या** के **"त्रीं त्रीं त्रीं"** महा मंत्र की ३ माला संपन्न करे |

तदुपरांत भोजपत्र पर **पूर्ण तंत्र साफल्य मंत्र** कुंकुम से लिख कर भूमि पर लिखे त्रिकोण के मध्य जो बिंदु बना है उस पर स्थापित कर दे |

ॐ ह्रीं ऐं क्लीं क्रीं हुं हुं क्रीं क्रीं फट् ||

OM HREENG AING KLEENG KREEM HUM HUM KREEM KREEM PHAT

और अब एक नीम्बू को त्रिकोण के एक कोण में निम्न मंत्र बोलते हुए स्थापित कर दें | फिर मंत्र बोलते हुए दूसरा नीम्बू दूसरे त्रिभुज में स्थापित कर दें | इस प्रकार ६ निम्बुओं को ६ त्रिकोण में स्थापित कर दें |

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते स्थापयामि नमः ||

OM AIM HREEM HASOUH TRIPURE AMRITARNAVVAASINI SHIVE SHIVANANYARUPINYAI TE STHAPYAAMI NAMAH ||

इसके बाद उस भोजपत्र का पूजन निम्न मंत्र बोलते हुए कुंकुम मिश्रित अक्षत द्वारा करे |

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते अक्षतान समर्पयामी नमः ||

अब कुंकुम द्वारा उस भोजपत्र का पूजन निम्न मंत्र बोलते हुए करे –

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते कुंकुम समर्पयामी नमः ||

अब पुष्प अर्पण करे –

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते पुष्पं समर्पयामी नमः ||

अब धुप-दीप द्वारा पूजन करे –

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते धूपं दीपं दर्शयामि नमः ||

अब नैवेद्य या फल द्वारा पूजन करे –

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते फलं-नैवेद्यम समर्पयामी नमः ||

अब १ नारियल को अर्पित करे –

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौ: त्रिपुरे अमृतार्णववासिनी शिवे शिवानन्यरुपिन्यै ते नारिकेल समर्पयामी नमः ||

अब जिस माला को सिद्ध करना था उसे पात्र में से उठाकर और हाथ में लेकर निम्न मंत्र का ११ बार उच्चारण करते हुए घुमाते जाये अर्थात जैसे माला करते हुए हम उँगलियों और अंगूठे का प्रयोग करते हैं,वैसे ही करें |

माले माले महामाले सर्व तत्त्व स्वरूपिणी |

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्त स्तस्मंमे सिद्धिदा भव ||

अब उसी माला से १ माला मंत्रजप निम्न मंत्र का करे –

ॐ ह्रीं श्रीं अक्षमालायै नमः ||

OM HREEM SHREEM AKSHMAALAAYAI NAMAH ||

तत्पश्चात निम्न मंत्र का जप १ माला उसी माला से करे -

ॐ सर्व माला मणि माला सिद्धि प्रदात्रयि शक्ति रुपिण्यै नमः ||

OM SARVMAALAA MANIMAALAA SIDDHI PRADAATRAYI SHAKTI RUPINYAI NAMAH ||

अब उस माला को वापस उसी पात्र में स्थापित कर दें.,और उसका पूजन अब माला का पूजन रक्त पुष्प,नारियल,पान का पत्ता(रोज नया) और नहीं मिले तो पूजा की सुपारी, १ इलायची,३ लौंग और नैवेद्य से करे | जब आप सामग्री अर्पित कर रहे हों तब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए करे और मंत्र के अंत में जिस सामग्री को आप अर्पित कर रहे हों,उस सामग्री का नाम लेकर **समर्पयामी नमः** कहे |

उदाहरण –

ॐ ह्रीं श्रीं अक्षमालायै नमः रक्तपुष्पं समर्पयामी ,नारिकेल समर्पयामी .....आदि आदि

इसके बाद उसी माला पर कुंकुम मिश्रित अक्षत निम्न मंत्र बोलते हुए चेतना क्रिया संपन्न करे,ये मंत्र कम से कम २० मिनट या १०८ बार बोलते हुए अक्षत के दाने अर्पित करते जाना है |

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं ऋम् ऋम् लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अ: कं खं गं घं ङ चं छं जं झं ञ* टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं ||

OM AING HREENG SHREENG AM AAM IM EEM RIM RRIM LRM LRIM EM AIM OM OUM AM AH KAM KHAM GAM GHAM INGAM CHAM CHHAM JAM JHAM INYAM TAM THAM DAM DHAM NNAM TAM THAM DAM DHAM NAM PAM PHAM BAM BHAM MAM YAM RAM LAM VAM SHAM SHHAMSAM HAM KSHAM ||

इसके बाद माला को निम्न मंत्र से प्रणाम करें और उन पर पुष्प अर्पित करे –

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्व सिद्धिप्रदा मता |

तें सत्येन में सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तूते ||

इसके बाद इसी माला से **पूर्ण तंत्र साफल्य मंत्र** की ५ माला जप करे | और अंत में सद्गुरु चरणों में मंत्र जप अर्पित कर दें | यही क्रम अंतिम दिवस तक अर्थात २८ जून तक रहेगा...याद रखिये नीम्बू मात्र पहले दिन स्थापित करने हैं,नारियल पहले और अंतिम दिवस स्थापित करना है | क्रम समाप्त होने पर माला को उसी पात्र में रख दे और लाल वस्त्र के टुकड़े से ढांक दें,दूसरे दिन दुसरे वस्त्र से,इसी प्रकार ९ दिनों तक नित्य नए वस्त्र से ढांकना है...और पुराने वाले को अलग रख देना है |२९ जून को सभी सामग्री(माला और भोजपत्र को छोड़कर) बाजोट पर पर बिछे वस्त्र में बांधकर सदगुरुदेव से पूर्ण सफलता की प्रार्थना करते हुए किसी वीरान स्थान में रख दे

और फर्श को धो या पोछ लें...हाँ याद रखिये मैथुन चक्र मात्र पहले दिन ही भूमि और पात्र में बनेगा,उसे नित्य बनाने की जरुरत नहीं है | भोजपत्र को स्वच्छ जल में विसर्जित कर दे |
मैं मात्र यही कहूँगा की ऐसा सौभाग्य किसी किसी का ही होता है की सही अवसर हो और गुह्यतम क्रियाओं की प्राप्ति हो,आप सभी को इस सौभाग्यशाली पर्व का पूर्ण लाभ प्राप्त हो,यही प्रार्थना और कामना है मेरी अपने प्राणाधार के श्री चरणों में |

SIDDH KUNJIKA AUR PAARAD VIGYAN RAHASYA



तंत्रमार्ग में गतिशील होने वाले प्रत्येक पथिक को "सिद्ध्कुंजिका" के रहस्य का ज्ञान होना आवश्यक है | जीवन के विविध पक्षों में इनके अर्थ भिन्न भिन्न हो सकते हैं,फिर वो चाहे आर्थिक उन्नति का क्षेत्र हो,आध्यात्मिक उन्नति का क्षेत्र हो या फिर आरोग्य की दृष्टि से इसकी भूमिका का बोध हो..... सदगुरुदेव की ज्ञान दृष्टि ने इस अद्भुत मंत्र के उन रहस्यों को अनावृत किया था जो जन सामान्य के पहुँच से बहुत दूर या अगम्य है....उन्ही से प्राप्त एक ऐसा रहस्य जिसमे इस मंत्र के गर्भ में छुपे उन मर्मों का ज्ञान भी समाहित था जो रस विज्ञानं की दुरुहता को सहज ही हल किया जा सकता है....बस उसी और एक कदम .....

******NPRU******

Posted by Nikhil at 4:00 AM No comments:

Labels: PAARAD, TANTRA SIDDHI

इच्छित व्यक्ति स्तम्भनं प्रयोग

Blows and counter-blows have become part and parcel of life. Now times are gone when people used to fight giving you open challenge. Now harming you in hidden manner have become the only motive. There are many categories of people mentioned in shastras…….there are many among these also which want to disturb others without any reason……Harming anybody for sake of money only or for land. Or being jealous with your progress, creating various kinds of conspiracy against you.

Sadhak belonging to the field of tantra very well knows how to deal with such problems. But there is wide gap between knowing it and doing it.Stambhan is one of karmas under Shat Karmas (6 process of tantra).Every one of us are well introduced to the form of prime deity of Stambhan Goddess Balgamukhi .If the person does not have any solution in mind, he can take the procedural knowledge of this Vidya and use it for his own security. Definitely he will benefit from it.

But it is very hard to find the person capable of providing this knowledge and the person who can use it appropriately…..and the problem is that how to take time out for doing such type of prayog. Everyone is hard-pressed for time; this fact is known to everybody.

There are both type of process in field of tantra: those consuming more time and those taking less time. Generally it is said that first of all less time-consuming process should be paid attention and if the results are not as per our need then the attention should shift to high-order sadhna .This is correct too since where there is need of needle then why to use sword. And in the base of Tantra Mantra, there is one important part or science called Yantra Science…..even a small portion of it has not been revealed so far……This science has been full of so many amazing hidden and hard to believe secrets.

The various prayogs given by us have been the matter of appreciation among various saints, tantra acharyas and various high-order tantra

scriptures. Hundreds have done them and taken benefits from it.This need of the hour is that if we have time, why not we do this prayog which have been so accurate and tested.
These easiest processes have their own significance. Make this yantra.It can be done on morning of any auspicious day.
For making yantra, one can use the stick of pomegranate or any other appropriate stick which is available.
Mixture of Kumkum and Gorochan has to be used as ink for writing yantra.
Yellow dress and yellow aasan will be more appropriate.
Take resolution (Sankalp) in the beginning of prayog.
Keep in mind that write the name of the person in middle of yantra who is troubling you.
After making yantra i.e. after writing the name of person, this yantra has to be kept in clay container for full one day and dhoop, deep and navidya has to be offered.
On the next day, place one clay plate above the clay container (in which yantra was kept) and tie this container nicely with any cloth. Keep it in any far-off place where nobody comes.
After doing this, that person is not able to frame any harmful plan against you.
After this do Sadgurudev poojan and chant Guru Mantra as per your capacity and pray for your success.
===

घात प्रतिघात तो जीवन का खासकर आज के , तो एक अंग वह भी आवश्यक बन गयी हैं वह समय कहीं कोसों दूर चला गया जब लोग सामने चुनौती दे कर लड़ना पसंद करते थे . अब तो गुप्त रूप से आपको नुक्सान पहुचना ही एक मात्र मकसद रह गया हैं, यूँ तो शास्त्रों मे लोगों की अनेक प्रकार की श्रेणियाँ उल्लेखित हैं . उनमे से कुछ ये भी हैं की अकारण ही दूसरे को परेशां करने वाले ...किसी की जमीन पर या किसी को सिर्फ कुछ धन के लिए नुक्सान पहुचने वाले . या आपकी उन्नति से जल कर आपके लिए तरह तरह के षड्यंत्र का निर्माण करने वाले .

तंत्र क्षेत्र का साधक इन सभी समस्यायों को कैसे निपटा जाये यह भली भांति जानता हैं पर जानने और करने मे कोसो की दुरी होती हैं ,षट्कर्म मे से एक कर्म स्तम्भंन्न भी हैं

और स्तम्भनं की प्रमुख देवी भगवती बल्गामुखी के स्वरुप से कौन नही परिचित होगा , जिसे कोई भी उपाय ना सूझे तो विधिवत ज्ञान ले कर इस विद्या का प्रयोग अपने रक्षार्थ करें निश्चय ही उसे लाभ होगा .

पर न तो इस विद्या का ज्ञान देने वाले और न ही उचित प्रकार से प्रयोग करने वाले आज प्राप्त हैं .और् सबसे बड़ी समस्या यह हैं की इन प्रयोगों को करने के लिए कैसे समय निकाला जाए .आज समय की कितनी कमी हैं यह तो हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं ही .

साधना क्षेत्र मे दोनों तरह के विधान हैं लंबे समय वाले और कम समय वाले भी ..साधारणतः यह कहा जाता हैं की सबसे पहले कम समय वाले विधानों की तरफ गंभीरता से देखा जाना चाहिये और जब परिणाम उतने अनुकूल ना हो जितनी आवशयकता हैं तब बृहद साधना पर ध्यान दे यह उचित भी है क्योंकि जहाँ सुई का काम हो वहां तलवार की क्या उपयोगिता ..

और तंत्र मंत्र के आधारमे एक महत्वपूर्ण अंग या विज्ञानं हैं यन्त्र विज्ञानं ..अभी भी इसका एक अंश मात्र भी सामने नही आया हैं . एक से एक अद्भुत गोपनीय और दाँतों तले अंगुली दवा लेने वाले रहस्यों से ओत प्रोत रहा हैं यह विज्ञानं.

हमारे द्वारा अनेक प्रयोग जो दिए जाते रहे हैं वह अनेको मनिशियों ,तंत्र आचार्यों और उच्च तांत्रिक ग्रंथो मे बहुत प्रशंषित रहे हैं और सैकडो ने उनके प्रयोग किये हैं और लाभ भी उठाया हैं , आवश्यकता बस इस बात की हैं की यदि समय हो तो क्यों न इन प्रयोगों की करके भी देखा जाये जो अनुभूत और सटीक रहे हैं .

इन सरलतम विधानों का अपना एक महत्त्व हैं.इस यन्त्र का निर्माण करें .

- किसी भी शुभ दिन प्रातः काल मे कर सकते हैं .
- यन्त्र निर्माण के लिए अनार या जो भी उचित लकड़ी प्राप्त हो उसका उपयोग कर सकते हैं .
- यन्त्र लेखन मे स्याही सिर्फ कुकुम और गोरोचन को मिलाकर बना ना हैं .
- वस्त्र पीले और आसन का रंग पीला हो तो कहीं जयादा उचित होगा .
- प्रयोग के शुरुआत मे संकल्प ले .
- यह ध्यान रखे की यन्त्र के बीच मे उस व्यक्ति का नाम लिखे जिसने आपको परेशां कर् रखा हो
- यन्त्र निर्माण मतलब उस व्यक्ति का नाम लिखने के बाद पुरे एक दिन इस यंत्र को एक मिटटी के वर्तन मे रखना हैं और धूप दीप और नैवेद्य अर्पित करना हैं .

- बाद मे मतलब दूसरे दिन इसके ऊपर (मिटटी के वर्तन) जिसमे यह यन्त्र निर्माण के बाद रखा हैं किसी अन्य मिटटी की प्लेट उसके ऊपर रख दे और अच्छी तरह से इस पात्र कोकिसी कपडे से बाँध कर .किसी दूर निर्जन स्थान पर रख दे .

ऐसा करने से वह व्यक्ति फिर आपके लिए कोई हानि का रक योजना नही बना पाता हैं .

इसके बाद सदगुरुदेव जी का पूजन और गुरू मंत्र का जप यथाशक्ति करे औरसफलता के लिए प्रार्थना करें ...

****NPRU****

Posted by Nikhil at 3:29 AM No comments:
Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, LAGHU PRAYOG, TANTRA SIDDHI, YANTRA RAHASYA

Monday, June 4, 2012

DURLABH PRAYOGON KE SARAL RAHASYA - 2



तंत्र के उन्ही अनुभवों में से कुछ और

****NPRU****

Posted by Nikhil at 11:28 PM 1 comment:
Labels: TANTRA SIDDHI, TANTRA VIDEO CLIPS

DURLABH PRAYOGON KE SARAL RAHASYA-1



ये प्रयास रहा है मेरा की मेरे अन्य भाई बहनों को भी तंत्र के वे सूत्र प्राप्त हो सकें,जो मुझे मिले हैं...मेरा दायित्व है की मैं अपने अनुभव को अपने आत्मीयों के साथ साझा करू ......उन्ही में से कुछ यहाँ पर मैं दे रहा हूँ ...

******NPRU******

Posted by Nikhil at 11:17 PM 1 comment:
Labels: TANTRA SIDDHI, TANTRA VIDEO CLIPS

Friday, June 1, 2012

TANTRA GYAN SHRINKHLA -2 (LING RAHASYA AUR MANAH SHAKTI JAAGRAN VIDHAAN-1) तंत्र ज्ञान श्रृंखला – २ (लिंग रहस्य और मन: शक्ति जागरण विधान-१)



In Last Article, we discussed about what are those seven levels of mind whose bhedan can be done and after that we can unify conscious and subconscious state of mind and attain the state of super-conscious mind (Maha Chetan).For this we definitely needs Shivling, we can plan regarding Shivling considering our faculty of reasoning and capacity, but this is essential. As I told you earlier, there are three types of Shivling-

1. Sthul Ling (Visible Ling)
2. Sookshma Ling (Subtle Ling)
3. Para Ling

This order of attainment of universal powers, when completed by Yogi, then in its root, complete combination of these three lings takes place. Remember that Mind is the master of infinite powers, but they are in dormant state and if we unify those two states of mind then definitely, attained Maha Chetan mind entrust the authority of its infinite powers to us. The padhati which I am telling you, it will automatically keep on introducing you to the experiences. Just you have to do it with full dedication and besides this, do the process as it has been told here. Above, I have given you information about three lings which are known as

Isht Ling
Praan Ling
Bhaav Ling (Para Brahamandeey Ling)

by the sadhak. These three lings are related to three important states of mind, upon unifying these three lings, three states of mind also get unified and all the seven levels also become one. Till now, we have only heard of two states of mind-

Conscious Mind (Outer Mind)

Sub-Conscious Mind (Inner Mind)

But there is one state also in middle of them which is known by sadhak by the name of Chetan-Avchetan Man (Conscious-Subconscious mind).In this state, activation of power takes place but there is shortage of consciousness due to which sadhak cannot attain full mastery and sometimes, deviating from the path, due to the ego of power, he degrades. Therefore, after attaining Maha Chetna state, understanding the infinite secrets will require the use of outer symbols. It has been said also “Chandrama Manso Jaatah” meaning moon is the indicator of mind. The speed of mind is infinite but it is full of instability (playful) and parad is also very instable and full of infinite powers. Therefore, when making use of full process, parad is combined in accordance with Kramik Vidhaan (sequential procedure) then instability of mind vanishes. But it does not mean that those who cannot attain parad Shivling can’t do this process.it is not like this. Their speed and progress may remain slow but activation and bhedan of chetna and Manah Shakti (mind-power) will definitely take place.

The three lings which I have mentioned above, their qualities are also similar with those three states-

Isht Ling – Sakal ling

Praan Ling –Sakal Nishkal Ling

Bhaav Ling (Para Brahamandeey Ling) –Nishkal or Para Ling

Now let's see their situation at those seven level, these three important levels will be First, Fourth and Seventh. If you see it carefully then situation of Aadi (start).Madhya (middle and ant (end) is formed whose complete union lead to completion of journey towards completeness. I have told you earlier also that these seven levels contain different abilities meaning as we cross one level and reach the other level, automatically we get acquainted with the knowledge hidden in first level or first layer. But acquiring knowledge and mastering it are altogether different things. Therefore, for mastering it, complete Kramik Vidhaan needs to be done.

1. Chetan –**Isht Ling**
2. Smriti
3. Avchetna
4. Sarjana – **Praan Ling**
5. Jeewanaat
6. GarbhSuvistrita (Antasyog)
7. Brahmand Chetna – **Bhaav Ling**

Meaning that as we complete the journey from first to the fourth level, union between the Isht Ling and Praan ling happens and as we reach the seventh level, these three lings become one. And then the three lines of great triangle present in our Muladhaar which represents Mind, Praan and soul get activated and thereby activates the triangle also. And the center of triangle i.e. bindu which symbolizes Shiva provides everything i.e. **"Bhogasch Mokshasch Karsth Ev Ch"|**
The journey of Aatm Ling (Bhaav Ling) is possible only when we have attained Maha Chetan mind. Then only we can see Great Triangle (Maha Trikon) and Aatm Ling.But before this, we have to make use of the symbol of outer consciousness Isht ling.
On any Monday, wake up in Brahma Muhurat and after taking bath, sit in siddhaasan facing towards North. One should wear yellow, red or white dhoti or saree. Aasan should be of blanket and on it aasan should be woolen or silky. Remember that color of aasan should be same as that

of your dress. After spreading the cloth of color mentioned above, on Baajot in front of you, establish Isht Ling in copper container. Now do the panchopchar poojan of your Guru and Ganpati using Dainik Vidhi. Then pronounce “Om” 11 times. Now sitting erectly and stably, pronounce “Hum” beej 5 minutes and you have to pronounce it with intensity. Mental chanting or chanting it in lower voice should not be done rather medium voice should be used. Besides this ,contract your anus gate with intensity but keep in mind that this contraction should be in sync with the sound of “Hum” otherwise our preliminary process will become errorenous.Vibration in naval starts takes place through this activity and also the union of Praan Vayu and Apaan Vayu.

After this, uses Yoni Mudra i.e. close both your ears with thumbs of your hands, both your eyes with both forefingers, both your nostrils with middle fingers and both your upper and lower lips through the union of both ring fingers and little fingers. Before this, using Kaaki Mudra, pull breath inside using mouth and then only close your mouth. Now concentrate on your Trikoot (third eyes) where vermillion mark (on fore head) is applied by ladies. After some time, you are able to see light .Now remove your fingers and again do the “Hum” beej process for 5 minutes. Then again do the Yoni Mudra process meaning that you have to repeat this whole process 2 times.

Now establish Shivling in your left hand because Isht ling is established or can be established on physical body and while touching it with middle and ring finger of right hand, do the Upaanshu jap (chanting mantra in such a way that it is audible only to us) the mantra given below for 30 minutes.

“ओम ह्लीं श्रीं मेधा प्रज्ञा प्रभा विद्या धी धृति स्मृति बुद्धि सहिताय विद्येश्वरी श्रीं ह्लीं ओम”

“Om Hreem Shreem Medha Pragya Prabha Vidya Dhee Dhriti Smriti Buddhi Sahitaay Vidhyeshwari Shreem Hreem Om”

As you go more deep into your chanting, you will automatically start experiencing divinity and heat. Mind will become extremely peaceful .This process has to be done for 7 days. In seven day you will start experiencing yourself something which in your view, you have not experienced earlier. Now you are able to experience the hidden truth easily and….
To Be Continued
“Nikhil Pranam”

===

पिछले लेख में हमने यही चर्चा की थी की मन के वो सात स्तर कौन से हैं,जिनका भेदन कर हम मन की चेतन और अचेतन अवस्था का आपस में योग कराकर महाचेतन मन की प्राप्ति कर सकते हैं| इसके लिए शिवलिंग की अनिवार्यता होती ही है,हम अपने अपने विवेक और सामर्थ्यानुसार शिवलिंग की योजना बना सकते हैं,किन्तु है ये अनिवार्य,क्यूंकि जैसा की मैंने बताया ही था की शिवलिंग के तीन प्रकार होते हैं –

१. स्थूल लिंग
२. सूक्ष्म लिंग
३. परा लिंग

ब्रह्मांडीय शक्तियों की प्राप्ति का ये क्रम जब एक योगी पूर्ण करता है तो उसके मूल में इन्ही त्रिविध लिंगों का पूर्ण संयोग होता है | याद रखिये मन अनंत शक्तियों का स्वामी है,किन्तु वे सुप्तावस्था में हैं और यदि हम मन की उन दोनों अवस्थाओं का आपस में योग करवा दें तो निश्चय ही प्राप्त महाचेतन मन अपनी अनंत शक्तियों का स्वामित्व आपको सौंप देता है | जो पद्धति मैं आपको बता रही हूँ,ये अनुभूतियों से स्वतः ही आपका साक्षात्कार कराते जायेगी,बस पूर्ण निष्ठां के साथ आप इसे संपन्न करे और साथ ही जैसा क्रम बताया गया है उसे वैसे का वैसा ही संपन्न करें |

ऊपर मैंने आपको तीन लिंगों की जानकारी दी है जिन्हें साधक –

इष्टलिंग
प्राणलिंग
भावलिंग (परा ब्रह्मांडीय लिंग)

के नाम से जानते हैं, ये तीनों लिंग मन की तीन महत्वपूर्ण अवस्थाओं से सम्बंधित हैं,जिनका आपस में योग होते ही मन की तीनों अवस्थाओं का आपस में योग हो जाता है और सातों स्तर आपस में एकाकार हो जाते हैं | वैसे हम ने अभी तक सिर्फ मन की दो ही अवस्थाएं सुनी हैं –

चेतन मन (बाह्य मन)

अवचेतन मन (अंतर मन)

किन्तु इनके मध्य की एक और अवस्था भी है जिसे साधक चेतनअवचेतन मन के नाम से जानते हैं | इस अवस्था मेर शक्तियों का जागरण तो हो जाता है किन्तु उनमे चैतन्यता का अभाव रहता है,जिसके फलस्वरूप साधक पूर्ण स्वामित्व नहीं प्राप्त कर पाता है और कभी कभी मार्ग से भ्रष्ट होकर शक्ति के मद में पतित भी हो जाता है | अतः महाचेतनावस्था की प्राप्ति कर अनंत रहस्यों को समझने के लिए बाह्य प्रतीक की आवश्यकता पड़ेगी ही | कहा भी गया है की "चंद्रमा मनसो जात:" अर्थात चंद्रमा मन का प्रतीक है | और मन की गति अथाह किन्तु चंचलता से भरी हुयी है और पारद भी पूर्ण चंचलता और अथाह शक्तियों से युक्त है,अतः जब क्रमिक विधान अनुसार पारद का पूर्ण विधि के साथ न्बंधन कर दिया जाये तो मन की चंचलता भी समाप्त हो जाती है | किन्तु इसका ये अर्थ भी नहीं है की जो पारद लिंग की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं वो ये विधान संपन्न ही नहीं कर सकते,ऐसा नहीं है,हाँ उनकी गति और प्रगति थोड़ी मंद रहेगी किन्तु चेतना और मन: शक्ति का जागरण और भेदन अवश्य होगा |

ऊपर मैंने जिन तीन लिंगों का वर्णन किया है, उनके गुण भी मन की उन्ही तीन मुख्यावस्था से साम्य रखती है –

इष्टलिंग – सकल लिंग

प्राणलिंग – सकल निष्कल लिंग

भावलिंग (परा ब्रह्मांडीय लिंग) – निष्कल अथवा परा लिंग

अब जरा हम इनकी स्थिति मन के उन ७ स्तर पर भी देख लेते हैं, ये तीन महत्वपूर्ण स्तर होंगे पहला,चौथा और सातवाँ | यदि आप ध्यान से देखेंगे तो आदि,मध्य और अंत की ही स्थिति तो बन रही है ना जिनके पूर्ण योग से पूर्णत्व तक की यात्रा पूरी होती है |मैंने पहले भी यही कहा है की ये सातों स्तर विभिन्न क्षमताओं से युक्त हैं अर्थात जैसे ही हम एक स्तर को लांघ कर दुसरे तक जाते हैं स्वतः ही हमें पहले स्तर या पहली परत में बंद रहस्य का ज्ञान हो जाता है | किन्तु ज्ञान होना और स्वामित्व पाना ये दो अलग अलग बातें हैं, अतः स्वामित्व के लिए तो पूर्ण क्रमिक विधान को संपन्न करना ही होगा |

१. चेतन – **इष्टलिंग**
२. स्मृति
३. अवचेतना
४. सर्जना – **प्राणलिंग**
५. जीवनात
६. गर्भसुविस्तृता (अन्तश्योग)
७. ब्रह्माण्ड चेतना – **भावलिंग**

अर्थात जैसे ही हम पहले से चौथे क्रम तक की यात्रा पूरी करते हैं वैसे ही इष्टलिंग और प्राणलिंग का योग हो जाता है, और जैसे ही हम सातवें स्तर तक पहुचते हैं वैसे ही ये तीनों लिंग एकरूप हो जाते हैं | और तब हमारे मूलाधार में स्थित महा त्रिकोण की तीनों रेखाएं जो मन,प्राण और आत्मा की प्रतीक हैं,पूर्ण चैतन्य होकर उस त्रिभुज को भी चैतन्य कर देती है और त्रिभुज का केंद्र अर्थात बिंदु जो की एकीकृत शिव का प्रतीक है आपको सर्वस्व प्रदान कर देता है, अर्थात "**भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव च" |**

आत्मलिंग(भावलिंग) तक की यात्रा तभी संभव हो पाती है जब हमने महाचेतन मन की प्राप्ति कर ली हो,तभी हमें उस महा त्रिकोण और उस आत्मलिंग के दर्शन हो पाते हैं | लेकिन उसके पूर्व हमें बाह्य चेतना के प्रतीक इष्टलिंग का प्रयोग करना ही पड़ेगा |

किसी भी सोमवार को ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत होकर पीली,लाल या सफ़ेद धोती या साडी पहनकर उत्तर दिशा की और मुख कर सिद्धासन में बैठ जाना है | आसन कम्बल का हो और उस पर कोई भी रेशमी या ऊनी आसन हो,याद रखिये स्वयं के वस्त्रों के रंग का ही आसन प्रयोग किया जाना है | सामने बाजोट पर उपरोक्त अनुसार ही वस्त्र बिछाकर एक ताम्र पात्र में इष्टलिंग की स्थापना कर दे | अब दैनिक विधि से स्वगुरु व गणपति का पंचोपचार पूजन करे,तत्पश्चात **"ओम"** का ११ बार उच्चारण करे | अब स्थिर और सीधे बैठकर **"हुं"** बीज का ५ मिनट तक उच्चारण करे तथा साथ ही,यहाँ उच्चारण तीव्रता के साथ करना है मन ही मन या हलके स्वर में नहीं बोलना है अपितु मध्यम स्वर का प्रयोग करना है,साथ ही गुदा द्वार को तीव्रता से सिकोड़ते रहे,किन्तु याद रखिये ये संकुचन "हुं" की ध्वनि के साथ ही होना चाहिये,अन्यथा प्रारंभिक क्रिया ही गलत हो जायेगी | इस क्रिया से नाभि में स्पंदन प्रारंभ हो जाता है और प्राण वायु का अपान वायु से योग भी |

तत्पश्चात **योनिमुद्रा** का प्रयोग करे अर्थात हाथ के दोनों अंगूठे से दोनों कान,दोनों तर्जनी से दोनों आँखें,दोनों मध्यमा अंगुली से नाक के दूनो छिद्र और दोनों अनामिका और दोनों कनिष्ठका के योग से ऊपर और नीचे के होंठो को बंद कर दे | इसके पहले काकी मुद्रा का प्रयोग कर मुख के द्वारा श्वांस खीच ले,तब जाकर मुख बंद करें | अब अपना ध्यान अपने त्रिकूट अर्थात जहाँ बिंदी लगायी जाती है वहाँ पर केंद्रित करें | थोड़े ही समय बाद हल्का सा प्रकाश दिखना प्रारंभ हो जाता है | अब ऊँगली हटाकर फिर से **"हुं"** बीज वाली क्रिया ५ मिनट करे,फिर से योनिमुद्रा वाला क्रम करे,मतलब २ बार ये क्रम दोहराना है |

इसके बाद बाएं हाथ में शिवलिंग स्थापित करे क्यूंकि इष्टलिंग को स्थूल देह पर धारण किया जाता है या किया जा सकता है,और दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका ऊँगली का स्पर्श करा कर –

"ओम ह्रीं श्रीं मेधा प्रज्ञा प्रभा विद्या धी धृति स्मृति बुद्धि सहिताय विद्येश्वरी श्रीं ह्रीं ओम"

मंत्र का ३० मिनट तक उपांशु जप करे,जैसे जैसे आपके जप में तल्लीनता आएगी वैसे वैसे आपको स्वतः ही उसकी दिव्यता और उष्णता का अनुभव होता जाएगा,मन अथाह शांति में डूबता जायेगा,ये क्रम ७ दिनों तक करना है | सात दिनों में ही आप स्वयं ही ये अनुभव करलेंगे की कच्छ ऐसा अप अनुभव करे लगे हैं अपने दृष्टिकोण में जो पहले अनुभव नहीं किया है अब आपकी दृष्टि छुपे हए सत्य को आसानी से अनुभव कर रही हैं और...........

क्रमशः

"निखिल प्रणाम"

****RAJNI NIKHIL****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 2:36 AM 1 comment:

Labels: TANTRA DARSHAN, TANTRA SIDDHI

Tuesday, May 22, 2012

Shakti rahashyam (secret of power) – शक्ति रहस्यम



साधना जगत की अद्भुत शक्तियों की खोज में ना जाने किन किन साधकों से मेरी मुलाकात हुयी....पर ये भी एक सबसे बड़ा सत्य रहा है की,जिस दिन से सदगुरुदेव ने मेरा हाथ अपने हाथों में पकड़ा था.... बस प्रति क्षण अभय और निश्चिन्तता ही अनुभव होती थी..... हर पर अनोखा सुकून मानों आत्मा को महसूस होता रहता था. जिस भी जिज्ञासा की मन के जल में उत्पत्ति होती...उसी क्षण जैसे वो हौले से उसे शांत कर के ये अहसास दे देते कि "अरे तू तो मेरा ही है,इतना व्यथित क्यूँ होता है.... याद रख जब भी तेरे मन को कोई प्रश्न अपनी चुभन से व्यथित करेगी....तब तब मैं उसका समाधान उसी मन से निचोड़ कर निकाल कर तुझे दे दूँगा....उसी मन से जहाँ मैं चिरकाल से सदा सदा के लिए अपने प्रत्येक शिष्य के ह्रदय में विराजमान हूँ.और ऐसा आजन्म होगा और प्रत्येक शिष्य के लिए होगा...यह निखिल वाणी है"

बस तबसे कोई चिंता ही नहीं रही मन में .

जब भी मेरे मन के सरोवर में कही से जिज्ञासा का पत्थर गिरता और उसमे लहरे उत्पन्न होती या मन कि शांति भंग होती...तब तब सदगुरुदेव अपनी अमृतवाणी से या तो स्वयं या फिर उनका कोई ज्ञानांश सन्यासी या गृहस्थ शिष्य आगे बढ़ कर उन तरंगित लहरों को अपने उत्तरों से शांत कर देता .और एक बात मैं आपको जरुर बता देना चाहता हूँ कि जब भी किसी ज्ञान कि चाह में मैं कही गया तो उस साधक का व्यव्हार मेरे लिए पूर्ण अनुकूल रहा है और उसने ये अवश्य कर स्वीकार कि उसे पहले ही बता दिया गया था कि यहाँ तुम्हारा आना सदगुरुदेव ने पूर्वनियोजित किया हुआ था .और ऐसा प्रत्येक शिष्य के लिए उन्होंने निर्धारित किया हुआ है...किसे कब देना है ,क्या देना है....ये पहले से उन्होंने तय कर दिया है .

यात्रा के उसी काल में मेरी मुलाकात सदगुरुदेव के **पूर्ण शाक्त शिष्य कौल मणि** **शिवयोगत्रयांनद** से मुलाकात हुयी . सदगुरुदेव कि आज्ञा से उन्होंने विंध्यवासिनी के परम पावन पीठ को अपनी साधनाओं के लिए चुना था . वो उसी पर्वत कि एक अत्यधिक गुप्त गुफा में

आज भी साधनारत हैं . और उसी गुफा में मेरी उनसे मुलाकात हुयी और दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ .

थोड़े ही समय बाद मैंने मानो प्रश्नों कि बौछार कर दी थी उन पर ,और वो उतने ही शांत भाव से मंद स्मित होकर मुझे उत्तर देते रहे और रहस्यों कि नवीन परतों को उधेड़ते रहे .(उन्होंने सैकडो प्रश्नों के उत्तर दिए थे,परन्तु इस विशेषांक में विषय वस्तु पर आधारित जो प्रश्न हैं ,मैं मात्र उनमे से कुछ को ही यहाँ दे रहा हूँ...जिससे विषय को समझना अपेक्षाकृत आसान रहेगा)

शक्ति क्या है,इसके कितने रूप होते हैं ???

सरल शब्दों में यही कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण ब्रम्हांड मात्र जिसकी कल्पना से साकार हो गया हो और जिसके प्रभाव से प्रकृति सृजन, पालन और संहार कर्म में जुटी हुयी हो ,उसी चिन्मयी परात्पर ज्योति को शक्ति कहा जाता है . ये किसी भी रूप में हो सकती है. इसका प्रभाव सभी पर होता है फिर चाहे वो चेतन हो या अचेतन.प्रकट रूप में हम जिन्हें शक्ति देने का उर्जा देने का या फिर बल देने का स्रोत मानते हो,वे सभी भी इसी परा शक्ति से ही शक्ति प्राप्त करते हैं .ये परा शक्ति स्थूल, सूक्ष्म या किसी भी रूप में हो सकती है .

ये सभी प्राणियों में विद्यमान है , इसी के कारण हम सृजन तथा अन्य कर्म सम्पादित कर पाते हैं. और विचारों की उत्पत्ति का मूल भी यही शक्ति है .

इसके कितने प्रकार होते हैं ?

भावगत्ता के आधार पर गुणों की तीन ही स्थितियां होती हैं-

सत्

रज

तम

ठीक इन्ही गुणों के आधार पर तीन क्रियाएँ सृजन ,पोषण और विध्वंश होती है . और इन क्रियाओं को शक्ति के तीन आधारभूत शक्तिमान(जिनके द्वारा शक्ति अपने कार्यों को सम्पादित करती हैं) संपन्न करते हैं . याद रखने योग्य तथ्य ये है की जिस प्रकार गुणों के तीन प्रकार होते हैं, ठीक उसी प्रकार इन गुणों की अधिष्ठात्री तीन मूल अधिष्ठात्री शक्तियां होती हैं.

महाकाली – तम

महालक्ष्मी – रज

महासरस्वती – सत्

ऊपर जब बात मैंने शक्तिमानों की कही तो उसका अर्थ यही होता है की शक्ति तथा शक्तिमानों में कोई भेद नहीं होता है , ये एक दुसरे से प्रथक नहीं किये जा सकते है, शक्तिमान इन्ही शक्तियों की प्रेरणा से अपने अपने कार्यों का सञ्चालन करते हैं. जैसे महाकाल शिव संहार का, विष्णु पालन का और ब्रम्हा सृष्टि के सृजन का. एक प्रकार से ये समझ लो की सृष्टि का कोई भी कार्य या कण निरर्थक नहीं है. प्रत्येक क्रिया या व्याप्त प्रत्येक कण पूर्ण शक्ति युक्त होता है.

शक्ति की व्याख्या के क्रम में ये भी समझना अत्यधिक उपयोगी होगा की मानव अपना विकास कर देव स्तर तक पहुच सकता है और अपने अभीष्ट को प्राप्त करता हुआ अपने अस्तित्व

को सार्थक कर सकता है. और ये स्थितियां तभी साध्य हो पाती है जब आप परिष्कृत रूप से निम्न सात शक्तियों को सदा सर्वदा के लिए पूर्ण संकल्पित होकर अपना व्यक्तित्व बना लेते हो. और यदि पूर्णता के साथ निम्न सात शक्तियां आपको परिष्कृत अवस्था में प्राप्त हो गयी तो कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता है .

प्रज्ञा शक्ति
चेतना शक्ति
वाक् शक्ति
क्रिया शक्ति
विचार शक्ति
इच्छा शक्ति
संकल्प शक्ति

ये उपरोक्त तीनों मूल शक्तियों के ही परिवर्तित रूप है.

क्या इनके अतिरिक्त कोई और शक्ति नहीं है जिसकी अनिवार्यता मानव जीवन में प्रकृति द्वारा नियोजित की गयी हो ????

है क्यों नहीं.... काम शक्ति की अनिवार्यता सर्वोपरि है . जीवन में परिपूर्णता काम भाव से ही आती है. सृजन के मूल में यही भाव विद्यमान है तभी तो वेद भी काम को देवता कहते हैं . काम का मूल गुण आकर्षण है ... जो विद्वान होते हैं वे काम को इच्छा शक्ति का ही पर्याय मानते हैं . तंत्र तो यहाँ तक कहता है की सृष्टि में जितने भी प्रकार की ऐषणायें हैं,उनके मूल में यही काम शक्ति ही है. इस लिए ये सम्पूर्ण विश्व उसी परमशक्ति की इच्छा या काम भाव का ही विस्तार कहलाती है.

जीवन के सारे चैत ,सामाजिक और वैषयिक नियमों के मूल में काम भाव ही होता है.

परमात्मा से लेकर आत्मा तक के जितने भी सम्बन्ध होते हैं वे सब आकर्षण,काम और मैथुन(योग) से ही युक्त होते हैं. किसी भी प्रकार की परिस्थिति में किसी भी प्रकार के सम्भोग में फिर वो चाहे आत्मिक हो या बाह्यगत, वो आदिशक्ति ही काम शक्ति के रूप में परिणत होती है कार्य करती है.

भला ये कैसे माना जाये की सभी कार्यों के पीछे यही कामशक्ति कार्य करती है ... सृजन तो समझ में आता है की इसी काम भाव से उत्प्रेरित है,परन्तु भला संहार से इस काम भाव का क्या लेना देना ???

इसे ऐसा समझा जा सकता है की यदि आप किसी के आकर्षण में बांध जाते हैं और आगे जाकर प्रेम करने लगते हैं तब भी तो आप एक समय बाद उसकी अपने से प्रथकता सहन नहीं कर पाते हैं तब आप क्या करते हैं... उसे आत्म एकाकार करने की कोशिश करते हैं . ऐसे में या तो आप उसमे विलीन होने की चेष्ठा करते हैं या उसे अपने में मिलाने की. भूख समाप्त करने की आपकी लालसा या इच्छा भोजन के प्रति आपको आकर्षित करती है... अब ऐसे में उस भोजन का जो थोड़ी देर पहले तक अपना अलग अस्तित्व था... आपके भोजन के प्रति आकर्षण के कारण,उस

भोजन की सत्ता का ही अंत कर देता है. ये नियम प्रत्येक प्राणी पर समानान्तर रूप से कार्य करता है. परमात्मा से ही अंश प्राप्त कर आत्मा मनुष्य शरीर धारण करती है इस क्रम में मनुष्य जन्म लेता है, जीवन के सुखों का उपभोग करता है और आखिर में एक समय बाद मृत्यु उसका वरण कर उस आत्मा को पुनः परमात्मा की तरफ गतिशील कर देती है तो क्या इसके मूल में परमात्मा की काम शक्ति कार्य नहीं करती है जो की वो अपने अंश का विलीनीकरण अपने में कर के संपन्न करता है. क्या यहाँ पर सृजन हुआ ..... नहीं ना..... लेकिन लौकिक दृष्टि से ये संहार भी सृजन की तरफ एक कदम ही तो है. आप किसी से जब प्रेम करने लगते हैं तो तीव्र आकर्षण के कारण उससे सम्भोग करने की तीव्र लालसा को आप क्या कहेंगे ..... क्या वो मात्र इन्द्रिय लोलुपता है ,नहीं... उसके मूल में भी आपकी अपने प्रेम या अभीष्ट से प्रथक ना रह पाने की चरम लालसा ही तो है जो की उसके अस्तित्व का योग अपने अस्तित्व से करवाने के लिए उत्पन्न होती है. तब वह दो हो ही नहीं सकते ..... रह जाते हैं तो मात्र एक ही. ये अलग बात है की एक साधक ,एक शिष्य ,एक योगी इस भेद को आत्म एकाकार क्रम अपना कर दूर करता है और सामान्य अवस्था में सामान्य मनुष्य शरीर का योग कराकर. परन्तु तंत्र शरीर से ऊपर उठ कर आत्म योग की बात करता है इसी काम शक्ति का सहयोग लेकर. इस प्रकार ये काम शक्ति उसी आदिशक्ति का ही तो रूप होती है जिसके वशीभूत होकर वो तम,रज और सत् गुणों का पालन भिन्न भिन्न रूप में करती है.

तांत्रिक दृष्टि से तम,रज और सत् गुणों की अधिष्ठात्री शक्ति महाकाली,महालक्ष्मी और महा सरस्वती को ही क्यूँ माना जाता है,क्या ऐसा नहीं हो सकता है की महालक्ष्मी रज के बजाय तम गुणों का प्रतिनिधित्व करे ???

नहीं ऐसा नहीं हो सकता है... सृष्टि के आरंभ में जब सृजन भी नहीं होता है,पालन भी नहीं होता है.तब ऐसे में मात्र पूर्ण अन्धकार ही होता है ...जब मात्र महानिद्रा की उपस्थिति ही अपने पूर्ण साकार या निराकार रूप में होती है.और ये तम तत्व ही महाकाल है...जिसके अधीनस्थ काल भी सदा भयभीत रहता है . एक बात उल्लेखनीय है की शरीर का विसर्जन काल के द्वारा सम्पादित होता है और आत्मा पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, आत्मा सदैव काल से परे रहकर मात्र महाकाल द्वारा ही तिरोहित होती है. उसी महाकाल की शक्ति है महाकाली, जो संहार भाव की प्रणेता है . ये शक्ति प्रलयनिशा के मध्य काल से सम्बन्ध रखती है ,इसी की उपस्थिति से ये संसार शिववत बनकर साकार है , जैसे ही इनका लोप होता है ,शिव को शव बनने में एक क्षण नहीं लगता है,चूँकि ये प्रलयनिशा अर्थात रात्रि से सम्बंधित हैं और है इनका सम्बन्ध मध्य काल से तब ऐसे में ये जहा तम को दर्शाती हैं वही ये संक्रांत रूप में अपने अंदर रज अर्थात पालन-पोषण और सत् अर्थात सृजन के गुणों को भी रखती हैं. परन्तु महालक्ष्मी तम भाव से प्रेरित नहीं है और न ही महा सरस्वती ही रज से सम्बंधित हैं. इसलिए संहार का गुण तो कदापि इनमे नहीं हो सकता है. हाँ ये अलग बात है की महाविद्या रूप में ये जब अपना योग तम से कर लेती हैं तो ये संहार भी कर सकती हैं.

आपने महाविद्याओं की बात कही है ,तो क्या सारी महाविद्याएं इन्ही तीन मूल शक्तियों का रूप होती हैं,क्या पंचमहाभूत तत्वों से इनका कोई लेना देना नहीं होता है ????

नहीं ऐसा नहीं है ,जब हम आदि शक्ति की बात करते हैं तो उसका अर्थ बहुत विराट होता है,आदि शक्ति से मेरा मतलब **राजराजेश्वरी षोडशी त्रिपुर सुंदरी**से है, उन्ही के तीन गुणों की अधिष्ठात्री वे तीनों महा शक्ति हैं. वैसे श्रीकुल की मूल महा विद्या षोडशी त्रिपुर सुन्दरी को माना जाता है. परन्तु उनका मंत्र और यन्त्र महाविद्या रूप में भिन्न ही होता है ,और जब वे आदि पराशक्ति राज राजेश्वरी होती हैं तो उनका मूल **यन्त्र श्री चक्र या श्री यंत्र** ही होता है जो की इस ब्रम्हांडीय रूप का ज्यामितीय रूप प्रदर्शित करता है,ऐसा रूप जो अकल्पनीय शक्तियों को प्रदर्शित करता हो.

रही बात पंचमहाभूतों की तो प्रत्येक तत्व २ महाविद्याओं का प्रतिनिधि है ,और इस प्रकार ५x २=१० होते हैं, इसमें भी ध्यान रखने वाली बात ये है की प्रत्येक तत्व के दो गुण होते हैं .

उष्ण

शीत

इसी प्रकार प्रत्येक तत्व की दो महाविद्याओं में से एक महाविद्या उग्र भाव से युक्त होती हैं और दूसरी शांत प्रकृति से युक्त होंगी. जिस प्रकार उस पराशक्ति की शक्ति से ही सूर्य और चन्द्र दोनों प्रकाशित होते हैं, और सूर्य जहा उष्णता देता है वहीं चंद्रमा शीतलता देता है.लेकिन कितने आश्चर्य की बात है की **सूर्य की उष्णता जहाँ मानव में ताप,तेज और तीव्रता लाती है, आत्मकेंद्रित होने के लिए हमें प्रेरित करती है,वही, चंद्रमा की शीतलता और प्रकाश हमारे मन को आह्लादित और काम भाव की तीव्रता से युक्त** कर देती है.

जीवन के प्रत्येक कर्म की अधिष्ठात्री कोई ना कोई विशेष शक्ति होती है.तंत्र में जितनी भी क्रियाएँ होती हैं वे सभी किसी खास शक्ति के अंतर्गत ही आती हैं,यही कारण है की बहुधा लोगो को जब इन कर्मों की अधिष्ठात्री शक्ति का ही ज्ञान नहीं होता है तो भला उनके द्वारा किये गए तांत्रिक कर्म कैसे सफल हो सकते हैं . अज्ञानतावश किया गया कैसा भी सरल से सरल प्रयोग इसी कारण सफल नहीं हो पाता है . इसलिए यदि क्रिया से सम्बंधित शक्ति का ज्ञान हो जाये तो ज्यादा उचित होता है.... जैसे –

वशीकरण – वाणी

स्तम्भन – रमा

विद्वेषण – ज्येष्ठा

उच्चाटन – दुर्गा

मारण – चंडी या काली

के अंतर्गत आते हैं . इसी प्रकार तंत्र और उससे जुडी प्रत्येक क्रिया का यदि विधिवत प्रयोग किया जाये तो क्रिया से सम्बन्धी शक्ति पूर्ण सिद्धि देती ही है.

भला वो कैसे संभव है ?? क्यूंकि महाविद्या इत्यादि क्रम तो अत्यंत जटिल कहे गए हैं कोई बिरला ही इसमें सफलता पा सकता है, ठीक इसी प्रकार मैंने ये भी सुना है की दुर्गा सप्तशती एक तांत्रिक ग्रन्थ है , और मैंने ये भी सुना है की यदि सही तरीके से इसका पथ या प्रयोग किया जाये तो शक्ति के प्रत्यक्ष दर्शन संभव होते ही हैं, और वह कौन सी मूल क्रिया है जो सरल और सहज भाव से जीवन के चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति करवाती ही है ??

देखो ये तो सही है की महाविद्या को पूर्णता के साथ सिद्ध कर लेना एक अलग बात है परन्तु , बहुत बार साधक अपने जीवन की सामान्य से परेशानियों या कार्यों के लिए सीधे ही इन महाविद्याओं का प्रयोग करने लगता है , जो की उचित नहीं कहा जा सकता है ,क्यूंकि ऐसी स्थिति के लिए तो आप जिस महाविद्या का मन्त्र जप करते हैं हैं या जिसे वर्षों से कर रहे हैं , यदि मात्र उनके मन्त्र का विखंडन रहस्य समझ कर मन्त्र के उस भाग का ही प्रयोग किया जाये तब भी आप को समबन्धित समस्या का निश्चित समाधान मिलेगा ही. जैसे मान लीजिए कोई साधक भगवती तारा की उपासना कर रहा है और उसके परिवार के किसी सदस्य को स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिल बीमारी हो गयी हो .... तब इसके लिए मूल मंत्र की दीर्घ साधना के बजाय उस मन्त्र या स्तुति के एक विशेष भाग का प्रयोग भी अनुकूलता दिला देता है .... **'तारां तार-परां देवीं तारकेश्वर-पूजितां, तारिणीं भव पाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम् . स्त्रीं ह्रीं हूं फट्'** - मन्त्र से जल को अभिमंत्रित कर उससे नित्य रोगी का अभिषेक करे, तो उसके रोगों की समाप्ति होती है.

'स्त्रीं त्रीं ह्रीं' मन्त्र से १००८ बार अभिमंत्रित कर अक्षत फेकने से रूठी हुयी प्रेमिका या पत्नी वापिस आती है .

'हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हंसः' मन्त्र से अभिमंत्रित काजल का तिलक लगाने से कार्यालय,व्यवसाय और अन्य लोगो को साधक मोहित करता ही है.

वस्तुतः मूल साधना से सिद्धि पाने में बहुत सी बातों का ध्यान रखना पड़ता है . जिनके सहयोग से ही उस महाविद्या साधना में सिद्धि मिलती है. यथा**शरीर स्थापन** इत्यादि. और एक निश्चित जीवन चर्या को भी अपनाना पड़ता है .तभी सफलता प्राप्ति होती है ,अन्यथा ये साधनाए तो साधक का तेल निचोड़ देती हैं ,इतनी विपरीतता बन जाती है साधक के जीवन में की वो इन साधनाओं को सिद्ध करने का संकल्प ही मध्य में छोड़ देता है .

रही बात दुर्गा सप्तशती की तो हाँ ,निश्चय ही ये सांगोपांग तंत्र का बेजोड ग्रन्थ है और इसके माध्यम से देवी के समन्वित और भिन्न भिन्न तीनों रूप के दर्शन किये जा सकते हैं,बस उनके लिए निश्चित विधि का प्रयोग करना पड़ता है . यदि इसके लिए **भगवती राज राजेश्वरी** की साधना कर ली जाये तो **सोने पर सुहागे** वाली बात हो जाती है . एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिए की मन्त्र ,उस मन्त्र की इष्ट शक्ति और साधक ये तीनों साधना काल में एकात्म ही होते हैं ,यदि साधक इसमें अंतर लाता है तो उसे सफलता नहीं मिल सकती है . प्रत्येक साधना में **सद्गुरु की प्रसन्नता आपको सफलता दिलाती है , इसलिए हमें सदा सर्वदा ऐसे कृत्य ही करना चाहिए , जिससे उन्हें प्रसन्नता का अनुभव हो. जब एक सामान्य व्यक्ति भी प्रसन्न होकर**

हमरे कार्यों को सरल कर देता है तब ऐसे में ब्रम्हांडीय विराटता लिए हुए सदगुरुदेव के प्रसन्नता हमें क्या कुछ प्रदान नहीं कर सकती है.

शक्ति प्राप्ति की मूल साधनाएं कौन कौन सी हैं ,जिन्हें संपन्न कर साधक सक्षमता को प्राप्त कर अभीष्ट को पा लेता है ???

शक्ति की किसी भी रूप में साधना की जा सकती है, फिर वो चाहे पुरुष रूप में हो या स्त्री रूप में ,उससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्यूंकि लिंग बदल जाने से शक्ति का मूल स्रोत नहीं बदल जाता है.इसलिए मन में ये भाव कभी नहीं रखना चाहिए की ये पुरुष देव की साधना है तो इससे शक्ति की प्राप्ति नहीं होगी या ये स्त्री देवता की साधना है तो इससे ज्यादा शक्ति की प्राप्ति होगी. चाहे वो पुरुष देवता हो या स्त्री देवता, ऐसा नहीं है बहुत कम लोग होंगे जिन्हें ये पता होगा की**शुक्र अर्थात काम शक्ति की बिंदु साधना की मूल शक्ति काल भैरव होते हैं,जिनके तांत्रिक क्रम को अपनाकर कोई भी अद्भुत यौवन को प्राप्त कर सकता है और पा सकता है पूर्ण स्त्रीत्व या पूर्ण पौरूषत्व** . और काल भैरव की शक्ति की प्राप्ति का उनका मूल स्रोत वो आदि शक्ति ही तो होगी,जिसे निखिल शक्ति या राज राजेश्वरी कहा जाता है. सैकडो साधनाओं में से कुछ सरल मगर तीक्ष्ण प्रभाव से युक्त साधनाएं निम्न अनुसार हैं ,जो की साधक के जीवन को अपनी जगमगाहट से भर देती हैं और उसकी अपूर्णता को पूर्णता में परिवर्तित कर देती हैं.

==

In the search of amaizing powers of sadhana world, I met with so many sadhaka...but this is the biggest fact that the day when sadgurudev hold my hand in his hand... at the very same moment I started feeling no worries and state of Insouciance at every moment... every moment it was a peace which my soul was feeling. Any doubt arise in the mind...at the very next moment he used to vanish it by this way " you are mine, why are you so much of Distressed...remember, whenever any of the question will trouble you, at that time I will give you by extracting your same mind, from the mind which is the source of my place in the heart of the disciples for and from infinite time duration, this will continue for whole life and will happen for every disciple this are my words."
From that moment there has been no place of worry in the mind.
Whenever any curiosity comes to the mind and when it affects on the peace of mind... at those very specific moments sadgurudev himself or any of his loving sanyashi or gruhasth disciple came forward and established the peace of mind by their valuable answers. Here I would like to mention specifically that whenever I went to anywhere with a will to have knowledge at that time the behavior of those specific sadhaka have remained completely positive for me and they had always accepted that they already had information about my arrival and the meeting has been designed already by the sadgurudev. And he have designed this for his every disciple...who and where to give and what to give, he had decided already from long.

In that time period of my travel I met Sadgurudev's purn Shakt disciple Kaul Mani Shivayogatrayanand. With order of sadgurudev he selected very sacred vindhyavasini peetha for his sadhana. He is still in his sadhana in a secret cave of the same mountain. And I met him in the same cave and got blessing of his glimpse.
In very short span of time I started shooting my questions, and he too kept on answering my all questions with peace and smiles on the face & kept on revealing secrets. (He answered hundreds of questions, but in this special issue I am giving few of them which are related to the subject which can make subject easy to understand.)

What is the shakti (power), how many form does it have?
In simple words whose imagination have caused complete universe and with whose effect nature keeps on works in creating, rearing and vanishing that only infinite light is called as Shakti. It could be in any form. It leaves effect on all rather living or non living. In tangibles, those who are classified as power supplier, energy supplier or force supplier those all receives power from this supreme power. This supreme power could be in tangible, non tangible or in any other form.

It stays inside all beings, with only which we can accomplish task of creation and others. And base for the thoughts to be created is the same power.

How many types are there?

On the base of nature, it has three conditions-

Sat

Raj

Tam
Holding the base of particular nature there is existence of three main processes of creation, rear and vanishes. And this processes are done by three base of shaktis, Shaktimaan (by whose medium shakti does the processes) . it is the point to be remembered that the way there are three main type of nature, the same way there is three main controlling power goddesses for those nature.

Mahakaali – tam

Mahalakshmi – raj

Mahasawashwati – sat

What I said above about the shaktimaana that does mean that there is no difference between shakti and Shaktimaana, they are inseparables, shaktimaan accomplish their tasks with inspiration of these shaki only. Like mahakaal in vanishing, Vishnu in rearing and creation of bramha. This way, understand this that any of the process or particle is not insignificant. Every process and particle is full of shakti.

In the definitional description of shakti, it is also an essential point to understand that humans can reach to the stages of god by processes of development and can make his existence meaningful by accomplish his life desires. And these conditions could only be accomplished when you make these seven main powers your personality completely by being full determined and devoted. And if you accomplished this main power in their complete form then there would remain nothing impossible.

Pragya shakti

Chetana shakti

Vaak shakti

Kriya shakti

Vichar shakti

Ichha shakti

Sankalp shakti

These are modulated forms of the main three powers only.

Apart from these, is there any other shakti which is pre-designed by nature for the requirement of human life?

Yes why not... requirement of Kamashakti is paramount. The fullness of the life comes throught Kaama Bhav only. In the base of creation this nature only stays for which even Vedas have classified it under Gods. The main property of kama is attraction... Scholars always understand Kama as synonymous of Ichha shakti. Tantra says at extent that every type of thing which are liable do have the

base as kama Shakti. For this only, this whole universe is called as ichha or kaama bhav's expansion.

All regulations of life subjected to socialism and subjects do have base as kama bhav.

From the supreme soul to the normal soul all the relations exists, all those are accompanied by attraction, kama and maithoona (sex) {more specifically 'Yoga'}. In any situation in any type of sambhoga either internal or external, the task is done by the supreme Shakti by emerging a form of kama shakti.

How does it could be understandable that behind every task there is work of kama shakti...creation could be understand that it is derived with kama bhav but what does it have relation with vanishing or destruction?

This could be understand that in case that if you are in attraction with someone and further you start loving then too after a particular time duration you cannot tolerate what do you do at that time...you again try to merge your soul. In that condition either you try to merge yourself in that person or you try that person to merge with you. Your wish to overcome hunger will always attract you to the food... in that condition before a short time that particular food was having a very different form in itself...because of your attraction to that food, it ends the existence of food. This rule works on every being equally. With the separation from supreme soul, normal soul gets to be human and in this way, human takes birth, have pleasures of various comfort and at last one day cause of death will again make it move to supreme soul so don't kama shakti of supreme soul work in the base of this which is done by merging its part in itself. Is there a creation? No...but from the cosmic vision it is also a step to the creation. When you start loving someone with a strong attraction you feel to have a sex with person what you will call this...is it just a physical satisfaction, no...in the base of this there is a desire not to remain separate with that peson which is on extreme level which came up just to merge yourself with that person. At that time it does not stays two...anything stay behind is one. It is another thing that one sadhak, disciple, yogi will have internal self merge and stay far of it and in normal situation merging a normal body. But tantra speaks about aatmayoga being ahead from body and that too with the help of this Kama power only...this way this kama shakti stays form of the supreme shakti by being attracted to which it works with different form of tam, raj and sat.

In the tantra sight, why controlling goddess of tam, raj, sat are believed to be mahakali, mahalkashi and mahasaraswati respectively? Is it not possible that mahalakshmi works with nature of tam instead of raj???

No, it cannot happen. In the dawn of universe where there was no creation, there was no rear. At that time there was complete darkness only… when presence of mahanindra is there in its form of saakar and niraakar. And this tam element is mahakal only…from which kaal (time) even stays feared. Here it is to be noted that destruction of the body is done by kaal and there is no effect of the same on the soul. Soul always stays apart of kaal and covered with mahakaal. The same mahakal have mahakali as shakti, who is precursorproducer of the destruction. This shakti haves relation with middle time of pralaynisha. The presence of the same makes this world exist being covered with shiva, when it disappear, there is no moment time shiva turning in shavaa (death body or non existence). As it is related with pralaynisha means night time and they have a relation from middle time this way when it represents tam, it also has raj (to rear nature) and sat (creating nature) in the sankrant form. But mahalakshmi is not inspired from tam nature and neither maha sarashwati have relation with raja. This way there is no possibilities of them to have nature of vanishing. Yes, it is completely different condition when they get connected with tam in form of mahavidhyas, at that time they can even accomplish destructions.

You just spoke about mahavidhya, so does all mahavidhyas are form of these three base powers, does they have not any relations with panchamahabhoota ????

No, it is not that way, when we are speaking about aaadhya shakti (supreme power) then it has a very big meaning, from aadishakti I mean to say Raajraajeshwari Shodashi Tripur Sundari; holding the three main nature of her, there stands three maha shaktis. Perhaps, main mahavidhya of shrikul is taken as shodashi tripur saundari. But her mantra and yantra in mahavidhya form is different, and when she is parashakri raaj raajeshwari then her main base yantra is shri chakra or shri yantra which is represents geometry form of universe, the one which is holder of unimaginable powers.

And about panchmahabhuta then every element represents 2 mahavidhyas, and this way 5X2 = 10 occurs, in this too there is a notable thing that every element has 2 nature

Ushn (hot)

Sheet (cold)

This way, from ever element’s 2 mahavidhya one would be with ugra nature and second would be having peaceful nature. The way sun and moon owns light with that

parashakti, where sun gives heat and moon gives cold. But how strange is this, where heat of the sun provides warmth, splendor and intensity in humans, which inspire us to concentrate with oneness; the cold shine of moon gives excitement to the mind and make it filled with kama bhav.

Behind the each and every action (karma) of life there is a special ownering shakti, to whom we call Adhishthaatri Devi, related to that action is responsible for its happening similarly in tantra every procedure is carried out under the command of some special power but there are number of people who don't know which deity is regarded as the supreme power of which procedure than how they expect success in tantra as we all know little knowledge is dangerous thing and it's this little knowledge which becomes the cause root of failure in the easy to easiest process of tantra so it's better to have the complete knowledge of process and its authority like-

Such procedures as

Vashikaran- Vaani

Stambhan- Rama

vidveshhan- Jyeshhtha

Uchchatnan- Durga

Maaran - fall under the authority of Chandi or we can say Kaali.

Now the doubt here rises is....

Who takes its guarantee that if the whole procedure is carried out properly then its related supreme power will bless you??? As all the process and procedures related to Mahavidya is entitled as the toughest one and out of hundreds ones a single unique one gets success in them.....Just like that I have heard that Durgasapatshatii is a tantric granth and if carefully and properly its practicals should carry out than the deity is bounded to mark its appearance in front of sadhak and which is that fundamental process which helps to attain complete man power (Chaturvidh Purusharth) in life that too by following easy going way???

Now here the all answers are there.....firstly let me make it clear for all of you that to get all Mahavidya Sidh is something different matter.....so its completely unfair if a sadhak starts to use these Mahavidhyaas just to get rid of his daily life's minor problems and situations as he can get them settle down just by doing the mantra jaap of that deity which he is doing from a long time back and for this he just need to understand the Vikhandan Rehasya of that mantra as which section of mantra will help him to which type of action.....definitely he will get the solution.....see how simple it is....isn't it......ya it is if the doer is conscious. Let me make it more simple for you with an example......now just think there is a sadhak who is doing Bhagwati sadhna but at the same time someone is suffering from severe health disease in his family.........than he just to change the section of mantra that is at the place of basic mantra's Dheerg Sadhna he should enchant that mantra or Satotra of it which deals with health portion as –

.....Tara Taar-Pra Devi Tarkeshwer-Poojtiyan, Tarini Bhav Pathodherugratara Bhjamyahm...Streem Hreeng Hum Phat...just get the water enlighten (abhimantrit) with this mantra and give it to that person everyday he will soon recover his health. "Streem Treem Hreem" by making the rice (akshht) enlightens (abhimantrit) with this mantra jaap 1008 times and then throwing them away is helpful in getting back angry beloved or wife. If a sadhak put a tilak of enlighten kajal on his forehead with the mantra "Hans: Om Hreeng Streem Hum Hans: then every person in his office or business place gets attracted towards him. Finally in order to get sidhi in basic sadhna one need to pay attention at number of things because with the co-operation of these small things one get sidhi in Mahavidya. For this one need to follow a decided life style and shreer sthaapan process otherwise these sadhnaas can make your life living hell. Sometime situation become so severe that sadhak drop his resolution in between. Now come to our first question so the answer is YES!! Durgasapatshatii is a marvelous granth of Saangopaang Tantra and by following its complete process one can have the blissful presence of the whole three figures of Durga Deity but to have this divine feeling one need to follow proper procedure. If a sadhak does the sadhna of Bhagwati Raj Rajeshwari for this than its divinity becomes peerless. Always remember one thing that during sadhna- mantra, supreme authority of that mantra and sadhak becomes one during sadhnaa period as if there remains any gap then forget about success. In every sadhna Sadgurudev's happiness is essential for success so one should do such deeds which can bring smile on Sadgurudev's face as smile is a power to get your work done from a common person then think what will its reaction if it spread on the lips of the Highest Divine Power of this Universe.

Which are the base sadhanas of shakti, after accomplishing which, sadhak will have their desires fulfilled?

Sadhana of shakti could be done in any form, rather it is in form of man or woman, there is no difference because changing the gender will not change the basic source of energy. Therefore it should never be in mind that this is male deity so the shakti could not be gain or this is female deity so more energy could be generated. Rather it is male or female diety, it is not so many people know about thissukra i.e. kaam shakti's bindu sadhana have kaal bhairava as base shakti, of which anyone can adopt the process and have extraordinary beauty and can have complete femininity or robust. And source to have energy for kaal bhairav would be the main basic shakti only, which is called as nikhilshakti or raaj raajeshwari. From hundreds of sadhanas few easy but extreme powerful sadhanas are as followed, which can bloom life of the sadhaka and will convert emptiness into totality.

साधना : कुछ जिज्ञासाएं और उनके समाधान



TRY YOUR LEVEL BEST,

THAN LEAVE THE RESULTS ON GOD...... ☺

मेरे मास्टर मुझे अक्सर यह बात समझाते हैं की कार्य चाहे कोई भी हो, कैसा भी हो हमारे हाथ में होता है उसे पूरी इमानदारी के साथ करना, क्योकि हार और जीत एक ही सिक्के के दो पहलु होते हैं पर इसका यह अर्थ भी नहीं होता है की हम कोई उम्मीद ही ना रखें क्योकि उम्मीद पर तो दुनिया कायम है ....पर साथ ही साथ इस बात को भी याद रखें की तंत्र भावनाओं पर नहीं चलता, उसे चलाता है हमारा दृढ़ संकल्प, हमारी अन्तश्चेतना और हमारे अंदर की प्राण उर्जा....क्योकि कमजोरी कैसी भी हो वो हानिकारक ही होती है.

संशय हर रिश्ते का दुश्मन होता है, जहाँ इसके होने की आशंका भी होने लगे वहां फिर दूसरी कोई भावना नहीं रूकती. क्योकि हर रिश्ते का आधार विश्वास से बंधा होता है और हमें सिर्फ अपने हिस्से की वफा निभानी होती है और इन्ही सब बातों का ध्यान हमें अपने साधनात्मक जीवन में भी रखना पड़ता है. बहुत से सवाल ऐसे होते हैं जो साधना काल में हमारे मन-मस्तिष्क को हिला कर रख देते हैं और जब तक सही उत्तर ना मिले तब तक ना तो साधना में मन लगता है और ना ही किसी और काम में क्योकि हाथ में माला लेकर घंटो आँखें बंद करके बैठने से अगर सिद्धियाँ मिलती तो शायद आज हर दूसरा आदमी शंकराचार्य होता....बात अटपटी है पर उतनी ही सत्य भी.....

आम तौर पर अक्सर यह सवाल हमारे मन में आते हैं-

१. साधना किस समय पर शुरू करनी है और कब तक करनी है, इसे करने का सबसे उचित काल कौन सा है जिसमें यह सिद्ध हो जायेगी.....

२. मेरे पास प्राण प्रतिष्ठित यंत्र या माला नहीं है तो मैं क्या करूं......

३. कैसे पता चलेगा मुझे यह मंत्र सिद्ध हुआ या नहीं......

४. यदि में बताए गए समय पर साधना नहीं कर पाया तो क्या? मैं दुबारा इसे कब कर सकता हूँ....

५. मैंने इतने लाख अनुष्ठान इस मंत्र के कर लिए हैं पर मेरा यह कार्य सिद्ध नहीं हो रहा है ऐसा क्यों.... और ऐसे ही ढेरों प्रश्न जिनकी गणना करना असम्भव है.

अब क्रम से इन प्रश्नों के उत्तर-

१. हर साधना का अपना एक विशेष विधान और उसे करने का समय होता है इसमें कोई दो-राय नहीं है और यदि उस साधना को उसी समय में किया जाए तो वो फलीभूत भी होती है यह भी सत्य है पर यह सोचना की सिद्धि हाथ में माला लिए हुए मेरे सामने उपस्थित हो जाए यह उचित नहीं है क्योकि साधनाओं को करने के पश्चात ऐसा तो होता नहीं है की आपको आपकी दिनचार्य मैं उसका प्रभाव दिखाई ना देता हो, मन-मुताबिक प्रभाव मिलने का अर्थ ही यही है की आपके द्वारा किया गया मंत्र जाप फलीभूत हो रहा है और अगर हम यह बात करें की हम देवी को प्रत्यक्ष करने के मनोरथ से साधना कर रहे थे मगर वो प्रत्यक्ष नहीं हुई तो इसका एक सीधा सा उत्तर यह है की हजारों वर्ष लग जाते हैं ऐसी क्रिया के सम्पन्न होने में और साथ ही साथ अति कठोर नियमों का पालन करना होता है-

जैसे की विशेष खान पान, पूर्ण मर्यादित जीवन और अति कठोर विधान तब जाके कहीं यह किर्या सिद्ध होती है और यदि हम यह कहें की ५०० साल का समय मात्र ५ हफ्तों में संकुचित हो सकता जाए तो यह थोडा मुश्किल है...पर क्या यह बात कम है की परा शक्तियाँ अप्रत्क्ष रूप से ही सही पर आपको अपना सानिध्य तो दे रही हैं ना. साथ ही यदि इनका पूर्ण सिद्धिकरण करना हो तो अल्प काल के लिए ही सही साधक को पूर्ण मर्यादित और संयमित जीवन शैली का पालन करना ही होगा,याद रखिये प्रकटीकरण और पूर्ण सिद्धि दो अलग अलग बाते हैं. आपको इस कठिन मार्ग को कैसे साध्य करना है ये आपको ड्रिं संकल्प शक्ति से तय करना ही होगा.

२. अब दूसरा प्रश्न प्राण प्रतिष्ठित सामग्री का हर साधना में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है और उस साधना को सिद्ध होने में इनका विशेष योगदान होता है इसीलिए जहाँ तक सम्भव हो साधना करने से पहले बताई गयी सामग्री को प्राप्त कर लेना चाहिए पर यदि कभी ऐसा हो की यह सब आपको नहीं मिल रहा है तो क्या मात्र सामग्री के अभाव में साधना को ना करना क्या उचित है?..... नहीं ऐसा नहीं सोचना चाहिए क्योकि अगर कुछ नहीं है तो क्या गुरु चित्र तो है जो अपने आप में प्राण प्रतिष्ठित है और वो माला तो है जिससे आप गुरु मंत्र करते हो तो बस बन गया काम.....साधना को सम्पन्न करने से पहले सदगुरुदेव का आशीर्वाद अनिवार्य होता है तो क्या उन्ही सदगुरुदेव को प्राणों में बसाए हुए यदि सामग्री के अभाव में भी हम कोई साधना सम्पन्न कर रहे है तो वो सफलता देने से पहले यह सोचेंगे की इसने सामग्री का उपयोग नहीं किया तो इसे सफल होने का कोई अधिकार नहीं.....नहीं ऐसा कभी नहीं होगा क्योकि वो हमारे प्राणों से जुड़े है और वो जानते हैं की किन कारणों वश ऐसा किया गया है तो यकीन मानिए वो अपने आशीर्वाद से आपको वंचित नहीं रखेंगे.......

३. अब हम बात करते हैं की यह बात कैसे पता चले की जितना मंत्र जाप किया है वो हमें सिद्ध हुआ है या नहीं.....तो मंत्र सिद्ध ना हुआ हो इसका तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योकि इस ग्रुप में साधनाओं से संबंधित जो भी मंत्र दिए जाते है वो सब जागृत होते हैं, इसीलिए तो आपको बस उनकी अधिकतम से अधिकतम ५१ माला करनी पडती हैं और वो भी इसलिए की मंत्र शक्ति और आपकी प्राण उर्जा में एक सामंजस्य बैठ जाए और साधना में होने वाली अनुभूतियाँ मंत्र के

जाग्रत अवस्था में होने का ही परिणाम है. अब जरा सोचिए जाग्रत मंत्र के साथ साधना करने में पसीने छूट जाते हैं तो क्या हो यदि आपको स्वयं वो मंत्र जाग्रत भी करना पड़े तब शायद इस जीवन में मात्र एक-दो साधनाएं कर पाना ही सम्भव होगा. पर साधना सम्पन्न हो जाने के बाद उसको छोड़ देना भी उचित नहीं है.....मास्टर हमेशा कहते हैं एक बार मंत्र और आपकी प्राण उर्जा एक हो जाने पर भी कुछ दिनों के अंतराल से और यदि सम्भव हो तो प्रति दिन उस मंत्र की कम से कम एक माला कर लेनी चाहिए जिससे की आप दोनों (मंत्र और आप) का आपसी तालमेल बना रहे.

४. हर साधना को करने का एक समय दिया जाता है पर ऐसा कभी-कभी हो जाता है की हम उस समय से चूक जाते हैं तो इसमें घबराने जैसी कोई बात नहीं है आप उस साधना को कभी भी कर सकते हैं बस इस बात का ध्यान रखें की आप उस समय विशेष से जान बूझकर ना चुकें हों और सदगुरुदेव तो हमेशा कहते हैं की जब भी अंदर से महसूस हो तभी साधना करनी चाहिए क्योकि जबरदस्ती मन को मार कर आसन पर आँख बंद करने का क्या ओचित्य जब हमारा मन ही उस काम को नहीं करना चाहता है.

५. अब आते हैं हमारे अंतिम प्रश्न पर तो उसका एक सीधा सरल उत्तर यह है की हमारे द्वारा की गयी साधना की गिनती तो हम करते हैं पर वो गिन कर की गयी साधना कितने मन से की गयी थी इसका नतीजा कहीं ओर से आना होता है....हमारे हाथ में सिर्फ अपना कर्म करना है वो भी पूरी ईमानदारी के साथ. अब आप खुद ही सोचिये हमारी पूरी चेतना तो माला को गिनने में लगी पड़ी है तो हमने मंत्र जाप किया ही कहाँ? हमने तो बस आसन पर सदगुरुदेव के सामने बैठ कर गिनती की है....

मेरे मास्टर हमेशा समझाते हैं रिश्ता चाहे माँ-बेटे का हो, पति-पत्नी का हो या फिर गुरु-शिष्य का अगर हम अपने हिस्से की वफ़ा निभाएंगे तो उस रिश्ते को अटूट बंधन में बंधने से कोई नहीं रोक सकता और हमारे सदगुरुदेव तो हमारे प्राणाधार हैं मतलब वो हम में ही हैं तो क्या हम अपने आप के प्रति ईमानदार नहीं रह सकते.....रह सकते हैं.....हैं ना J

================================

My master often tells me one thing that whatever may be the work, how it may be, it is in our hands to do it with full honesty. Because winning and losing are two sides of the same coin but it does not mean that we don’t expect at all because it is the hope that sustains the life…….Side by side we should also keep one thing in mind that Tantra does not run on our feelings, it is based on our strong resolution, our inner consciousness and the power of inner praan……because whatever may be the weakness, it is always harmful.

Doubt/suspicion is the enemy of every relation .Where there is even a slightest of apprehension about it, there no other feeling can sustain because trust is the cornerstone of every relation and we only have to fulfill the loyalty of our portion and all these things have to be kept in mind in our spiritual life too. There are lots of questions which shake our mind and brain during the sadhna duration and when we do not get the correct answers then neither we feel like doing sadhna nor any other work. Because if siddhis were obtained by just taking rosary in hands and sitting for hours while closing you are eyes, then every second person would have been Shankracharya…… this may seem strange but it is that much true….

Generally these questions arise in our mind-

1. At what time one should start sadhna and up till what time it has to be done. Which is the best time for doing sadhna in which sadhna can be accomplished…?
2. I do not have energized yantra and rosary then what should I do…..
3. How would you know that this mantra has been accomplished (siddh) by me or not….
4. If I was not able to do sadhna at the time told to me then what? When I can do it again…..
5. I have done lacs of anushthan of this mantra but this work is not getting accomplished. Why is it so…..and such type of so many questions which can't be counted.

Now answers to this question in the same sequence…….

1. Every sadhna has got its own special rules and there is definite time for doing any sadhna. There are no second-opinion on it.It is also true that If the sadhna is done during that time then it is fructified also but thinking that siddhi will appear in front of me with garland in her hands is not correct .Because it never happens after doing sadhna that you do not witness its influence in your daily-life. Getting the desired influence simply means that mantra jap done by you is getting fructified and if we say that we were doing the sadhna with the desire of manifesting the goddess but she did not appear then answer to it is quite simple that such an activity takes thousands of year to materialize and one need to follow very strict rules.—like special eating habits, full disciplined life and very strict rules then only this activity is accomplished. If we say that the duration of 500 years can be compressed into merely 5 weeks then this is little bit difficult……But is this not enough that Para powers though invisible , are giving their assistance to us. If one

wants to completely accomplish them then may be for a shorter period, but sadhak would have to definitely follow complete disciplined life-style. Keep one thing in the mind that manifestation and complete accomplishment are two different things. You have to decide by your strong will power that how to accomplish this difficult path.

2. Now second question. Energized sadhna articles paly a very important role in every sadhna and they contribute a lot in accomplishing sadhna. Therefore wherever it is possible, one should attain the sadhna articles before doing any sadhna but if you are not able to get them then is it right not to do the sadhna in the absence of these articles?......No we should not think like this because if we do not have anything so what? We have Guru picture which is energized in itself and we have the rosary by which we chant Guru mantra so our work is done……It is compulsory to obtain the blessings of Sadgurudev before doing any sadhna then if we, with Sadgurudev in our heart, are doing any sadhna in absence of sadhna article, then will he think before giving us success that he has not used sadhna articles so he does not possess the right to succeed. ……never will it happen like this because he is connected to our heart and he knows the reason why we have done like this, so trust me, he will never deprive us of his blessings.
3. Now we will talk about how we will know that the mantra jap which have done has been accomplished to us ……so there are no question mark over non-accomplishment of mantras because all sadhna related mantras which are given in this group are activated in themselves therefore you just have to chant maximum 51 rounds of rosary of them and that too so that coordination develops between power of mantra and power of your praan. Experiences in sadhna are only the results of activated state of mantras. Now just think that how you toil hard to do sadhna with activated mantras then what will happen if you have to activate mantras on your own .Then probably it will be possible to do only 1 or 2 sadhnas in entire life. But it is not correct to leave the mantra after completing the sadhna……Master always says even after mantra and power of praan becoming one, after a gap of few days or if possible, one should chant at least one rosary so that mutual coordination is maintained between you both(Mantra and you).
4. Time is given for doing every sadhna but it happens sometimes that we miss that time.so we need not to worry in this case. You can do that sadhna anytime .Just keep this thing in mind that you should not have missed that particular time intentionally and Sadgurudev always used to say that whenever you feel from

inside, do the sadhnathen only. Because what is the point in doing sadhna forcefully when you are not feeling like doing it.

5. Now we come to our last question. A simple and easy answer to this is that though we count the sadhna we do but how passionately we have done the sadhna(which we have done while counting).Result of it has to come from somewhere else……Our job is to do our karma that too with total honesty. Now you think yourself when our full consciousness is busy in counting the rosaries then where we have done our mantra jaap? We have just counted the rosaries sitting on our aasan in front of Sadgurudev.

   My Master always says that any relationship whether it is of mother-son, husband-wife or guru-shishya, if we fulfill the loyalty of our part then nobody can stop that relation from being ever-lasting. And Our Sadgurudev is our Praanadhar (base of our praan) meaning he is inside us so can't we remain honest to ourselves…….we can…..isn't it?

****ROZY NIKHIL****

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:13 AM No comments:
Labels: TANTRA DARSHAN, TANTRA SIDDHI

Friday, May 18, 2012

तंत्र ज्ञान श्रृंखला – १ क्रम साधना अंतर्गत मन: शक्ति तंत्र (उर्ध्वलिंग साधना)



“निरंतरकृताभ्यासादंतरे पश्यति ध्रुवं |

तदा मुक्तिमवाप्नोति योगी नियतमानस: ||"

योगी निरंतर अभ्यास के द्वारा ही स्वयं को स्वयं के भीतर देखने में समर्थ हो पाता है और ऐसा हो जाने पर निश्चय ही उसके मन और नियति से वो मुक्त हो जाता है |

किन्तु कैसा अभ्यास,कैसी क्रिया का प्रयोग साधक को मन: शक्ति का स्वामी बनने में सहायक होता है,उसके पहले ये समझना ज्यादा महत्वपूर्ण है की आखिर मन की उपयोगिता साधना की सफलता के लिए इतनी जरुरी क्यों है ?

आपने कहावत तो सुनी ही होगी की – "**मन के हारे हार है और मन के जीते जीत**"

अर्थात यदि आप किसी कार्य को करना चाहते हैं तो आपको आपके मन का पूर्ण सहयोग आवश्यक होगा,यदि जरा सी भी न्यूनता रही तो एक सरल कार्य को भी परिस्थितियाँ इतनी जटिलता दे देती हैं की आपका सफल होना नामुमकिन ही हो जाता है |

ये तो हुआ कहावत का सामान्य अर्थ किन्तु एक साधक अपने मतलब का अर्थ इस कहावत में ऐसे ढूँढ लेता है की **यदि आप जीवन युद्ध में अपने मन से हार जाते हो तो भविष्य में आप कभी नहीं जीत पायेंगे,किन्तु यदि आपने मन को अपना स्वामी बनाने की अपेक्षा खुद उस पर नियंत्रण स्थापित कर उसका स्वामी बन जाए तो,तब ऐसे में वो मन की अनंत शक्तियों का प्रयोग कर प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना सकता है |**

मन के दो पक्ष होते हैं –

१. बाह्य पक्ष या बाह्य मन
२. अंतर पक्ष या अन्तः मन

वास्तव में ये दो मन ना होकर मन के दो पहलु होते हैं | और सम्पूर्ण तंत्र क्रिया की सफलता इन्ही दोनों पहलुओं को आपस में मिलाने से सिद्ध होती हैं, बाह्य से भीतर की यात्रा ही तो तंत्र योग या साफल्य योग कहलाता है | अपरा से परा पथ पर अग्रसर होने की क्रिया मन के इन्ही दोनों पक्षों का योग करने से पूरी होती है तब जाकर मन पर ना सिर्फ नियंत्रण हो पाता है अपितु वो अपनी अनंत शक्तियों से साधक को परिपूर्ण कर देता है |

१.अनियंत्रित मन या अर्धनियंत्रित मन साधक के जीवन में मात्र भटकाव ही लाता है |

२. ऐसी स्थिति में साधक ना तो गुरु के प्रति समर्पित हो पाता है और ना ही साधना के प्रति वो पूर्ण श्रृद्धावान रह पाता है |

३.चरित्र की स्वच्छता मन के सहयोग पर ही तो निर्भर करती है, मन ही हमें संबंधों के प्रति निष्ठावान बनाता है |अन्यथा विकृत मन किसी भी रिश्तों की मर्यादा हमें समझने नहीं देता, तब ऐसे में माँ,बहन,बेटी जैसे पवित्र रिश्तों के प्रति भी आपका स्नेह कामुकता में परिवर्तित हो जाता है | आज हम जो भी ऐसी खबरे सुनते,देखते या पढते हैं,वो सभी इसी विकृत मन के दुष्परिणाम ही हैं |

४. मन ही प्राण और आत्मा के साथ योग कर आपको पूर्णता देता है,और जब किसी में इनके मध्य का बल कमजोर हो जाता है तो ऐसे में व्यक्ति ना सिर्फ कमजोर मनोबल का स्वामी होता है बल्कि उसकी किसी भी क्षेत्र में सफल होने की संभावना ना के बराबर ही होगी |

५. ऐसा व्यक्तित्व अपने जीवन में किसी को प्रभावित नहीं कर सकता,और ना ही वो अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर पायेगा |

६. ऊपर के बिंदु पढ़ने के बाद क्या ये नहीं लगता है की साधना में सफलता तो बहुत दूर की बात होगी |

किन्तु यदि किसी क्रिया विशेष से मन के दोनों पक्षों का योग करवा दिया जाये तो मनोबल,प्राणबल और आत्मबल के पूर्ण योग से साधक पूर्णत्व को प्राप्त करता ही है | ये दो प्रकार से संभव है |

१. क्रिया योग द्वारा

२. तंत्र साधना की क्रम साधना के द्वारा

सदगुरुदेव ने बहुत पहले **"क्रिया योग"** पर पूरा ८ दिवसीय शिविर लगाया था और इस क्रिया को प्रायोगिक रूप में संपन्न करवाया था | वास्तव में मन की दोनों अवस्था का योग करने पर साधक अनंत रहस्यों की कुंजी पा लेता है तब दीर्घायुष्य, दिव्यता उसे सहज ही प्राप्त हो जाती है |

मानव शरीर में जो सप्तचक्रों का विवरण आता है वो प्रतीक है उन सप्त अवस्थाओं का उन सप्त अवस्थाओं का जो अपूर्णता से पूर्णता की और बढते हुए क्रमशः हस्तगत होते जाती है, सदगुरुदेव कहते हैं की वैसे सम्पूर्ण शरीर में चक्रों की संख्या १०८ होती है किन्तु मूल शक्ति केन्द्रों के रूप में सात चक्रों को मान्यता दी गयी है | हमने ऊपर मन के दो पक्षों की बात की है या दो अवस्थाओं की बात की है | किन्तु इन अवस्थाओं के बीच में सात परते होती हैं जिनका क्रमिक भेदन करने के बाद ही दोनों पक्ष एक हो पाते हैं, तब ना बाह्य चेतन मन होता है और ना ही अचेतन मन, तब होता है तो मात्र **पूर्ण संचेतन मन** | और इसी की प्राप्ति एक साधक का अभीष्ट होती है |
मन के ये सात स्तर निम्नानुसार होते हैं -

१. चेतन

२. स्मृति

३. अवचेतना

४. सर्जना

५. जीवनात

६. गर्भसुविस्तृता (अन्तश्योग)

७. ब्रह्माण्ड चेतना

और मन के दोनों पक्षों के मध्य इन्ही सात परतों से विभक्त है | सामान्य मानव बाह्य मन की अवस्था में ही जीता है और फिर वैसे मर जाता है,ना तो कोई उपलब्धि उसे प्राप्त होती है और ना ही जीवन का कोई लक्ष्य ही | मैं मात्र इतना बता दूँ की सदगुरुदेव हमेशा से यही कहते हैं की इन परतों में से जो पहली का भी भेदन कर लेता है वो जीवनमुक्ति और भोग दोनों प्राप्त कर लेता है तब दूसरी तीसरी,चौथी,पांचवी आदि की शक्तियों का भला क्या वर्णन किया जा सकता है |

अब बात करते हैं इनकी भेदन प्रक्रिया की तो **"शिवलिंग"** के बिना ये लगभग असंभव है | अतः एक प्राण प्रतिष्ठित शिवलिंग आपके पास होना अनिवार्य है | कैसा भी शिवलिंग आपके पास होना चाहिए | मैं **पारद शिवलिंग** का प्रयोग ज्यादा उचित समझती हूँ ,क्यूंकि अन्य तत्वों की अपेक्षा आत्मबल और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का सबसे बड़ा केंद्र विशुद्ध पारद होता है | क्रमशः अन्य तत्वों,धातुओं से निर्मित शिवलिंग में उत्तरोत्तर ऊर्जा की तीव्रता मंद होते जाती है | शिवलिंग के तीन प्रकार होते हैं |

१. ईष्टलिंग
२. प्राण लिंग
३. भाव लिंग या आत्म लिंग

ईष्ट लिंग बाह्य और सकल लिंग होता है और क्रम साधना के प्रथम स्तर का जागरण और भेदन के लिए आपको अपने बाएं हाथ में शिवलिंग का स्थापन कर दाहिने हाथ के मध्यमा और अनामिका ऊँगली का स्पर्श कराकर मंत्र का जप करना होता है ......

क्रमशः .....

==

"NirantarKritaAbyaasadantrePashyatiDhruvam |
Tada Muktimvaproti Yogi Niyatmanasah ||"

Yogi, only upon continuous practice, becomes capable to see himself inside him and when it happens, he frees himself from mind and destiny.

But which practice, which process helps sadhak to become master of the power of mind. Before this, it is very much important to understand that why; afterall, the utility of mind is so much necessary for success in sadhna?

You all would have listened to proverb in Hindi that **---"Man kehaarehaarhainaur man kejeetejeet"(Victory lies in conquering our mind)**

Meaning if you want to do any work then complete cooperation from your mind is necessary. If there is even a little bit of deficiency, then even the simple tasks are made to look cumbersome by the circumstances and it becomes impossible for you to get success.

This was the simple meaning of the proverb but the sadhak derives his own interpretation from this proverb that If you loses to your mind in the battle of life then you can never win in future. But if instead of mind becoming your master, you

become its master after establishing control over it then in that case you can utilize the infinite powers of mind and make every situation favourable.

There are two aspects of mind-

1. Outer aspect or Outer Mind
2. Inner aspect or Inner mind

In reality, they are not two minds rather they are two facets of mind. Success of entire tantra process lies in combining both these aspects together. Journey from outer to inner world only is called Tantra Yog or Safalya Yog. Advancing forward on Para path from Apara Path is completed when these two aspects are united. Then only, mind not only gets controlled but also mind, with its infinite powers, makes the sadhak complete.

1. Uncontrolled mind or half-controlled mind only deviates the sadhak off the track in his life.
2. In such a situation sadhak neither remains dedicated to his Guru nor develop a sense of trust towards sadhna.
3. Purity of our character depends only on cooperation from our mind. Mind only makes us faithful towards our relations. Otherwise, distorted mind never allows us to understand the dignity of any relationship. In such a case even your love towards pure relations of mother, sister and daughter is transformed into lust. Today the news we see, hear or read is the ill-consequences of this distorted mind only.
4. Mind only gives you completeness after combining with praan and soul. And whenever the strength between them is weakened in any person then in such a case person does not only become master of low morale but also chances of his succeeding in any field are negligible.
5. Such a personality can never impress anyone in his life and nor he will be able to successfully attain his goal.
6. Do you not feel after reading the above points that success in sadhna will be distant dream for him?

But if, by any special process, these two aspects of mind are united then due to the total combination of Praanbal, Manobal and AatmBal, sadhak definitely attains the completeness. This is possible in two ways.

1. Through Kriya Yog.
2. Through Kram sadhna of tantra sadhna.

Sadgurudev, very much earlier, conducted 8 day shivir on "Kriya Yog" and made us do this process practically. In reality, upon doing union of these two states of mind, sadhak gets key to infinite secrets .Then he easily attains divinity and long life.

The description which we get of seven chakras in human body, they are the indicator of those seven states (those seven states, which are attained respectively while progressing towards completeness from incompleteness).Sadgurudev said that though there are 108 chakras in entire body but seven chakras have been recognized as the basic power centres. We have discussed about the two aspects or two states of mind but between these two states there are seven layers. Their respective bhedan leads to a state where these two aspects become one. Then there is neither outer conscious mind nor subconscious mind. Then what remains is only full conscious mind. And attaining this state is the aim for any sadhak.

The seven levels of minds are as follows-

1. Chetan
2. Smriti
3. Avchetna
4. Srajana
5. Jeevanaat
6. GarbhSuvistrita(Antashyog)
7. Brahmand Chetna

And between the two states of mind, these are the seven layers.

Normal person lives in the states of outer mind and dies also in such a state. Neither he gets any achievement nor does he attain any goal of his life. I may tell you one fact that Sadgurudev used to say that who does the bhedan of only first layer among these layers; he not only frees himself from life but attains bhoga also. Now, how can we describe the powers of second, third, fourth, fifth etc.

Now we will talk about the bhedan process which is virtually impossible without Shivling. Therefore, it is necessary for you to have an energized Shivling.Any type of Shivling you can have. I prefer the use of Parad Shivling because as compared to other elements, centre of universal energy and spiritual power is pure Parad. Respectivelyin the Shivling made from other elements or metals, intensity of power successively goes on decreasing. There are three types of Shivling

1. Ishtling
2. Praan Ling
3. Bhaav Ling or Aatm Ling

Isht ling is an outer and total ling. For the first stage of jagran and bhedan in Kram sadhna, you have to establish Shivling on your left hand and chant the mantras while touching Shivling with middle and ring finger....
To be Continued....

****RAJNI NIKHIL****
****NPRU****

Posted by Nikhil at 4:27 AM 1 comment:
Labels: TANTRA DARSHAN, TANTRA SIDDHI

Wednesday, May 2, 2012

क्या ये निखिल कार्य हैं..इन कतिपय पाखंडियों का ...??(Is This Nikhil Work Of ……………these few Sanctimonious….???)



आज इस बात को जानने की ...समझने की बहुत आवश्यकता हैं की

यह निखिल कार्य हैं क्या?? ...जिसे देखिये वही इस शब्द को इस्तेमाल किया जा रहा हैं .एक् ग्रुप के कर्ता धर्ता आज कल .....कुछ

1. क्या चीख चिल्लाकर ..प्रलाप करने से इनका सारा व्यक्तिगत कार्य निखिल कार्य हो गया
2. वह भी अपने ग्रुप मे ..बता रहा हैं ..इन तथाकथित की अपने ही ग्रुप मे इनकी भाषा पढ़ तो ले एक बार ......
3. कौनसा महा सिद्ध हो गया हैं .

4. बात करेगा यह भगवती काम कला काली की ..अगर यह सिद्ध हैं ..तो हैं इसकी सामर्थ्य की काम कला काली के *अयुत आक्षरी मंत्र* का एक बार सही सही उच्चारण कर दे ..कर ही नही सकता ..क्योंकि जिस महाकाल संहिता के काम कला काली खंड मे यह मंत्र हैं उसमे भी ३१४ बीजाक्षर हैं ही नही ..क्या यह बिना देखें..सही उच्चारण कर सकता हैं.. मैं चुनौती देता हूँ की यह कर के दिखाए ..मैं इसकी गुलामी के लिए तैयार हूँ ... हैं सामर्थ्य इसकी की यह क्या यह खिलवाड़ सा नही बन गया हैं ....सच्चाई कड़वी हैं ..निखिल कार्य की आड़ मे अपने व्यवसाय की आड़ मे ...इसकी मानसिकता को आप समझ ले ......
5. हम पर आरोप करते हैं की हम किताबो से देख कर लिख रहे हैं .जबकि इनके यहाँ की पत्रिका खुद,चंडी प्रकाशन,कल्याण, दतिया पीताम्बर पीठ, चौखम्बा प्रकाशन से पूरी पूरी उतरी पड़ी रहती हैं, .क्या एक भी आवरण पूजन ......क्योंकि यह तोकाम कला काली सिद्ध हैं ...पूरा सुना सकता हैं .सामर्थ्य ही नही हैं इसमें ..अब शब्दों से नही चुनोती से बात करे ये .....शब्द तो कोई भी लिख ले गा अपने ग्रुप मे ..यह बताये की कहाँ यह अपनी महा सिद्धता की बात सबके सामने तैयार हैं रखने को ..हम इंतज़ार कर रहे हैं ..बोले तो सही ...
6. अब इनका निखिल कार्य कहाँ से हो गया?? ..ये तो हमारी परम्परा से भी नही हैं .इनके गुरु स्वयम्भू हैं उनसे तो हमें कोई सरोकार नही हैं(क्यूंकि उन्हें हमारे सदगुरुदेव ने गुरु मनोनीत नहीं किया है). तो जब इनका गुरु इतना सक्षम हैं तो यह खुद क्यों हम सब से हाथ जोड़ जोड़ कर की यह हमजाद साधना दे दो या यह अल्केमी की प्रक्रिया बता दो .. गिड गिडा ते फिरते रहे हैं .क्या इसे अपने ही गुरु पर भरोषा नही हैं ...और इन महानुभाव की सारी मेल हम सामने रखने जा रहे हैं ..ताकि इस कलयुग के एक मात्र स्वम्यम्भु काम कला काली के सिद्ध साधक का रूप भी तो पता चले ....यह व्यक्ति दम्भोक्ति करता हैं की इसे काम काला काली सिद्ध हैं अगरऐसा हैं तो. भगवतीका सिद्ध .सामने आ कर बात करेगा लोगों के सामने..... न की .अपने ग्रुप मे ...चीखता चिल्लाता रहे ...
7. हमने कभी नही कहा .की हमारा पास साधनाओ का खजाना हैं क्योंकि हमारे पास हमारे सदगुरुदेव द्वारा दी गयी अनेको डायरी हैं .आधिकाश शिविरों के नोट्स हैं , जो हमने अपने गुरु भाइयों के पास जा जा कर खुद इक्क्ठे किये ...हमने अनेको सिद्धो के पास जा

जा कर के साधनाए ली हैं . हमने कभी भी यह दावा नही किया की ब्रम्हांड मे सिर्फ मेरे पास हैं ,औरमैं यह करसकता हूँ या वह ....और तब भी मंच पर किताबो से ध्यान पढ़ कर उच्चरित कर रहे हैं. इनका कब से निखिल कार्य हो गया .अगर इनका गुरु सक्षम हैं तो जो सक्षम गुरु का शिष्य होता हैं ..वह किसी दूसरों के सामने गिड गिदाता नही है .इस स्वयम्भू सिद्ध की मेल आपको इस का असली चेहरा दिखायेगी और मैं सारी की सारी मेल जल्द ही पब्लिश करने वाला हूँ जिसमे इसका वास्तविक चेहरा सब देखेंगे .

8. क्योंकि हम गुरु नही हैं ..नही हमने कोई योग्यता ऐसी हैं की किसी को ब्रह्मत्व दीक्षा दे सके .ना कभी होगी ही ...क्योंकि हम सिर्फ शिष्य हैं .और हमारे माता पिता हमारे सदगुरुदेव हैं . और हम हैं जो निखिल कार्य की बात कह सकते हैं .

9. सदगुरुदेव सिंह वत रहे और सिंहों का उन्होंने निर्माण किया ...कायरो का नही ..भीतर घातीयो का .... भिखारियों का नही ..दरवाजे दरवाजे ..भीख मांग कर निखिल कार्य करने के अपना व्यवसाय चलाने इन भिखारियों का तो कतिपय नही ...उन्होंने इसे कब से निखिल कार्य कौन कर रहा हैं या नही का निर्धारण करने वाला बना गए ??.खुद ने आज तक क्या किया हैं निखिल कार्य के नाम पर जो आज लगा हैं ..प्रमाण पत्र देने .बस बना ले ग्रुप ....इकठ्ठा करके भीड़ लगा ले ....लगे चीखने चिल्लाने .... जबान हैं , मुंह हैं तो खुल गया हैं तो कड़वा ही निकलेगा ..नाम लेने से निखिल का शिष्य नही हो जाता हैं ...पर मुंह चलाने से निखिल शिष्य बनने वाले को हम सभी देख ही रहे हैं .

10. और आज मै सदगुरुदेव द्वारा निर्माणित तैयार खड़ा हूँ कि बोले तो ये किस ज्योतिष ग्रन्थ की बात करते हैं जो इन महानुभावो ने आत्मसात किया हो ..कौन सा ऐसा तंत्र ग्रन्थ हैं इन तथाकथितों ने अपने जीवन मे उतारा हो ....मैं शुरू से लेकर अंत तक सुना दूं ..मुझे गर्व हैं मेरे सदगुरुदेव ने मुझे दी हैं क्षमता ...मैं चुनोती के लिए तैयार हूँ ...., कौन से देवी देवता के आवरण पूजा या अन्य तांत्रिक विधान की बात हैं मैं बिना कोई किताब लिए खड़ा हूँ .... हैं सामर्थ्य की ये महा ज्ञानी स्वयम्भू महासिद्ध बने बैठे ... दो तीन पेज भी सुना दे ...को न से तंत्र ग्रन्थ कि बात करते हो जो इन महा पुरुषों को याद हो...... कठ्स्थ हो ये बताये मुझे .... तीन पेज तोइन्हें याद नही ,,,,ब्रम्हाड का यह पूजन और वह पूजन की बात करते हैं ....

11. महानुभाव हैं ..बहुत गरज गरज कर ..कि निखिल शिष्य ऐसा होता हैं और निखिल शिष्य वैसा हैं ..मैं ये कर दूं और वह ..मुझे काम कलाकाली सिद्ध हैं और ये देवता भी ......इनकी लगभग १०० से ज्यादा मेल मेरे पास रखी हैं जिसमे हाथ जोड़ कर गिद गिडा भीख मांग रहे है की कोई मेरी नही सुनता ..मेरे पर कर्जा हो गया हैं ,. कि आप लोग मेरी मदद करो.....मैं मरने जा रहा हूँ ..और यह किमैने यह किया पर यह तंत्र प्रक्रिया भी असफल हो गयी .

१२. आज इन्ही के साथ एक ओर खड़े हैं जो इनके इशारे पर मेरे बारे मे यह लिखने मे नही चुके कि एक ग्रुप मे गुरु भाई की प्रशंशा दूसरे गुरु भाई के द्वारा की जा रही हैं ..उसकी वाह वाही की जा रही हैं ...और उसे मनो सदगुरु से बढ़कर बताया जा रहा हैं .महिमा मंडित किया जा रहा हैं .. इनको लग गया की मानो सदगुरुदेव की निंदा की जा रही हो ....इनसे यह पूंछे कि कहाँ ऐसा लिखा हैं या लिखा था . आज केबल इन्ही को को यह ज्ञान हैं बाकी क्या सारे अनिभ्म्य हैं .उन्हें कुछ समझ मे नही आता .सारे बाकी अधकचरे ज्ञान वाले हैं सिर्फ ये दो चार ..ही केबल ज्ञान वान हो गए ..... पर अब ..अब क्या हो रहा हैं जो खुद पथ भ्रष्ट के साथ खड़े हैं व कौन सा यह सिद्ध हैं या हो गया हैं ..

१३. जो गालिया दे कर बात करे तो वह सही..क्या हैं यह ....?? ..जय महाकाली जी लिखने से बड़े तंत्र सिद्ध हो गए ..हैं सामर्थ्य तो सामने आये ....पता तो चले की कितने बड़े तांत्रिक हैं या मांत्रिक हैं क्या ये जनाब हैं अपने गुरु के पट्ट शिष्य ....क्या ये जो आज समाज के सामने खड़े होकर चुनोती की बात कर सकेगें ..,,अपने ग्रुप मे बैठकर करलो दम्भोक्ति कितनी हैं सामर्थ्य तो सामने आ कर खड़े तो हो .दो चुनोती ....उसी व्यक्तित्व की यह दम्भोक्ति ....कीमैं यह भी प्रक्रिया दे सकता हैं किमैं यह कर दूं और वह ..है .. अगर सामर्थ्य तो सामने खड़े हो जाओ कुछ तो पता चले कि कितने बड़े शिष्य हो ....क्या सीखा हैं आज तक इसने अपने ....जो दे सको ..सिद्ध करके दिखा सको ..

१४.अब अपने ग्रुप मे मुंह न चले अगर हैं सामर्थ्य तो बात करे चुनौती की ..ग्रुप तो कोई भी बना सकता हैं ...

१५. मैं जो सिर्फ और सिर्फ शिष्य के रूप मे ही काम मे लगा हूँ जिसका अब मैं नही आप सभी भी स्वयं एक प्रमाण तो हो ही ....तो सबको खल रहा हैं ..इन .सबकी आखों मे ,मेरे द्वारा किये गए कार्य शूल की भांति चुभ रहे हैं ..पर .मैंने तो कभी अपने कार्य को निखिल कार्य नही कहा ..सिर्फ इतना कहा यह की मेरा स्वपन हैं यह करना ..जो मैंने देखा हैं ......की मैं अपने सदगुरुदेव के ये अधूरे कार्य को पूरा करने मे जो हो सके वह करूँगा ...हर हाल मे हर कीमत दे कर ...इसकेलिए मुझे किसी के प्रमाण पत्र की जरुरत नही हैं .

१६. अब हम साधनाए देते हैं तो कितनी बार स्पस्ट कर चुके हैं कि वह या तो सदगुरुदेव द्वारा दी गयी होगी या उनके किसी सन्याशी शिष्य शिष्याओ द्वारा या किसी अनुभवी सिद्ध के द्वारा जो हमें मिली हैं जिनकी हमने पूर्व अनुमति ली हैं..हम कोई खुद तो निर्माणित करते नही ..

वह साधना विधि या विधान ...... केबल केबल गुरु भाई के रूप मे ही हमें आगे देने को दी गयी हैं ....या जाती रही हैं .जैसी की उन्होंने या उस सिद्ध ने आज्ञा दी हैं और यह सारी बाते ऐसी हैं हैं कि जैसा किसी बड़े भाई को साईं किल चलानी बनती हैं तो वह अपने छोटे भाई को सीखा रहा हैं . इसमे गुरु बन ने की बात कहाँ से आ गयी ..

१७. आचार्य चाणक्य सही कहते हैं कि सीधे वृक्ष पहले काटे जाते हैं. मैं जो अति विनम्रता से इनके साथ पेश आया ..कि मेरे भाई हैं ..कम से कम मेरी भावनाओ को सम् झेगे पर ......इस विनम्रता को इन सभी ने मेरी कमजोरी ही समझा ... ही माना .... तभी इन सभी की इतनी हिम्मत हुयी ..

इन पाखण्डियो को देखिये ये स्वयम्भू गुरु के शिष्य तो बन गए पर गुरु मन्त्र तो इनका अपना होना था.पर ऐसा नही अभी भी ....क्योंकि अपना सदगुरुदेव प्रदत्त गुरु मंत्र हैं ही ऐसा की उसे कोई भी दीक्षा या बिना दीक्षा लिए ही भी करे तो उसका कार्य तो होगा ही . तो इन की चाल बाजी देखिये गुरु मंत्र ..सदगुरुदेव वाला ही उपयोग कर रहे हैं स्वयं का गुरु मंत्र क्यों नही हैं ...पर अब इनके सारे कार्य निखिल कार्य हो गए ..जो ये करें सब निखिल कार्य हो गया ..

क्यों नही कहते की मेरा अपना कार्य हैं ....अरे शिष्य भी बने रहते तो समझ मे आता जब स्वयम्भू गुरु बन गए हैं तब यह तो सद्गुरु देव के कथन का दुरुपयोग हैं , तब अब शिष्य कैसे ..और कुछ ऐसे ही महानुभावो के समर्थक .ये हमसे प्रशन पूंछ रहे हैं .....तब निखिल कार्य कैसा ..पर नही जी हैं ..केबल इन्ही का हैं ..और कोई विरोध नही ..
अगर हैं इतने बड़े सिद्ध ..काम काला काली सिद्ध तो यह सब क्या हैं ..
१८. हमारे कार्यों पर हंसी और आपत्ति .
पर कौन सा ऐसा कार्य हैं जो सिर्फ इन्ही कुछ की समझ मे आ रहा हैं बाकी तो सभी की बुद्धि हैं ही नही केबल इनकी को विशिष्ट प्रज्ञा मिली हैं .इनकी विशिष्ट प्रज्ञा से कौन सा ऐसा महत काम आज तक इन महानुभावो ने किया हैं ..
१९. धार्मिक विद्वेष फैलाकर शान्ति भंग करना या कारवां निखिल शिष्य का कार्य नहीं है ,कभी भी सदगुरुदेव ने दीक्षा देने के लिए इन बातों को महत्त्व नहीं दिया,अरे शिष्य बन्ने के पहले अच्छा इंसान होना जरुरी है,जिसे धर्म और नैतिकता नहीं समझ में आता है,वो मूर्ख और क्या समझेगा,धार्मिक उन्माद अधकचरे मष्तिष्क वालों का अकार्य है तंत्र के लिए या आध्यात्म के लिए समर्पित व्यक्तियों का नहीं..ये ज्ञान है और ज्ञान पर सबका अधिकार है..

अतः आप सभी से निवेदन हैंकि सदगुरुदेव के नाम पर या निखिल कार्य के नाम पर यदि कोई कहता हैं तो सतर्क रहे ..और हर जगह अपनी विद्या बुद्धि का का उपयोग जरुर करें

पर हम ही समझने को तैयार नही होंगे तो ....यह तो होना ही हैं ..और अच्छे से समझ जाए ..तो भविष्य मे कितनी बार आप ठगे जाने से आप बच जायेंगे ......आपकी भावनाओ के साथ कोई खेल नही कर सकेगा ...स्वयं साधनाएं करिये ,मात्र पढ़ कर खुश नहीं होइए...प्रामाणिक विधान है...आपकी मेहनत है तो आप कैसे सफल नहीं होंगे.....साधना करना अकर्मण्य होना नहीं है ..बल्कि सद्गुरु के चरणों का आश्रय लेकर अपने भाग्य को परिवर्तित करने की क्रिया है.....और आप उनका अंश हैं आप ऐसा कर सकते हैं ....अवश्य ऐसा कर सकते हैं....आपको सामग्री मैं उपलब्ध करवाऊंगा ताकि ये मलाल ना रहे की प्रामाणिक सामग्री नहीं थी और वो भी मुफ्त...क्यूंकि मैं खर्च वहन कर सकता हूँ..पर मेरा कोई भाई खर्च के भाव में ज्ञान अर्जन ना कर पाए ऐसा नहीं होगा.... अब जो कारवां चलेगा तो इस महीने के लिए उपलब्ध साधनाए भी आपके सामने हैं पर ..आने वाले अगले महीने के लिए भी

उपलब्ध साधनाए भी आपके सामने आज हैं ..पर ये आपको १० जून से उपलब्ध हो पाएंगी १० जुलाई तक के लिए ..और अब ये कारवां रुकेगा नही ..मैं हमेशा भाई के रूप में साथ हूँ... ना मुझमे दीक्षा देने की पात्रता है और ना ही मैं सफलता दे सकता हूँ ..किन्तु आपको सत्य और प्रमाणिकता से परिचय तो करवा सकता हूँ....मैं शांत स्वभाव का अवश्य हूँ किन्तु कायर नहीं ...सदैव चुनौती का सामना करने के लिए तत्पर ....और आमान सामना होने पर कौन जीतेगा कौन हारेगा ये तो सभी को ज्ञात हो ही जाएगा...

१० जून से १० जुलाई के लिए चयनित साधनाएं...

१. **किन्नरोत्तम साधना-** किन्नर जगत से संपर्क स्थापित करने,अभिनय और कला के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्ति हेतु.
२. **गैबी हमजाद प्रयोग-** मुस्लिम तंत्र का अनोखा विधान जिससे हमजाद को बाध्य होना ही पड़ता है प्रत्यक्ष होने के लिए.
३. **पूर्ण नीलतारा मेधा प्रयोग-**तीव्र स्मरण शक्ति और विद्या तत्व को आत्मसात करने हेतु.
४. **साबर सिद्धि विधान-** इसके बाद सबर साधनाओं में सफलता निश्चिन्त ही होती है.
५. **सौंदर्य लूतिका प्रभेदा प्रयोग-** तिब्बती बौद्ध तंत्र की वह पद्धति जो पूर्ण सौंदर्य और धन की प्राप्ति कराती है
६. **दृश्यशक्ति परान्विता साधना-** काल ज्ञान दर्शन और परा विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्ति हेतु.
७. **अघोर विरूपाक्ष साधना** – शमशान साधनाओं में अग्रणी तथा श्मशानेश्वर धूम्रलोचन के दर्शन और सिद्धि से सम्बंधित विधान.

==

Today there is very much a need to understand that what is the Nikhil Work??.......Whosoever you see, is using this word. Administrator of one group these days.....

1) Just by shouting loudly and crying hard, will their whole personal work become Nikhil work?
2) That too in his own group.....he is telling like this.......Just see the language what this guy has used in his own group.......
3) What sort of Maha Siddh he has become...

4) He is talking about Goddess Kaam Kala Kaali......If he is siddh .....then has he got the capability to simply pronounce once the Aayut Aakshari mantraof Kaam Kala Kaali.....He can't do it.....Because The Kaam Kala Kaali part of Mahakaal Samhita which contains this mantra itself does not have 324 beej alphabets.....Can he pronounce it ....without seeing it....I am giving a challenge to do this.....I am ready to become his slave.....Has he got the capability....Has this not become like a child play.....Truth is bitter....in the cover of Nikhil work ,in the cover of his business...Understand the mentality of him.

5) They are accusing us of copying from the book whereas their own magazine is simply the carbon copy of Chandi publication, kalian, Datiya Peetambara Peeth and Chaukhamba publication. Can he tell any Aavaran poojan (an essential process in tantra process) since he is Kaam Kala Siddh.......he does not have that much competence............now it's time to accept the challenge rather than simply uttering words...anyone can write in his /her group....has he ready to prove his credentials as Maha siddh.....we are waiting.......come on....

6) Now how can his work are called Nikhil work?? He even does not belong to our tradition. His guru is self-made and we do not have any relation with him (because our Sadgurudev has never nominated him as our Guru).If his Guru is capable, then why he is asking us all to provide Humzaad Sadhna or any alchemy process? Does he not trust even his own Guru and now we are going to disclose all the mails of this great person so that we know about this self-made Kaam Kala Kaali Siddh sadhak…..If that person is boosting of being a Kaam Kala Kaali Siddh…If it is like this then this Bhagwati siddh would come in the front of people…..rather than crying hard in the group…

7) We have never claimed that we have the treasure of sadhna. Because we have the various dairies given by Sadgurudev himself……we have the notes of most of the shivirs which we have gathered from our guru brothers ……we have taken sadhna from various siddhs running after them. We have never claimed that we are the only one in the universe having these sadhnas …and I can do this and that…..And they are chanting the dhayan mantra on stage looking from the books, how can their work be called Nikhil work. If his Guru is capable, then the disciple of capable guru never bows down in front of anyone. The mail of this self-made Siddh will show his true face to you all and I am going to publish his all mails very soon so that its actual face is seen by everyone.

8) Because we are not Guru….neither do we possess the capability to provide Brahmtav Diksha nor we will have it in future….Because we are only disciples and Our Sadgurudev is both our father and mother and we are the one who can talk about Nikhil work.

9) Sadgurudev has always remained like lion-like and he has made only lions ...not the cowards.....not the beggars.....also not those who run their business of doing so called Nikhil work begging everywhere...How can Sadgurudev make this person authority to decide who is doing Nikhil work and who is not??What he has done on his own.... and how can he give the certificate of Nikhil work...Just make a

group......gather the crowd......and started shouting...Just taking his name does not make anyone disciple of Nikhil...and we are saying this Nikhil disciple being made by just uttering words.

10) And Today I am here, prepared by Sadgurudev ...just tell the name of any Astrology scripture which this great person has imbibed.....tell any tantra scriptures which they have followed in their life....I can tell it from start to end. I am proud that Sadgurudev has given me the ability....I am ready for challenge...Whose lord's Aavaran poojan is it or any tantric process, I am here standing without book.....Has this self-made Maha siddh got the capability to even tell 2-3 pages........tell the name of tantra scripture which they know by heart....they do not even know 2-3 pages.....and they talk about Brahmand and other poojan....

11) He is a great person....very blatantly they say....that Nikhil disciple is like this and like that .....I can do this and that.....I have got Kaam Kala Kaali siddh and this god too......I have got 100 mails of him where he is begging that nobody listen to me.....I am debt-ridden....please help me ....I am going to die....and I did this process but that was unsuccessful.

12) One more person is standing by his side who left no stones unturned to write about me that in one group , one guru brother is praising other , he is being appreciated and he is being lauded more than Sadgurudev...he got the impression that Sadgurudev is being criticised....Can someone ask him what is written and what was written. Today he is the only one who is learned, rest of us are unaware. Rest of people do not know anything. Rest all are empty minded only these 2-4 are scholars....But now....What is happening now they themselves are standing by the side of the person who has deviated from the path and how he was siddh or has become so..

13) Talk in abusive manner, is it right…..?? Just by writing Jai Mahakaali, they have become tantra siddh…..If capable, come forward….let's see how big tantrik or mantrik this guy is,disciple….Can he accept the challenge in front of the society…..express your ego in your group, have you got the capability to throw the challenge That I can do this and that…If you are competent come forward. We should know how great disciple you are, what all you have learnt up till now….what you can provide…what you can accomplish..

14) Don't shout in your group. If you have the competence, let's talk about challenge. Anyone can make group.

15) I have been doing work only and only as a disciple whose proof now is not only me but you all too……they are getting jealous…Works done by me are pricking you like thorn….But I have never called my work as Nikhil work….I have just told that it is my dream to do this…which I have seen….That whatever I can do , I will do to fulfill all the incomplete works of Sadgurudev…..at any cost….and for this I do not need any certification from anyone.

16) Now we give sadhnas, how many times we have clarified that these were either given by Sadgurudev or his Sanyasi disciples or we would have got from any experienced siddh. We have taken prior permission from them…..we ourselves do not make these sadhnas…

…

These sadhna process ….we have been told to give just as Guru Brothers only and these are given in the same way he or the siddhs have ordered. This is something like if an elder brother knows how to ride the cycle, he is teaching his younger brother. How can the talks of being Guru arise….

17) Acharya Chanakya has rightly said that straight trees are cut first. The extreme politeness with which I treated him...that he is like my brother.....at least he will understand my feelings....but they all considered my politeness to be my weakness only.....that's why they gained the courage to do so....

See thisSanctimonious who became the disciples of self-made Guru but their Guru mantra should be of their own but still...because our Guru Mantra given by Sadgurudev is such that if someone chants it after taking any Diksha or without Diksha, his works will be done. See their cleverness they are using the Guru Mantra given by Sadgurudev, why they do not have their own Guru Mantra....But their works are called Nikhil work.....whatever they do is Nikhil work.

Why they can't say it's their personal work.....If they would have remained disciples only, we could have understood it.When they have become self-made guru, then it is the misuse of Sadgurudev words. How can they be called disciples now....and supporters of these great persons are questioning us...... only their work is Nikhil work...and no opposition....

If they are that much siddh.....kaam kala Kaali siddh then what all is this....

18) Having objection and laughing on our work..

But what is that work which only they are able to understand. Rest all are mindless, only they have got the special intelligence. What great work they have done up till today by using this special intelligence.

19) Spreading religious animosity and disturbing the peace or getting it disturbed is never the work of Nikhil's disciple. Sadgurudev has never given importance to it while giving Diksha. Before becoming a disciple, it is necessary to be good human being. Who can't understand religion and morality, what more that fool can understand. Religious wild acts are the domain of empty minded people, not of the persons who are dedicated to tantra or spirituality. It is knowledge and everyone has a right on this knowledge.

Therefore it is our sincere request to you all that be cautious of the one who talks anything in the name of Sadgurudev of Nikhil work.....and always use your mind.

But if we are not willing to understand....then this will happen always.....and if we are able to grasp it, wed will be saved in future so many times from being

cheated.......nobody would be able to play with your feelings......do sadhnas yourself, do not be pleased merely by reading them.....if it is authentic process...if you have done hard-work....then how you will not be successful....Doing sadhna is not being inactive.... Rather it is the activity to transform your fate taking support of divine lotus feet of Sadgurudev.....and you are part of him so you can do it...definitely you can do it.....I will make the sadhna articles available and that too free of cost so that you never have regrets that sadhna articles were not authentic because I can bear the cost...but it will not happen that any of my brother could not attain knowledge just because he could not afford it.....This tradition will go on from now. You already have the sadhnas for this month but for the next month also sadhnas are also available now......But this will be given only from 10 June and will be valid up till 10 July.....and this tradition will never stop now...I am always with you as your brother....Neither I am suitable to give Diksha nor I can provide you the success....but I can at least introduce you to truth and authenticity...I am polite but not a coward...always ready to accept the challenge.....and at the time of confrontation , you all will know who will win and who will lose.

Selected sadhnas for 10 June to 10 July

1) **Kinnarottam Sadhna:** To establish contact with kinnar world , for attaining completeness in field of acting and arts.

2) **Gaibi Humzaad Process:**An amazing process of Muslim tantra whereby Humzaad is compelled to manifest himself.

3) **Poorn Neeltaara Medha Prayog:** To imbibe intense remembering power and Vidya element.

4) **Sabar Siddhi Vidhaan**: After this, success in sabar sadhna is assured.

5) **Saundarya Lutika Prabheda Process:** Padhati of Tibet Boudh tantra which provides complete beauty and wealth.

6) **Drishyashakti Paranivata Sadhna**: For getting amazing success in field of Kaal Gyan darshan and Para Vigyan.

7) Aghor Virupaaksh Sadhna:Process related for siddhi and darshan of shamshaaneshwar Dhoomra Lochan (who is the foremost in Shamshaan sadhna)

इस माह की सात साधनाएं और सात साधनाओ के सन्दर्भ मे अब से प्रभावी होने वाले नियम(Seven sadhnas of this Month and rules in context of these sadhnas , effective from now)



मित्रो ,

अब समय हैं कुछ बहुत ही कड़े नियम और गंभीर बातों को आपके सामने रखने का .यह यात्रा जो आज 5 वर्ष से अनवरत चल रही हैं , पर समय के इस बिंदु पे अगर अभी कुछ भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए नियम न रखे ..तो

कुछ कठोर निर्णय न लिये गए तो ....
और उनका कठोरता से पालन न किया गया तो ...
किये गए श्रम का उतना परिणाम नही प्राप्त होगा ..

हमें जो भी उच्चस्थ दिशा निर्देश प्राप्त हुए हैं . और जो हमारा इतने दिन से इस ग्रुप को देख कर आकलन रहा हैं ..उसे ध्यान मे रखते हुए ..
इससे पहले की आप नियम पढ़े कुछ बाते पहले आत्म मंथन कर ले तभी सार्थकता रह पायेगी ..आपके श्रम की और हमारे श्रम की भी ..
क्योंकि साधना कोई हास परिहास का नही बल्कि सर्वाधिक गंभीर विषय या कर्म हैं तो ....

1. क्या आप एक आसन पर कम से कम २ १/२ घंटे तक स्थिर बैठ पाते हैं .?
2. क्या आपने गुरु मंत्र का कम से कम सवा लाख मंत्र का एक अनुष्ठान किया हैं ??
3. क्या आप ने सवा लाख चेतना मंत्र का जप किया हैं .??

4. क्या आप की सदगुरुदेव या सदगुरुदेव स्वयं द्वारा निर्दिष्ट परम्परा पर श्रद्धा हैं.??
5. क्या आपके मन मे हर हाल मे सदगुरुदेव का स्थान सर्वोपरि हैं, और उस स्थान पर किसी " तथाकथित स्वम्भू गुरु " बन बैठे को गुरु बनाने का मानस तो रख कर नही चले हैं या हैं .या श्रद्धा रख रहे हो ??

इन प्रशनो का उत्तर को पहले अपने मन मे मंथन कर ले .पहले चार बिंदु पर आपके उत्तर यदि ""हाँ "" मे हैं और पंचम बिंदु पर यह की सिर्फ आपके लिए सदगुरुदेव ही सर्वोपरि हैं और अन्य किसी भी ****तथाकथित स्वयम्भू गुरु***** के लिए कोई स्थान आपके मन मे नही हैं ,तभी आगे आने वाले नियम पढ़े ... क्यूंकि इस शब्द का बहुत गहन अर्थ है ... प्रकट तौर पर सदगुरुदेव द्वारा,मात्र तीन ही गुरु गृहस्थों हेतु निर्मित किये गए हैं,जो स्वयम्भू गुरु बना है इसका सीधा अर्थ ये है की वो इस सदगुरुदेव के इस निर्णय से सहमत नहीं है....अतः उनके समर्थकों और शिष्यों हेतु ये साधनाएं फलीभूत हो ही नहीं सकती है..ये हमें कठोरता के साथ कहा गया है..अतः इस बात को हृदयंगम कर ले...क्यूंकि कुछ लोगो की मनोवृत्ति या समझ को मैं क्या कहूँ...जो यहाँ ग्रुप में कहते हैं की गुरु भाई को ज्यादा मान दिया जा रहा है गुरु की अपेक्षा..तो उनकी बुद्धि की कुन्द्ता को मैं क्या कहू,अरे मैं चाहे आकाश पाताल एक कर दूँ रहूँगा तब भी बना रहना चाहूँगा शिष्य ही...दीक्षा देने की क्षमता मुझमे कभी नहीं आएगी...क्यूंकि पहले मैं ढंग से शिष्य ही बन जाऊं तो मेरा जीवन सार्थक हो जायेगा...| मैं तो सदैव भाई ही हूँ और मेरा ये सारा खट्टा मीठा ज्ञान मात्र मेरे सदगुरुदेव की कृपादृष्टि का परिणाम है मैं कोई स्वयम्भू गुरु नहीं और ना ही मुझे मन्त्रों या श्लोको या साधना विधान को समझाने के लिए पुस्तक देखने की जरुरत है...मैंने जो समझा है उसे आत्मसात किया है और उसे कई बार कार्यशाला में प्रत्यक्ष करके बिना किसी आडम्बर के अन्य गुरु भाई बहनों के समक्ष प्रमाणित भी किया है | उन मूर्खों को मैं क्या समझाऊं की इस भाई की बात उन्हें गलत लगती है पर दूसरा भाई जिसे तंत्र का क भी नहीं आता है और जो स्वयम्भू गुरु बने बैठे हैं,उनकी वाह वाह करने में वो पीछे नहीं हैं...| गुरु बनों किसने मना किया है गुरु बनने को,पर अपने बूते पर बिना निखिल नाम का सहारा लिए बनकर दिखाओ और साबित करो ऐसे शिष्यों को सामने लाकर जो की तंत्र को क्रियात्मक रूप में संपन्न करके दिखाए,जैसा मेरे सदगुरुदेव ने किया है और मैं जो कहता हूँ करके भी दिखा सकता हूँ,मुझे गर्व है की उन्होंने मुझे इस मार्ग पर गति दी है | उन मूढ़मतियों को ये नहीं समझ में आ रहा है की मैं तो सदैव भाई बनकर साथ हूँ पर वो उन तथाकथित ढोंगियों के साथ खड़े होकर कौन सा निखिल कार्य कर रहे हैं..जिनकी आँखें और चित्त ही मर चूका है...|

मैंने पाया है और इन्ही साधनाओं से पाया है और मेरा परिवार,मेरा पूरा जीवन,मेरे जानने वाले और इन सबसे बढ़कर मेरे सदगुरुदेव इस बात के साक्षी हैं की ये जूनून मैंने दिन ब दिन बढ़ाया ही है और तब परिणाम प्राप्त किये हैं | यदि आप भी इन्हें पूर्ण नियम और दृढ़ता के साथ विधान के साथ मनोयोग पूर्वक करेंगे तो आप भी मायूस नहीं होंगे..|

१. अब से जो भी उच्च कोटि के विधान जिनके बारे मे फेसबुक या ब्लॉग पर आएगा ,पर उनके बारे मे पूर्णता से उन्हें सिर्फ जो सदगुरुदेव जी से दीक्षित हैं या गुरु त्रिमूर्ति से दीक्षित हैं या अन्य उन किसी भी गुरु से दीक्षित हैं जो की हमारे सदगुरुदेव से दीक्षित ** नही** हैं ..उन्हें ही दिया जायेगा. ये साधनाएं सहज प्राप्य नहीं रही हैं,इन्हें कई बार परखा गया है अनुभूतियों की नुकीली चट्टानों पर,और हर बार इनका प्रभाव अद्भुत रहा है,इसलिए इन्हें व्यक्तिगत तौर पर ही उपलब्ध कराया जा रहा है,ताकि आप यदि

इन्हें पूर्ण मनोयोग से संपन्न करे तो सफलता का वरण कर इसका लाभ...स्वयं,स्व परिवार,समाज और राष्ट्र को प्रदान कर सके...

२. हर महीने आने वाली सात साधनाए के लिए बस 30 /40 ही यन्त्र बनबाये जा रहे हैं अभी तक यह देखने मे आया हैं कि किसी भी विधान के बारे मे जब ग्रुप मे आता हैं तो अधिकतम कमेन्ट 60 या 70 तक आते हैं जिनको यदि ध्यान से देख जाए तो मात्र 30 या 35 लोग ही किये होते हैं तब और यंत्र बनाने का क्या औचित्य ??

३. एक यन्त्र पर भले ही निर्माण की कीमत २० से ३० रुपये आये या कम /ज्यादा भी . पर एक एक इस प्रकार की अपने आप मे "विशिष्ट साधना " के लिए आवश्यक यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित , चैतन्य करना , शास्त्रीय मांत्रिक और तांत्रिक विधान पूर्णता के साथ समपन्न करना , आवश्यक कर्म कांड , हवन को बिना किसी त्रुटि के इस तरह से पूरे करना की सबंधित देव शक्ति पूर्णता के साथ सफलता भी दे सके , और इसमें समय और धन दोनों की आनिवार्यता होती है हीं .और इन प्रक्रियाओ को सम्पन्न करने मे हजारों रूपये का खर्च आता हैं . यह कोई आपके सामने बार बार कहने की बात या तथ्य नही हैं .

४. पर आपको निशुल्क यह यन्त्र और विधानक्यों उपलब्ध कराया जाए .... पर यह सब क्यों ?? आज कौन हैं जो यह सब कर रहा हैं . ..किसे चिंता हैं.... सिर्फ एक उदेश्य की अब आप भी सफल हो कर सामने आ सकें ..इन विधानों की श्रेष्ठता /उपयोगिता अब हम नही आप स्वयं प्रमाण बन कर दे ....सिर्फ लिख लिख कर आखिर कब तक ......और कि यह विधान हैं और वह विधान हैं पर दिया किसी को नही ...क्योंकि कोई उसके लायक उन्हें मिल ही नही रहा हैं .ऐसा कह कर ......कब तक अन्य लोगो कि तरह लोगों को भ्रमित किया जा सकता हैं . पर यह बात हम पर भी लागू हो .इस से पहले .अतः अब समय हैं कि ..अब हमारे कार्य का पहला परीक्षा काल प्रारंभ हो ....

५. अब समय हैं कि .जो साधनाए हम दे उसे .हम अपनी ओर से पूरा श्रम करे और शेष आपके हिस्से की मेहनत आप मनोयोग ..प्राण प्राण से करे
........और यह हर पल ध्यान मे रखें की गुरु भाई केबल विधान समझा सकते हैं ...पर सफलता केबल और केबल सदगुरुदेव ही दे सकते हैं.......अब आपकी सफलता ही हमारा कार्य का एक प्रमाण होगी .अतः निश्चय ही ..सब नही केबल कुछ जो साधना को करके सफल होना चाहते हैं .उनके लिए ही यह सब .... और हमारा कोई भी किसी भी प्रकार का उदेश्य या गुप्त उदेश्य नही हैं . .आज तक हमारी कथनी ही हमारा प्रमाण रहे हैं .

६. कभीं कभी यह मानना पड़ता ही हैं कि अगर हर चीज आसानी से उपलब्ध हो तो शायद उसका अर्थ उसकी गंभीरता समाप्त सी हो जाती हैं .अतएब इन साधनाओ को कैसे आपको दिया जाना हैं ?? यह भी विचारणीय हैं . इसके लिए हमने यही सोचा हैं कि कोरियर के माध्यम से सबंधित यन्त्र और सम्बंधित पूर्ण साधना विधि ,उन कुछ चुनिदा व्यक्तियों को जो सच मे साधना के प्रति समर्पित हैं या होना चाहते हैं ....उनके पते पर भेज दी जायेगी सिर्फ आपको कोरियर चार्ज ही देना होगा ...इसके बाद अभी भी ..अब अगर कोई भी स्वयं व्यक्तिगत रूप मे मिलकर और भी मार्गदर्शन पाना चाहता हैं तो (केबल एक उसी साधना के सन्दर्भ मे) तो सिर्फ और सिर्फ एक गुरु भाई की मर्यादानुसार हम उपलब्ध रहेंगे ..

७. महत्वपूर्ण तथ्य :: पर इन साधनाओ को देते समय यह भी ध्यान मे रख जायेगा की वह व्यक्ति विशेष का सदगुरुदेव के प्रति क्या रुख हैं .सिर्फ हमारे ग्रुप मे ही नही बल्कि अन्य ग्रुप मे भी ... क्योंकि यह देखने मे आया हैं की निखिल तत्व या शिष्य के प्रति जो आया जैसा आया लिखा जाता हैं क्योंकि शब्दों का क्या हैं ...जो मन आये लिखो ..... और यह उन ग्रुप का कार्य हैं पर लोग सब मौन रह कर दर्शक बने रहते हैं ...सभी पक्षों को मौन समर्थन देना यह तो ठीक नही हैं ...अतः निश्चय ही ऐसे लोग जो हर जगह मौन समर्थन देते रहते हैं उन तक साधनाए न ही पहुचे ये भी हमें बहुत ध्यान रखना हैं .

८. जिनको भी यह साधनाए दी जायेगी ,क्योंकि इस प्रक्रिया को हलका नही बनाना हैं तो उन्हें अगली साधनाए उपलब्ध कराने से पहले यह देख लिया जायेगा कि क्या वास्तव मे उन्होंने साधनाए की हैं या बस ...यह कैसे देखना हैं यह हमारा कार्य होगा .क्योंकि जितना कठोरता हमारे द्वारा रखी जायेगी उतनी ही सभावना सफलता प्राप्ति की सभावनाए आपकी होगी .भावनात्मक बातों के लिए इस साधनाओ के सन्दर्भ मे शायद अब कोई जगह नही होगी . अब जब बात साधना की होगी तो हम और आप दोनों पर ही नियम कठोरता से लागु होंगे .

९. यह स्पस्ट करना चाहता हूँ .कि प्राप्त हुए दिशा निर्देश के अनु सार ...जो भी साधनाए , निखिल अल्केमी ब्लॉग या निखिल अल्केमी फेसबूक ग्रुप पर उपलब्ध हैं वह केबल और केबल “तंत्र कौमुदी “ फ्री इ पत्रिका प्राप्त करने वालो को ही फली भूत होंगी ..

१०.   केबल भावनात्मक कमेन्ट लिखने वालो को या हमारे अपनों को भी ..इन साधना के लिए चुने जाते समय नही ......बल्कि जो सही अर्थो मे साधनाए करना चाहते हैं उसे ही यह उपलब्ध कराई जायेगी . .यह नियम भी कठोरता से पालन होगा .

११.   और यह साधनाए मजाक की वस्तु नही होगी .. को कोई भी हल्का सा विधान रख दिया ......न ही केबल प्रशंशा के लिए ....बल्कि जीवन परिवर्तन मे सक्षम होगी .

१२.   जिसे जो भी साधनाए मिलेंगी वह किसी अन्य को उसका विधान बिना अनुमति लिए नही बतायेगा

१३.   .जिनको भी यह साधनाए दी जायेगी उन्हें पहले से सूचित कर दिया जायेगा या तो उन्हें सिर्फ कोरियर का खर्च वहन करना होगा या व्यतिगत मिलने के अवस्था मे उनके अपने आने जाने खाने पीने की व्यवस्था का स्वतः ही भार वहन करना होगा.

मई माह की ७ साधनाएं जो १० जून तक प्रभावी है :-

१. आत्मगणपति साधना – तंत्र के उच्च ज्ञान तीक्ष्ण बुद्धि,स्मरण शक्ति और भगवान गणपति के दर्शन प्राप्त करने के लिए एक गोपनीय विधान .

२. तांत्रोक्त गुरु साधना – गुरु साधना का वो सोपान जिससे आप सीधे गुरु प्राणों से एकाकार हो जाते हैं. और चक्र जागरण की क्रिया प्रारंभ हो जाती है,तब भला क्या बाकी रह जाता है .

३. कनक माया साधना – लक्ष्मी की अजस्र प्राप्ति का अघोर विधान,जिससे लक्ष्मी बाध्य ही हो जाती है साधक के जीवन में रहने के लिए.

४. धी: सम्मोहन साधना – तिब्बती पद्दति से किया जाने वाला ऐसा प्रयोग जिससे मात्र १४ दिनों में आप का व्यक्तित्व पूर्ण आकर्षण क्षमता से युक्त हो ही जाता है, इसे अन्य सम्मोहन प्रयोगों में ना गिने.

५. सिद्ध सम्प्रेषण साधना- विचार सम्प्रेषण की अद्भुत क्रिया,जिसके द्वारा किसी भी नवीन क्षेत्र में रहने वाले सिद्ध्जनों से संपर्क कर उनकी प्रत्यक्ष कृपा,सहयोग और ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तथा प्रकाश युक्त छाया विहीन सूक्ष्म देह बनाने का पहला तथा अनिवार्य सोपान .

६. रसायनमेखला साधना – कायाकल्प और रस विज्ञानं की आधारभूत साधना जिसके द्वारा पारद विज्ञान के रहस्यों को आत्मसात कर पूर्ण सफलता पायी जा सकती है.

७. साबर औलिया साधना – इतर योनियों का सहयोग प्रदान करने वाली अद्भुत साधना.
===

Friends,

Now is the time to put forward very stringent rules and serious things in front of you.This journey has been continuously going on from last 5 years .But if we do not put some rules looking at the future then.....

Some strong decisions are not taken then .....

And they are not followed firmly then...

We will not get the desired result of our hard-work.

Keeping in the mind high lever orders which we have received and based on the analysis of groups from quite some time......

Before you read the rules, let's introspect yourself then only hard-work of both you and us will be fruitful.

Since sadhna is not the subject matter of laughter, it is a very serious issue then....

1. Can you sit stably (unmoved) on one aasan for at least two and half hours?
2. Have you done the anushthan of Guru Mantra of at least 1.25 lakhs?
3. Have you chanted chetna mantra 1.25 lakh times?
4. Have you got faith on Sadgurudev and tradition given by Sadgurudev?
5. Do you consider Sadgurudev supreme all the time and you do not have intention to make so called self-made gurus as your guru or have faith in them??

Please think about the answers of these questions in your mind. If the answers to first four questions are yes and for the last question, Sadgurudev is supreme for youand you do not have any place in your heart for so called Self-made gurus, then only read the rules given below.....Because it carries a deep meaning .....Visibly Sadgurudev has made 3 gurus for all householders. Whosoever has become self-made guru, it simply means that he/she does not agree with this decision of Sadgurudev..........Therefore for the supporters and disciples of them, these sadhnas can't be fruitful.....This has been told to us very stringently.....therefore imbibe this thing in your heart......Because what I can about the mentality of some people in the group......who are saying in the group that Guru Brother has been given more respect than Guru.....what I can say about the negativity in their mind.......whatever I may be able to do, but I will always wish to remain a disciple only.......ability to give Diksha will never come in me.......because first I should become a true disciple, then my life will become meaningful. I am always a brother and all this knowledge is only the blessing of my Sadgurudev. I am neither any self-made Guru nor I do not have need to see books to make you understand mantra, slokas or any sadhna process..... Whatever I have understood, I have imbibed that and have shown it to guru brothers and sisters in various workshops without any showoffs.How can I make those fools understand that they consider this brother as wrong and the person who does not even have the preliminary knowledge of tantra and have become self-made Guru, they leave no stone unturned appreciating them. Become gurus, who have opposed it but become on your own, without taking the assistance of name Nikhil

and prove it by bringing the disciples who can accomplish the tantra in practical way , the way my Sadgurudev has done. Whatever I say, I can show it by doing also. I am proud that he has initiated me in this path. These foolish people are not able to understand that I am always there as the brother but by standing with so called frauds, what sort of Nikhil work they are doing....who have become blind and whose hearts have died.

I have achieved and have achieved because of these sadhnas only. My family, my whole life, my acquaintances and most importantly my Sadgurudev are witness to the fact that this passion has increased day by day and then only I have achieved the results. If you all will also do this process by dedication and will follow the rules, you also will not be disappointed.

1) From now on, whenever any high-order sadhna process will come on Facebook or blog, it will be told fully only to those who either have taken Diksha from Sadgurudev or Guru Trimurti or from any Guru who have not taken Diksha from our Sadgurudev. These sadhnas have never been easily available. They have been tested multiple times on the stringent parameters of experiences and results have always been amazing. Therefore they are being made available on personal level, so that if you do them with full dedication, then after getting success you can provide the gains to yourself, your family, society and the nation.

2) Only 30-40 yantra are being made for 7 sadhnas which will be coming each month .It has been seen that whenever any sadhna process appears in the blog then maximum number of comments are 60 or 70.If we pay attention to them, they are made by 30-35 persons so there is no logic in making more yantras??

3) May be making of any yantra will cost only 30 to 40 rupees approximately but each yantra needed for these special sadhnas ,needs to be energised , instilledconsciousness , doing shastriy, mantric and tantric process on them, doing the necessary rites hawan without any errors so that associated lord can give you the complete success. This definitely requires both time and money and completing these processes requires thousands of rupees. This fact need not to be iterated again and again.

4) But why to make this yantra and process available to you free of cost? Who is the one doing like this today.....who is worried about your success..............so that you can be proof to supremacy of these process, not us.................just writing will not solve the purpose...and people can't be fooled by citing the various processes but not providing it to them giving the excuse that we are not able to find capable persons

for it.But this applies to us also. So this is time that examination of our work should start.

5) Now is the time that whatever sadhnas we give, we do the hard-work from our side and you do your part of hard-work by full dedication....

And always keep this in mind that Guru Brothers can only make you understand the process but the success can only be provided by Sadgurudev. Now your success will be the certificate of our work. Therefore definitely it is for not all but only those who want to be successful by doing sadhna. We do not have any secret agenda and our work is a proof to it.

6) We have to agree sometimes that the thing which is easily available, we do not understand its importance and its importance vanishes. Therefore how this sadhna needs to be given?? This is the point under consideration. For this we have thought that we will send the related yantra and related sadhna process via courier to all those chosen persons who are dedicated to sadhna field or willing to be.....Only they have to bear the courier charges. If after that also, someone wants to take guidance personally (only in relation to that particular sadhna), then we will be available only as a Guru Brother.

7) Important Point::But one more thing will also be kept in mind while giving these sadhnas that what is the attitude of that particular person towards Sadgurudev. Not only in our group but in other groups also. Because it has been seen in many groups that many things are written for Nikhil element or disciples as per their sweet will but people remain silent spectator after seeing this.....giving silent approval to all sides is not correct..... Therefore we have to keep in mind that these sadhnas should not reach the people who give the silent approval.

8) We do not have to take this sadhna process casually. Whosoever will be given these sadhnas, it will be seen before giving next sadhnas to them whether they have actually done the sadhnas or not. This will be done by us. The more stringent we are, more will be the chances of your success. There will probably be no place for emotional talks in context of sadhnas. When it is matter of sadhna, then the rules will apply both on us firmly.

9) One thing need to be clarified that as per the direction received....the sadhnas which are available either on Nikhil Alchemy blog or Nikhil Alchemy Facebook group will be fruitful only to those who get the e-magazine "Tantra Kaumadi".

10) There will be no time to choose those who write emotional comments or are close to us.........it will be made available to only those who really wants to do sadhna. This rule will also be followed stringently.

11) These sadhnas will not be matter of laughter..........nor it will be frivolous process...........nor it will be merely for appreciation. They will be capable of transforming your life.

12) Whosoever will get the sadhnas, they will not tell the process to anyone without seeking permission.

13) Whosoever will be given sadhna, they will be informed in advance. Either they have to bear the courier charges and in case of personal meeting, they would have to bear the travel and food charges.

Here are the 7 sadhnas of May which are effective up till 10 June:-

1) AatmGanpati Sadhna- Sadhna to attain higher knowledge of Tantra , supreme memory power and to get Ganpati Darshan.

2) Tantrokt Guru Sadhna–That step of Guru Sadhna where you directly become one with your Guru and the process of Chakra Jagran starts. Then what is left.

3) Kanak Maya Sadhna-Aghor process to attain Lakshmi whereby Lakshmi is compelled to remain in the life of sadhak.

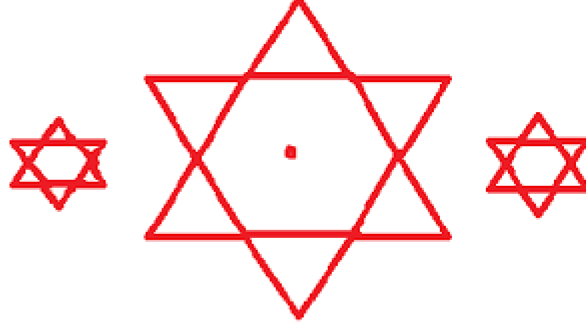
4) Dheeh Sammohan Sadhna–The process done by Tibet Padhati by which your whole personality becomes attractive in just 14 days. Do not count this process as just an another Sammohan process.

5) Siddh Sampreshan Sadhna–the amazing process to transmit thoughts by which any great siddhs living in new area can be contacted and we can get their blessing , assistance and knowledge from them. This is the first and necessary step for lightfull shadow less subtle body.

6) Rasayan Mekhla Sadhna–The basic sadhna for Kayakalp and Ras Vigyan by which we can attain success by imbibing the secrets of Parad Vigyan.

7) Sabar Ooliya Sadhna– Amazing sadhna to get the assistance from ittar yonis.

बीजोक्त तन्त्रम्–विरूपाक्ष कल्प तंत्र उद्धुत त्रयी कल्प(आसन सिद्धि,अक्षत तंत्र,मेधातंत्र)२-आसन सिद्धि



प्रद्युत्मान तन्नोपरि उद्धरित: नूतन सृजःउत्तपत्ति सहदिष्ठ:

ब्रह्मांडो सहपरि सहबीज: अक्षतान् |

मुमुक्षताम स्थिरताम वै: दिव्यः वपुः मेधा:

पूर्णम पूर्णै सपरिपूर्ण: आसन: दिव्यताम सिद्धि: ||

"विरूपाक्ष कल्प तंत्र" से उद्धृत त्रयी कल्प का प्रथम महत्वपूर्ण अंग है आसन सिद्धि | आसन शब्द का प्रयोग विविध अर्थों में किया जाता है यथा...बैठने की पद्धति,भूमि, तथा वह स्थान या माध्यम जिसके ऊपर बैठकर आध्यात्मिक या भौतिक कार्य संपन्न किये जाते हैं |

सिद्ध विरूपाक्ष ने इस शब्द को नवीन अर्थ प्रदान किया है...उन्होंने बताया की साधक को किस माध्यम का किस तरह प्रयोग करना चाहिए..इसका ज्ञान अनिवार्य है,इस पद्धति का पूर्ण ज्ञान ना होने पर वह माध्यम मात्र माध्यम ही रह जाता है,अब उसके प्रयोग से साधक को उसके तंत्रकार्य में अनुकूलता मिलेगी ही ऐसा कोई प्रावधान नहीं है |

“पूर्णम पूर्णै सपरिपूर्ण: आसन: दिव्यताम सिद्धि:” अर्थात आसन मात्र आसन न हो अपितु उसमे पूर्ण दिव्यता का संचार हो और वो दिव्यता से युक्त हो तभी उसके प्रयोग से साधक की देह दिव्य भाव युक्त होती है और तब यदि उसका भाव या साधना पक्ष उसे पूर्णत्व के मार्ग पर सहजता से गतिशील करा देता है और साधक को पूर्णता प्राप्त होती ही है | यहाँ **पूर्णम** का अर्थ भी यही है की माध्यम पूर्णत्व गुण युक्त हो तभी तो पूर्णत्व प्राप्त होगा |

तंत्र शास्त्र कहता है की दिव्यता ही दिव्यता को आकर्षित कर सकती है |यदि साधक दिव्य तत्वोव के सामीप्य का लाभ लेता है या संपर्क में रहता है तो उसकी देह में स्वतः दिव्यता आने लगती है,तब ऐसे में वातावरण में उपस्थित वे सभी नकारात्मक अपदेव शक्ति, अदृश्य यक्ष,प्रेत आदि आपके मंत्र जप को आकर्षित नहीं कर पाते हैं और आपकी क्रिया का पूर्ण फल आपको प्राप्त होता ही है | हममे से बहुतेरे साधक ये नहीं जानते हैं की जब भी वे किसी महत्वपूर्ण दिवस पर साधना का संकल्प लेते हैं और जैसे जैसे साधना का समय समीप आता है उनके मन में साधना और इष्ट के प्रति नकारात्मक विचार उत्पन्न होते जाते हैं | या यदि कडा मन करके वे साधना संपन्न करने हेतु बैठ भी गए तो कुछ समय बाद उन्हें ये लगने लगता है की बाहर मेरे मित्र अपने मनोरंजन में व्यस्त हैं और मैं मूर्ख यहाँ बैठा बैठा पता नहीं क्या कर रहा हूँ ?

क्या होगा ये सब करके ?

आज तक तो कुछ हुआ नहीं,अब क्या नया हो जाएगा ?

हमें ये ज्ञात नहीं है की आसन यदि पूर्ण प्रतिष्ठा से युक्त ना हो तो हम चाहे कितने भी गुदगुदे आसन पर या गद्दे पर बैठ जाएँ,हम हिलते डुलते रहेंगे और हमारे चित्त में बैचेनी की तीव्रता बनी रहेगी | और इसका कारण हमारे शरीर का मजबूत होना नहीं है अपितु भूमि के भीतर रहने वाली नकारात्मक शक्तियां सुरक्षा आवरण विहीन हमारी इस भौतिक देह से सरलता से संपर्क कर लेती हैं और तब उनके दुष्प्रभाव से हमारा चित्त भी बैचेन हो जाता है और शरीर भी टूटने लगता है और वे सतत हमें साधना से विमुख होने के भाव से प्रभावित करते रहते हैं| और जब ऐसी स्थिति होगी,आप व्याकुल मन और अस्थिर शरीर से कैसे साधना करोगे और कैसे आपको सफलता मिलेगी | और यदि आप आसन से अलग हो जाते हो तो पुनःना सिर्फ आपका शरीर स्वस्थ हो जाता है बल्कि आपका चित्त भी प्रसन्न हो जाता है |

तभी **सदगुरुदेव** हमेशा कहते थे की इस धरा पर बहुत कम गिने चुने स्थान बचे हैं ,जहाँ पर बैठकर उच्च स्तरीय साधना की जा सकती है,ऐसी साधनाएं या तो सिद्धाश्रम की दिव्य भूमि पर

संपन्न की जा सकती है या फिर शुन्यआसन का प्रयोग कर,बाकी ऐसी कोई जगह नहीं है जो दूषित ना हो | यहाँ तक की भी शमशान साधना में भी तब तक सफलता की प्राप्ति संभव नहीं हो सकती जब तक की उस साधक को **आसन खिलने** की पद्धति का भली भांति ज्ञान न हो | एक साधक के द्वारा प्रयुक्त सभी साधना सामग्री का विशिष्ट गुणों से युक्त होना अनिवार्य है अन्यथा सामान्य सामग्रियों में यदि वो विशिष्टता उत्पन्न ना कर दे तो उसके द्वारा संपन्न की गयी साधना क्रिया सामान्य ही रह जायेगी | यदि हम स्वगुरु या किन्ही सिद्ध विशेष का आवाहन करते हैं तो प्रत्यक्षतः उन्हें प्रदान किये गए आसन भी पूर्ण शुद्धता के साथ और दिव्यता से युक्त होने चाहिए |

इसके लिए आप एक नया रंगबिरंगा ऊनी कम्बल ले सकते हैं और इसे सिद्ध करने के पश्चात इसके ऊपर आप अपने वांछित रंग का रेशमी या ऊनी वस्त्र भी बिछा सकते हैं |

मंगलवार की प्रातः पूर्ण स्नान कर लाल वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठकर भूमि पर तीन मैथुन चक्र का निर्माण क्रम से कुमकुम के द्वारा कर ले | १ और ३ चक्र छोटे होंगे और मध्य वाला आकार में थोडा बड़ा होगा | मध्य वाले चक्र के मध्य में बिंदु का अंकन किया जायेगा बाकी के दोनों चक्र में ये अंकन नहीं होगा | मध्य वाले चक्र में आप उस कम्बल को मोड़कर रख दे और अपने बाए तरफ वाले चक्र के मध्य में तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित कर ले और दाहिने तरफ वाले चक्र में गौघृत का दीपक प्रज्वलित कर ले,और हाँ दोनों दीपक चार चार बत्तियों वाले होने चाहिए | अब गुरु पूजन और गणपति पूजन के पश्चात पंचोपचार विधि से उन दोनों दीपकों का भी पूजन करे,नैवेद्य की जगह कोई भी मौसमी फल अर्पित करे |

इसके बाद उस कम्बल का पंचोपचार पूजन करे | तत्पश्चात कुमकुम मिले १०८-१०८ अक्षत को निम्न मंत्र क्रम से बोलते हुए उस कम्बल पर डाले |

ऐं (AING) ज्ञान शक्ति स्थापयामि नमः

ह्रीं (HREENG) इच्छाशक्ति स्थापयामि नमः

क्लीं (KLEENG) क्रियाशक्ति स्थापयामि नमः

तत्पश्चात निम्न ध्यान मंत्र का ७ बार उच्चारण करे और ध्यान के बाद जल के छींटे उस वस्त्र पर छिडके –

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता |

त्वं च धारय माम देवी: पवित्रं कुरु च आसनं ||

ॐ सिद्धासनाय नमः

ॐ कमलासनाय नमः

ॐ सिद्ध सिद्धासनाय नमः

इसके बाद निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प मिश्रित अक्षत को उस कम्बल या वस्त्र पर ३२४ बार अर्पित करे |

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं सप्तलोकं धात्रि अमुकं आसने सिद्धिं भू: देव्यै नमः ||

OM HREENG KLEENG AING SHREEM SAPTLOKAM DHAATRI AMUKAM AASANE SIDDHIM BHUH DEVAYAI NAMAH ||

ये क्रम गुरूवार तक नित्य संपन्न करे | जहाँ पर अमुक लिखा हुआ है वहाँ **अपना नाम** उच्चारित करना है |अंतिम दिवस क्रिया पूर्ण होने के बाद किसी भी देवी के मंदिर में कुछ दक्षिणा और भोजन सामग्री अर्पित कर दे तथा कुछ धन राशि जो आपके सामर्थ्यानुसार हो अपने गुरु के चरणों में अर्पित कर दे या गुरु धाम में भेज दे तथा सदगुरुदेव से इस क्रिया में पूर्ण सफलता का आशीर्वाद ले | अद्भुत बात ये है की आप इस कम्बल को जब भी बिछाकर इस पर बैठेंगे तो ना सिर्फ सहजता का अनुभव करेंगे अपितु समय कैसे बीत जाएगा आपको ज्ञात भी नहीं होगा,दीर्घ कालीन साधना कही ज्यादा सरलता से ऐसे सिद्ध आसन पर संपन्न की जा सकती है और आप

इसके तेज की जांच करवा कर देख सकते हैं की कितना अंतर है सामान्य आसन में और इस पद्धति से सिद्ध आसन में | आप ऐसे दो आसन सिद्ध कर लीजिए और एक आसन आप अपने गुरु के बैठने के निमित्त प्रयोग कर सकते हैं | आपको दो बातों का ध्यान रखना होगा |

१.इन आसनों को धोया नहीं जाता है |

२. इन पर हमारे अतिरिक्त कोई और नहीं बैठ सकता है,अन्यथा उसकी मानसिक स्थिति व्यथित हो सकती है | अतः यदि किसी और के निमित्त आसन तैयार करना हो तो अमुक की जगह उसका नाम उच्चारित कर आसन सिद्ध करना होगा | स्वयं के अतिरिक्त जो हम गुरु सत्ता या सिद्धों के आवाहन हेतु जो आसन प्रयोग करेंगे उसे सिद्ध करने के लिए अमुक की जगह **ज्ञानशक्तिं** का उच्चारण होगा|

ये हमारा सौभाग्य है की हमें ये विधान उपलब्ध है,आवशयकता है इन सूत्रों का साधना में प्रयोग करने की और साधना की सफलता प्राप्ति के मार्ग में जो बाधाएं आ रही है,उन्हें समाप्त कर उन पर विजय प्राप्त करने की |

अगले लेख में अक्षत तंत्र की जानकारी आप भाई बहनों को मैं देने का प्रयास करुँगी,तब तक के लिए ...

==

PradyutmaanTannopriUdhritahNuutanSrijah

UtatptatiSehdishtahBrahmaandoSehpriSehbeejahAkshtaan |

MumukshtaamSthirtaamvahidivyahvapuhmedhaah

Poornampoornespripoornahaasanhdivyataam siddhi ||

Aasan Siddhi is the first important part of the Trayi kalp excerpted from "Virupaaksh Kalp Tantra".The word aasan is used in various contexts like .....Sitting style, land or that place or medium on which spiritual and materialistic works are done.

The great Saint Virupaaksh has given a new meaning to this word....He told that sadhak should be fully aware of how medium is to be used .It's knowledge is must. Medium remains medium only in absence of complete knowledge of this padhati. Now using this medium will definitely favour sadhak in tantric process, there is no such provision.

"Poornampoornespripoornahaasanhdivyataam siddhi" meaning that aasan should not be merely a aasan rather whole divinity should be fully embedded in it and it should be combined with divinity, then only after using it , body of sadhak gets combined with Divya bhaav and then his sadhna element propels him easily on the way to completeness and sadhak definitelygets completeness. Here "Poornam" also means that medium should be complete, only then sadhak can attain completeness.

Tantra scripture says that only divinity can attract divinity. If sadhak takes the benefit from proximity to divine element or remains in contact with it, then divinity starts coming in his body. In such an environment all negative forces, invisible prets (ghosts) and yaksha etc. are not able to attract mantra jap and one gets the complete results from the process. Most of sadhaks among us do not know the fact that whenever they take resolution to do sadhna on any important day and as sadhna time approaches, negative thoughts about sadhna and Isht (deity) starts arising in his mind. And if somehow he sits to complete sadhna, then after some time he starts getting the feeling that outside my friends are busy in entertaining themselves and what I the fool am doing here?

What will I get after doing this?

If nothing has happened up till now, then what new will happen now?

We do not know that if aasan is not fully energised then whether we sit on very elastic aasan or mattress, we will always be moving here and there and the severe

restlessness will remain in our mind. And the reason for it is not that our body is not strong rather all the negative forces present in the earth can easily come in touch with physical body, which is without the security cover and due to bad influence of them our mind gets restless and body ache starts creeping in and all these continuously start influencing us to move away from sadhna. Insuch an condition, how will you do sadhna by anxious mind and unstable body and how will you get success? And when you leave the aasan, then not only your body becomes healthy but also you start felling happy.

That's why Sadgurudev used to say there are only very few places left on the earth where high-order sadhnas can be done. These sadhnas can be done only on the divine land of Siddhashram or by using Shunya Aasan (aasan in air), no other land is there which is not polluted (impure).In shamshaan sadhna also, getting success in not possible until and unless sadhak is not aware of padhati of aasan khilan.All the sadhna articles used by the sadhak should necessarily be combined with special qualities otherwise if sadhak is not possible to impart exceptional qualities in it, then the sadhna process done by him will only remain normal only. If we do the Aavahan of our guru or any special saint then the aasan provided to them directly should be fully pure and divine.

For this, you can take one new woollen blanket and after accomplishing it, you can lay your desired coloured silky or woollen cloth on it.

On Tuesday morning, after taking bath, wear red clothes and sit on red aasan and construct three maithun chakra in sequence(as given above in diagram) by kumkum. First and third chakra will be small in size and the middle one will be little larger in size. Bindu (point) will be written in the centre of middle chakra. It will not be written in rest of two chakras. Fold the blanket and keep it in the middle chakra and lighten the lamp of Til oil in the middle of the chakra present on your left hand side and lighten the lamp of cow ghee in the middle of chakra present on your right hand side. Both these lamps should have four battis (piece of cotton) each. Afterdoing Guru poojan and lord Ganpati poojan, do the poojan of both the lamps by panchopchar method. Offer any seasonal fruit as navidya.

After that do the panchopchar poojan of that blanket. Then offer 108-108 kumkum mixed rice on the blanket while chanting the mantras in the sequence given below.

AING GYAN SHAKTI STHAPYAAMI NAMAH

HREENG ICHHASHAKTI STHAPYAAMI NAMAH

KLEENG KRIYASHAKTI STHAPYAAMI NAMAH

Then, chant the below dhayan mantra 7 times and after meditation, sprinkle the water on that cloth.

Om PrithviTvayaDhritaLoka Devi TvamVishnunaDhrita |

Tvam Ch DharayMaamDevihPavitramKaru Ch Aasanam ||

Om SiddhaasanayNamah

Om KamlaasnaayNamah

Om Siddh SiddhaasanayNamah

After that, offer flower mixed rice on that blanket or cloth 324 times while chanting the following mantra.

OM HREENG KLEENG AING SHREEM SAPTLOKAM DHAATRI AMUKAM AASANE SIDDHIM BHUH DEVAYAI NAMAH ||

Do this process till Thursday.Where "Amuk " is written , you have to pronounce your name .On the last day, after completing the process offer some dakshina or food in any Devi temple and offer some money(as per your capacity) on the lotus feet of Guru or send it to Gurudham and pray to Sadgurudev for success in this process. Amazing thing is that whenever you will sit on this blanket, you will be at ease and how the time will pass by, you will never know. Any long- duration sadhna can be done on this accomplished aasan far more easily and you can test the aasan's intensity to see how much is the difference between normal aasan and the aasan accomplished by this process. Accomplish such two aasans and you can use one aasan for your guru to sit.

You have to keep two things in mind:

1) These aasans are never washed.
2) On them, except us, no one can sit otherwise his/her mental condition can deteriorate. Therefore if we have to prepare the aasan for somebody else, then we have to accomplish the aasan by using his/her name in place of Amuk. To accomplish the aasan for the purpose of Aavahan of Guru and saints, we have to use Gyanshaktim instead of Amuk.

We are fortunate enough to have such process.What is needed is to use such principles in our sadhna and to combat all the obstacles in our sadhna path and emerge as victorious.

In next article, I will try to give you information about Akshat Tantra, up till then.............

'निखिल प्रणाम'

'जय सदगुरुदेव'

* * * *ROZY NIKHIL* * * *

****NPRU****

for our facebook group-
http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

Posted by Nikhil at 2:49 AM 6 comments:

Labels: TANTRA SIDDHI, VIGYAAN VA TANTRA BHED

Wednesday, April 25, 2012

मनोविकारो को दूर कर मनोकामना पूर्ति मे सहायक एक अद्भुत सरलतम विधान ....

तंत्र एक दर्शन नही हैं..... न ही सिद्धांत हैं..... न ही इसकी बात करता हैं बल्कि यह तो एक विधि सामने रखता हैं कि ऐसा करने पर इसका परिणाम यह होगा ..और साथ ही साथ यह जीवन की किसी भी स्थिति को न नकारता हैं ...... न ही उसे घृणा कि दृष्टी से देखता हैं बल्कि उसमे कैसे दिव्यता लायी जाए..... कैसे इसी शरीर को जिसे कतिपय घृणा की दृष्टी से देखते हैं .....परम तत्व तक पहुँचाने का एक रास्ता बना दिया जाए . तंत्र एक महासागर हैं अनेको प्रकार की धाराए इसमें मिलती गयी और आज इसकी शाखाए ना मालूम कितनी हैं.

तंत्र मानव जीवन की कमियों को समझता हैं और उससे से भागने को प्रोत्साहित नही बल्कि उसे समझने का एक तरीका ..... एक दृष्टी कोण ..एक मानस .... सामने रखता हैं कि भागो नही जानो ..समझो और मुक्त होते जाए ..तंत्र यह स्वीकार करता हैं कि मानव जीवन पर अनेको पूर्व जीवन की कमियों का प्रभाव हैं .और काम क्रोध जो भी हैं वह आत्मा के मूल भूत सौंदर्य को छुपा ले रहे हैं .

तंत्र दमन का पक्षधर नही हैं .वह यह जानता हैं कि उर्जा का कोई भी रूप फिर चाहे वह यह हो या वह ..अगर दमित किया गया गया तो कहीं न कहीं से वह फिर प्रगट होगा है अतएव कहीं ज्यादा उचित होगा कि उसे रूपांतरित कर दिया जाए जीवन की उर्ध्व मुखी दिशा कि ओर ...

तंत्र काम भावना को हीन दृष्टी से नही देखता बल्कि उसकी अतितेरिकता का विरोधी हैं .तंत्र सामने रखता हैं कि यही काम उर्जा जो की सामान्य मानव मे अधोमुखी हैं कैसे उसे उर्ध्व मुखी कर दिया जाए . यह काम भावना को नष्ट करने की बात नही करता क्योंकि यह जानता हैं कि यही तो कुण्डलिनी शक्ति हैं बस इसकी दिशा को परिवर्तित करना हैं .क्योंकि अगर ऐसे ही नष्ट कर दिया गया तो मानव जीवन और निर्जीव निस्तेज सा रह जायेगा जीवन की सारी खुशियाँ उमग , प्रसन्न ता समाप्त हो जायेगी . जीवन मे जो भी उत्साह की अवस्था हैं जो प्रगति ...वह इसी के कारण हैं . ठीक यही स्थिति क्रोध के साथ हैं बिना क्रोध तत्व के जीवन तो रीढ़ विहीन केचुए के सामान हो जायेगा .. तो यह भी स्थिति तंत्र को स्वीकार नही हैं .

तंत्र स्वीकारता को बहुत महत्त्व देता हैं ....कि ऐसा हैं तो हैं ..तो हैं...... .अब कर लिया स्वीकार अब ... जो भी परिणाम सामने आये .वह भी स्वीकार हैं .पूरे मन से .... पूरे प्राण से.... पूरी आत्मा से.... पूरे ह्रदय से ... पर इस स्वीकारिता की आड़ मे कोई उछ्हल्खता को बढ़ावा नही देता हैं .कि इसके आड़ मे जो मन चाहे सो करते जाए ..

आज का साधक सभ्य हैं सुसंस्कृत हैं और इस विपरीत वातावरण मे भी वह जब साधना के लिए बैठ्ता हैं तो यदि काम क्रोध अति मे ... उसके सामने आ जाते.... किसी मे इसकी मात्रा कम होगी तो दूसरे तत्व की अधिक ..पर परिणाम वही की साधना मे बैठ ही नही पाए या अधूरे मे ही छोडना पड़ी ..

अब अगर हर समस्या को दूर करने के लिए की एक एक साधना करना पड़े तो ...रास्ता बहुत ही बोझिल सा हो जायेगा ,हालाकि वस्तु स्थिति इसके विपरीत ही हैं . समय दोनों रास्तों मे उतना ही हैं . बस मार्ग थोडा सा अलग अलग हो जाते हैं .

तब क्या किया जाए ????

बस मान मसोस कर बैठा रहा जाए ..क्योंकि ..जब आप कुछ भी करने को उठते हैं तो प्रकृति सबसे पहले आपके सामने ऐसी विपरीत परिस्थितियां रखती हैं ..क्योंकि जो शक्तिशाली होगा वही जीवन युद्ध या साधना समर मे टिकेगा ..

अब हर ची ज के लिए मंत्र जप तो ठीक नही हैं ..और वह भी तब जब समय का अत्यधिक अभाव हो ... और ऐसे समय एक विज्ञानं हमारे सामने आता है जिसको हमने जाना समझा तो हैं पर उसकी उच्चता से सभी अनिभिग्य हैं ..वह हैं***** यन्त्र विज्ञानं .*****..

और यह यन्त्र हैं क्या ???

किसी भी नाम का उच्चारण करने पर ..किसी भी देव वर्ग का आवाहन करने पर ...ब्रम्हाडीय शक्ति से सबंधित मंत्र जप करने पर जो आकृति बनती हैं जिसमे उन् शक्तियों से सबंधित सभी उप् शक्तियां भी होती हैं उस ज्यामितीय आकृति को यन्त्र कहा जा सकता हैं . अब निश्चय ही प्राण प्रतिष्ठा और अन्य विधान तो हैं ही पर कुछ विधान तो इतने सरल हैं की ....

मतलब एक से एक अ द्भुत यन्त्र जिनके बारे मे कभी तथ्य सामने आये तो व्यक्ति शायद जीवन भर भी विश्वास न कर पाए .. वह भी स्वयं सिद्ध ....मतलब साधक को जप करना ही ना पड़े ..

अभी तो इस विज्ञानं के अमूल्य रत्न आना बाकी हैं ...इस विज्ञानं से भी आपका परिचय कार्य जाएगा ही ...आने वाले तंत्र कौमुदी के किसी ही अंक मे ..

आज एक ऐसा ही यन्त्र आपके सामने .. जिसको सिद्ध करने का कोई विधान नही बस आप किसी भी कागज मे बनाकर अपने साधना कक्ष मे रख दें .और कोई भी विधान् नही परिणाम आप स्वयं अनुभव करेंगे . हाँ किसी शुभ दिन इसे बना ले तो कहीं ज्यादा उचित होगा ..... पर ऐसा क्या हैं इसमें .. जो यह मनोकामना भी पूर्ति करदेगा .. तो देखें इस यन्त्र की रचना को ..

ॐ********शब्द सारे विश्व का ....परम शक्ति ... और सभी का उद्गम हैं .. तो

ह्रीं****** शब्द को देखें यह ह्रदय के आकार ही प्रतीक होता हैं और इसका निवास स्थान भी ह्रदय कमल मतलब अनाहत चक्र हैं. तो

ऐं *** शब्द को देखे यह भी गले जैसा दीखता हैं तो इसका स्थान विशुद्ध चक्र हैं . तो

क्लीं *** शब्द नाभि के जैसा लगता हैं , तो इसका स्थान नाभि चक्र मतलब मणिपुर चक्र हैं .

इस तरह से हैं आश्चर्य कि बात यह हैं की बीज मंत्रोकी संरचना देखिये किस तरह सिर्फ इनके लिखने के ढंग से यह बताया जा सकता हैं कि यह किन किन स्थानों से जुड़े होंगे या स्थान पर स्थापित हैं .इन विशिष्ट बीज मंत्रो से युक्त होने के कारण यह साधक कि मनो कामना पूर्ति मे सहायक हैं .

क्योंकि तंत्र मे कोई भी बात या तथ्य उपेक्षणीय नही हैं . जो विज्ञानं सभी मे दिव्यता देखता हैउसी ने हर अक्षर मे मे विशिष्ट ता देखी हैं . अगर साधक जानने का इच्छुक हो तो ..

इस यन्त्र का निर्माण या लेखन किसी भी शुभ दिन कर ले ,कैसे करना यह बाते कई कई बार पूर्व के लेखों बताई जा चुकी हैं तो पुनः उल्लेख करना उचित नही हैं ..

इस सरल से प्रयोग को कर के देखें ..और लाभ उठाये ...

====================================

Tanta is not a philosophy.........not a principle..............neither it talks about it ,rather it puts the process forward whereby we can get the results ....and to add to that , it does not ignore any condition of life.........nor it see them with contempt rather how to bring about divinity in it..........how to make our body the way to reach supreme element ,which we see with contempt. Tantra is a very big ocean, various streams have been added to it and today no one can say how many branches it has.

Tantra understands the shortcomings of life and it does not encourage us to run away from them rather it suggest one way ....one attitude.......one mind-set to understand, not to run.........understand it and get rid of it.Tantra accepts the fact that there is influence of shortcoming of various past lives on human life.... and the kaam, anger whatever they are, they are hiding the basic inherent beauty of soul.

Tantra never favours suppression. It knows very well that any form of energy whatever it may be ...if it is suppressed , it will definitely emerge in some way or other, therefore it will be much better to transform it in higher direction of life.....................

Tantra never sees the sexual feeling with inferiority point of view rather it only opposes the excess of it.Tantra says how to make sexual energy directed upwards which is directed downwards in common man. It does not talk about destroying the sexual feeling because it knows this itself is the kundalini power (serpent power) ,just its direction has to be changed because if it is destroyed then human life will become spiritless, it will wither away.......whole joy ,happiness of life will vanish . All the joy and progress of life is due to this power only. Same is the condition with anger .Without anger; life will become spineless like that of earthworm.......so this condition is also not accepted by Tantra.

Tantra gives very high importance to acceptance....................that if it is like this then ok ......if we have accepted it ....whatever may be the consequences, that are also accepted with full mind, full soul, full heart. However in the guise of acceptance, it is not to promote any disharmony that in guise of it, we keep on doing whatever we want to.

Sadhak of present times is well-mannered, civilized and whenever he sits for sadhna in this unfavourable environment, then if kaam, anger is in excess, it comes in front of him. A person may have any of them in deficiency; he might have any other shortcoming in excess..... But ultimately the result is the same that either he is not able to sadhna or he is not able to complete the sadhna.

Now if we have to do sadhna every time to get rid of every problem then the path will become burdensome. However the actual condition is actually opposite of it.Both the ways consume same amount of time but only the paths are different.

Now what we can do?

Should we sit idle.....................because...........whenever we get up to do something then nature first puts forward the unfavourable circumstances in front of us.........Because only the powerful will survive in the battle of life and sadhna ....

Now to chant mantra for everything is not correct especially when we are facing scarcity of time....and at this time one science comes to our rescue, the science which we know but we are unaware of its supremacy. That science is Yantra Science.

And what is this Yantra?

The image which is formed after pronunciation of any name, after Aavahan of any deva, after chanting the mantra related to any universal power and which contains all the sub power related to that power is called Yantra. Now though we have Pran-Prathishta (Energizing) process and other process, but several procedures are so much easy that......

Meaning amazing yantras regarding whom if the facts are revealed then people may find it hard to believe ....that too self-accomplished........meaning that sadhak does not even have to chant the mantras.

Precious jewels of this science is yet to be revealed................You all will be introduced to this science........in any of the coming editions of Tantra Kaumadi.

Today , let's see one of such yantra ....no process to accomplish (siddh) this yantra, just form it on piece of paper and keep it in sadhna room .....Nothing more need to be done, you yourself will experience the results. It would be much better if it is made on any auspicious day.................but what is so special about it.............which will fulfil your wish too...........let's look at the design of this yantra.

ॐ*********(OM) Supreme power of whole universe ....and origin of everything.......then

ह्रीं****** (Hreem) If we see it, it appears to be in form of Heart and it's residing place is also lotus heart meaning Anahat Chakra.

ऐं *** (Aim)looks like the throat ,it's place is Vishudha Chakra.

क्लीं ***(Kleem) looks like Navel and it's place is Navel Chakra (Manipur Chakra).

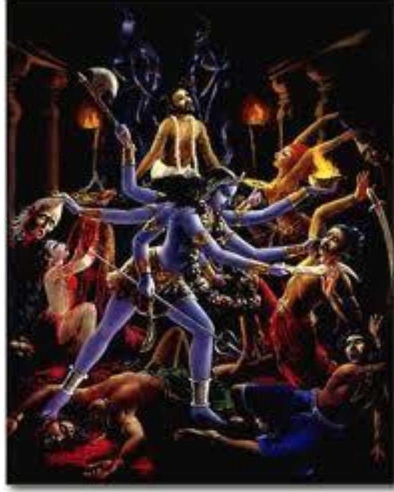
Amazing thing is about the design of these beej mantras.....just by way of writing one can tell about the place where they are associated with or where they are established. Being in combination with these special beej mantras, it helps in fulfilling the wishes of the sadhak.

Because in tantra, anything or any fact is not worth ignoring. The science which sees divinity in everything, it has seen the specialty in every alphabet, if sadhak is willing to know it......

Construct or write this yantra on any auspicious day. How to do it has already been told in the previous articles .To repeat it again will not be correct.

Do this easy process and get the benefits.

भैरवी कल्पुद्धरित त्रैलोक्य विजय काली साधना (BHAIRAVI KALPUDDHRIT TRAILOKYA VIJAY KAALI SADHNA)



गुप्त तंत्र ग्रंथो मे हमारे ऋषियो ने जो विधान दिये थे वह अपने आप मे रहस्यों से परिपूर्ण थे. तंत्र जगत का साहित्य कई रूप से गुढ़ रहा है तथा उसमे जो विधान दिये है वह भी अत्यधिक गुप्त रूप से लिखे गए थे ताकि अनाधिकारी व्यक्ति उसका दुरूपयोग ना कर सके. इस प्रकार जब यह साहित्य को समजने वाले लोग ही नहीं रहे तब तंत्र साधनाओ की अवलेहना हुई और इस प्रकार तंत्र साहित्य का एक बहोत ही बड़ा भाग लुप्त हो गया. और इन सब साहित्य को मिथ्या नाम दे दिया गया. ज़रा तटस्थ भाव से सोचे की जब नोट या कलम नहीं थि, उस समय ताड़पत्री, विविध पदार्थो के पर्ण, चर्म, धातु जेसे विविध पदार्थो पर अत्यधिक कष्ट और श्रमसाध्य लेखन कई प्रकार की स्याही बना कर हमारे ऋषियो ने लिखा. उसके पीछे उन लोगो का क्या व्यक्तिगत चिंतन हो सकता है? लेकिन पाश्चात्य संस्कृति से चकाचौंध हो कर हमने खुद का पतन करना शुरू कर दिया. खेर, लेकिन कई ग्रन्थ काल के थपेडो से भी सुरक्षित बचाए गए जो की कई तांत्रिक मठो और तंत्र ज्ञाताओ के पास सुरक्षित रहे. ऐसे अप्रकाशित ग्रंथो मे से एक है "भैरवी तंत्र" कई हज़ार श्लोको का यह ग्रन्थ अपने आप मे देवी साधनाओ के लिए बेजोड है. इसके कई पटल अपने आप मे पूर्ण तंत्र है जिसमे से एक पटल या भाग है "काली कल्प". यह कल्प देवी काली की उपासना के लिए बेजोड है. जिसमे देवी सबंधित साधन एवं कवच दिया गया है. लेकिन यह कवच भी अपने आप मे अत्यधिक रहस्यों से परिपूर्ण है. यह कवच मात्र कवच नहीं लेकिन विविध ध्यान मंत्र तथा साधन मंत्रो का समूह है. जिसमे एक से एक बेजोड मंत्र है. उसी मे से एक मंत्र पद्धति है त्रैलोक्य विजय काली मंत्र. ग्रन्थ के अनुसार इस का उपयोग करने वाले व्यक्ति का देवता भी अहित करने की सोचते नहीं. फिर सामान्य शत्रु की तो बात ही क्या है. साधक शत्रुओ के ऊपर हावी हो जाता है तथा समस्त षड्यंत्रो से पार उतर कर सर्वत्र विजयी होता है. इस साधना को करने के बाद साधक मे एक अत्यधिक तीव्र मोहन शक्ति का भी विकास होता है जिससे सभी व्यक्ति उसके अनुकूल रहना ही योग्य समजते है. इस कल्याण प्रदाता गुढ़ साधना को साधक करे तो देवी काली का आशीर्वाद सदैव साधक पर बना रहता है.

साधक को चाहिए की वह यह साधना कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुरू करे. सुबह उठ कर देवी महाकाली की पूजा करे तथा देवी दक्षिण काली का ध्यान करे. अगर साधक अपने सामने काली यन्त्र तथा चित्र रखे तो उत्तम है. इसके पश्च्यात साधक निम्न मन्त्र की १० माला सुबह, १० माला

दोपहर तथा १० माला शाम को (सूर्यास्त के बाद रात्री काल मे सोने से पहले) मंत्र जाप करे. यह २१ दिन की साधना है. रोज ३ समय मंत्र जाप होना चाहिए. इसमें दिशा पूर्व रहे. वस्त्र आसान सफ़ेद रहे तथा माला काले हकीक या रुद्राक्ष की हो. जाप से पहले विनियोग निम्न मंत्र से करे. हाथ मे जल ले कर विनियोग बोलने के बाद जल को भूमि पर छोड़ दे.

विनियोग : अस्य श्री काली कल्पे जगमंगला कवच गुढ़ मन्त्रान त्रैलोक्य विजय मन्त्रस्य शिव ऋषि अनुष्टुप् छन्दः दक्षिण कालिका देवता मम त्रैलोक्य विजय त्रैलोक्य मोहन सर्व शत्रु बाधा निवारार्थाय जपे विनियोग

उसके बाद दक्षिण कालिका का ध्यान कर निम्न मंत्र का जाप करे.

हूं ह्रीं दक्षिण कालिके खड्गमुण्ड धारिणी नमः

साधक पूजा और विनियोग सुबह करे, दोपहर और शाम को विनियोग या पूजन की ज़रूरत नहीं है ध्यान के बाद सीधे मंत्र जाप शुरू कर सकते है.

==

The procedures given in the secret tantra scriptures by our sages were filled of varieties of mysteries. Literature of tantra world had remained secret in many form and the procedures mentioned in the same had also been very much secret code language thus to pretend it from the unwanted use by unauthorised person. This way, when there remained very least people to understand such secret literature tantra sadhana was neglected and this way a big part of tantric literature went extinct. And all these literature was given name of fable only. Think once being neutral that there were no pen papers that time palm leaf, various leaves of plants, even skins of animals, metals were prepared with lots of trouble and hard work was put to write something on it by preparing in of various things. Did they have personal benefit with this? But by being hypnotised in west culture we started finishing our self. Anyway, but many scriptures were saved from this time slaps and remained safe with various tantra scholars and matha. From such unpublished scripture there is one named "Bheiravi tantra" with several thousand verses; this scripture is incomparable for sadhana of goddesses. Many part of this tantra are counted as complete separate tantras in which on part or patal is "kaali kalpa". This kalp is great for the devotion of goddess kaali in which procedures and kavach related to kaali has been given. This kavacha is also filled with various mysterious. This kavacha is not only kavacha but a bunch of various dhyan mantras and sadhan mantra in which there remains various incomparable mantras. From the same, there is one process called "treilokya vijay kaali mantra". Says the scripture, that the one does this mantra; even gods too can't think to harm the sadhak, well normal enemies would do what then. Sadhak remains completely winner on their enemies and destroys all the conspiracies. After completing this sadhana, development of the hypnotic power starts inside sadhak through which all the people think better to remain in favour of the sadhak. This

boon giving sadhana if done by sadhaka then blessings of goddess Kaali stays on the head of the sadhak.

Sadhak should start this sadhana on 8th day of dark moon. In the morning, sadhak should do poojan of mahakaali and meditation of devi dakshina kaali. It is better if sadhak is comfortable putting mahakaali yantra and picture infront. After that sadhak should chant 10 rosaries in the morning, 10 rosaries in the afternoon and 10 rosaries in evening (between sunset and time before sleeping in night) of the mantra. This is 21 days sadhana. Every day 3 times mantra should be done. Direction should be east. Cloth and aasan should be white and rosary could be black hakeek or rudraksha. Before mantra chanting one should do viniyog. Chant viniyog by taking water in palm and then leave it on the floor.

Viniyoga : asy shri kaali kalpe jagmangalaa kavach gudh mantraan treiloky vijay mantrasy shiv rishi anustup chandah dakshin kaalikaa devtaa mam treiloky vijay treiloky mohan sarv shatru baadhaa nivaaraarthaay jape viniyog

After this sadhak should meditate dakshin kaalika and chant the following mantra

Hum hreem dakshin kaalike khadgmund dhaarinee namah

Sadhak should do poojan and viyoga in morning. In afternoon and evening time poojan and viniyoga is not require after meditation one can start mantra chanting.

******NPRU******

for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - **http://www.nikhil-alchemy2.com/**

For more Knowledge:- **http://nikhil-alchemy2.blogspot.com**

Posted by Nikhil at 11:29 PM 1 comment: Links to this post
Labels: MAHAVIDYA RAHASYAM, TANTRA SIDDHI

Monday, January 23, 2012

Beejaatmak Tantra Aur Bhagya Utkeelan Vidhaan(HINDI+ENGLISH)



सामान्य मानव जीवन अपेक्षाओं और मनोरथों के दो पहियों पर टिका हुआ है,जिनकी पूर्ती होने से सुख और पूर्ती न होने से दुःख का अनुभव होता है ,और हम अपने जीवन को उन्नति की और अग्रसर होने के लिए भाग्य का मुँह ताकते बैठते हैं की कब वो हमारा सहयोग करे और हम जीवन में उन्नति के शिखर को छू सके . पर क्या सच में भाग्य सदैव हमारा सहयोग करता है.... नहीं ऐसा हमेशा तो नहीं होता,क्या तब हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना उचित है ? वास्तविकता ये है की भाग्य कर्म का अनुगामी है और जिसे कर्म करना आता है भाग्य सदैव उसके पीछे पीछे दौड़ता है , बहुधा जीवन की विपन्नता और गरीबी को हम रोते हैं,विविध प्रयोग भी करते हैं ,परन्तु हमें लाभ नहीं होता है,तब अक्सर हम क्रिया को दूषण देने का कार्य करने लगते हैं जबकि हम ये बात भूल जाते हैं की प्रारब्ध,संचित और क्रियमाण कर्मों का मल जब तक हमारे सौभाग्य के ऊपर अपना आवरण डाले रहेगा तब तक हम चाहे लाख प्रयत्न क्यूँ न करें,हमारे द्वारा किये गए प्रयासों से हमारा भाग्य कदापि नहीं जागेगा.

जब बात हम करते हैं की कर्म का अनुगामी भाग्य होता है तो इसका अर्थ शारीरिक परिश्रम तो होता ही है परन्तु उसके साथ साधनात्मक कर्म भी अनिवार्य होता है,और जब ये दोनों कर्म सकारात्मक दिशा में होते हैं तो,विपन्नता का नाश होकर,उन्नति,वर्चश्व,ऐश्वर्य,सौ

भाग्य और सम्मान की प्राप्ति होती ही है.

हम विपन्नता की अवस्था में हम आकस्मिक धन प्राप्ति के वृहद अनुष्ठान को संपन्न करते हैं ,पर क्या ये सही क्रम है ? नहीं ना,क्यूंकि दुर्भाग्र निवारण,दरिद्रता नाश और तत्पश्चात श्री आमंत्रण क्रम करना उचित होता है,तदुपरांत लक्ष्मी का श्री के रूप में आपके जीवन में आगमन होता है और उसके बाद जब हम लक्ष्मी कीलन या स्थिरीकरण की क्रिया करते हैं तो लक्ष्मी जन्म जन्मान्तरों के लिए हमारे कुल में स्थायी रूप से निवास करती हैं. स्मरण रखने योग्य तथ्य ये है की वृहद अनुष्ठान कभी भी आपको शीग्र लाभ नहीं दे सकते हैं क्योंकि उन्हें सिद्ध करने के लिए जो एकाग्रता,चित्त की सध्नाव्धि में इष्ट के साथ होने तारतम्यता का आभाव होना स्वाभाविक होता है और दीर्घ अनुष्ठान प्रारंभिक स्तर पर चित्त को उद्विग्न भी कर देते हैं अतः गृहस्थों को या जिन्हें शीघ्र लाभ चाहिए होता है उन्हें बीजात्मक साधनाओं को सम्पादित करना चाहिए.सदगुरुदेव के आशीर्वाद से ये अतिशीघ्र लाभ भी देते हैं और सिद्ध भी जल्दी हो जाते हैं तथा "यथा बीजम तथा अंकुरम्" की उक्ति को चरितार्थता भी तभी प्राप्त होती है जब आपका बीज पुष्ट हो तभी तो उसका आधार प्राप्त कर साधना आपके समस्त मल का नाश कर आपको आपका अभीष्ट प्रदान करती है.

याद रखिये प्रत्येक बीज के चैतान्यीकरण और जागरण की प्रथक प्रथक क्रिया होती है जो आपके उद्देश्य को दिशा देती है ,जैसे "क्लीं" बीज का यदि वशीकरण साधना के लिए प्रयोग करना हो तो उसे जाग्रत करने और स्वप्राण घर्षित करने की क्रिया भिन्न होगी उस क्रिया से जो की संहार के लिए प्रयुक्त की गयी हो.

यहाँ पर हम बात आर्थिक उन्नति की कर रहे हैं ,तो जब जॉब में या व्यवसाय में अथवा सामान्य जीवन में आप पैसों के लिए मोहताज हो गए हो तो किसी भी अन्य लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग को करते समय यदि "ह्रीं" बीज का सायुज्यीकरण कर दिया जाये तो वह प्रक्रिया निसंदेह अपना तीव्र प्रभाव प्रदान करती है ,और यदि मात्र इसी बीज का प्रयोग किया जाये तब भी आर्थिक

बाधाओं का नाश तो करती ही है साथ ही साथ नौकरी या व्यवसाय पर छाये हानि के बादलों को भी पूरी तरह समाप्त कर देती है ,प्रयोग बड़ा या छोटा होने से प्रभाव की प्राप्ति नहीं होती है अपितु उसकी पद्धति कितनी विश्वसनीय है और उसका आधार क्या है ये ज्यादा महत्वपूर्ण है ,याद रखिये "ह्रीं' महाकाली,महासरस्वती और महालक्ष्मी तीनों का ही बीज है अर्थात त्रिगुण शक्तियों से परिपूर्ण है अर्थात ,शक्ति,वेग और तीव्रता का संयुक्त रूप,अतः इसका कैसे सयुज्यीकरण किया जायेगा ये ज्यादा महत्वपूर्ण तथ्य होता है किसी भी क्रिया के पूर्ण होने के लिए.

हम बात आर्थिक लाभ या सम्मान या नौकरी या व्यवसाय के स्थायिव की कर रहे है तब इसका प्रयोग कैसे किया जाए मात्र उससे अवगत करना ही मेरा उद्देश्य है –

किसी भी रात्रि को विशुद्ध शहद १०० ग्राम लेकर एक कांच के पात्र में रख ले और उस पात्र को सदगुरुदेव,गणपति और हाथों से स्वर्ण बरसाती पद्म लक्ष्मी के सामने स्थापित कर दे,घृत दीपक प्रज्वलित करे और गुलाब धुप और गुलाब पुष्प से पूजन करे ,साफ़ वस्त्र व आसन हो रात्री या संध्या का समय हो, सफ़ेद कागज या ज्यादा उचित है की भोजपत्र पर अष्टगंध के द्वारा अनार की कलम से "ह्रीं" लिखे और अपना पूर्ण नाम लिख कर फिर से "ह्रीं" लिख दे,ये बहुत ही छोटे कागज या पत्र पर लिखना है.इसके बाद उसी स्थान पर बैठे बैठे बीज मंत्र की ३ माला हकीक या मूंगे माला से करे ,और उसके बाद उस पत्र की गोली बनाकर उस शहद में डुबो दे ,ये क्रम मात्र ३ दिन करना है अर्थात आपको नित्य बीजंकन कर के उसके सामने पूजन तथा जप करना है और मधु में डुबो देना है.इसके साथ आप अन्य प्रयोग भी कर सकते हैं या यदि अन्य लक्ष्मी प्रयोग न कर रहे हो तो इस बीज की माला संख्या ७ कर दीजिए और दिन की अवधि ५ कर दीजियेगा,अंतिम दिवस जप के दुसरे दिन उस पात्र में से सभी गोलियों को निकाल कर किसी बहते साफ़ जल में प्रवाहित कर दे और शहद का आप स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए नित्य सेवन भी कर सकते हैं या

वशीकरण साधना में भी प्रयोग कर सकते हैं,सेवन करने के लिए एक इलायची को नित्य उसमे भिगोकर खाना चाहिए. ये सदगुरुदेव की असीम अनुकम्पा है की हमारे मध्य इतने सरल परन्तु अचूक प्रयोग प्राप्य है,आप स्वयं ही इसे कर के प्रभाव देख सकते हैं.

Common human's life is just based on two type of wheels named expectations and destinations and no doubt fulfillment of these expectations give us happiness and leads our life towards development.....so let me know my dear is it all right for us to look at sky in the form of our destiny so that there will be someone who can hear us and fulfill our motives.....and is it destiny which always support us....no it never happens always....so is it fine to sit back in such dreadful situations.......again a big NO. The fact is that "necessity is the mother of invention" so it is clear that who will work hard definitely will be honored of destiny. Mostly we cry over poverty and illness and to remove such pitfalls we do number of experiments but again all in vain and this causes depression in our life.

When we talk about that it is our needs which causes miracles but one thing which should kept in mind is that when we talk about hard work it's not always about physical beside this sadhnatmak hardship is must and when both of these powers works for you then definitely emptiness of life removes and development, luxury, destiny and magnificence blessed you.

During hardship times we do our best to change time's cycle from misfortune to fortune and to get this done we take the shelter of Anushthans but do we ever try to know whether these anushthans and all that going on right direction or not? Because to get all this perfectly done we need to follow a systematical order as firstly one should get rid of his misfortune, secondly make sure your poverty has been destroyed than finally you can welcome Goddess Laxmi in the form of Shri in your home so that she should stay there permanently to give you and your family a luxuries life for- ever and forever. Another important fact is that to carry on big anushthan at grand scale is not always prove beneficial as to carry out them one should be more conscious and stable in his thoughts and action whereas on the other hand long anushthan makes us bored quite bitter but true so for a domestic person its always good to get power and blessings from Beejaatmak sadhnaas as they get easily sidh and fruitful as well and according to "यथा बीजम तथा अंकुरम्" if you sow pure seed than its quite sure you are going to have a fruitful tree similarly when we talk about sadhnaa its result depends on our concentration in the form of seed. One should always keep in his mind that in order to enlighten each and every month, needs to follow different procedure as in order to sidh "KLEEM" beej for

Vashikaran purpose is followed by totally differ process in which this mantra is get sidh for Sanhaar proyog.
Here we are talking about financial growth so if one faces financial crisis so what should he prefers to do.....with any type of Laxmi proyog he should lit the spark the "HREEM" beej with it as by doing so work will work at super speed.....about this beej mantra another important thing is that if someone uses this mantra alone then to all the financial obstacles ultimately get removes as the results of the proyog don't affected by the fact that at what scale you are carrying out them. Instead of this the important thing is that how strong your consciousness is and faithfully you are carrying out them. Always remember that "HREEM" beej collectively symbolizes Maha Kaali, Maha Saraswati and Maha Laxmi in short this beej represents Shakti (power), Veag (density) and Teevrta (velocity) and the procedures based on the fact that how you get it enlighten.
As we are talking about financial betterment or permanence in job so its my duty to let you know its procedure-
At any night take 100grams pure honey in clear glass utensil (kaanch ka paatr) and place that paatr in front of Sadgurudev, Lord Ganpati and Goddess Laxmi, lit ghee lamp and offer rose (gulab) incense and rose flowers as well, your clothes and aasan should neat and clean and time can be evening or night as well. Then if possible write "HREEM" with ashtgandha on bhojpatra with the pencil of pomegranate stem (anaar ki kalam) if not bhojpatra you can use white paper for it then after Hreem write your name then again after your name write Hreem. Remember you have to use very short paper for this. After that do 3 rosary of beej mantra with the rosary of Black Hkeek aur Moonga. After finishing it roll that paper in round shape and dip it in that honey....follow this process for continuous 3 days means daily you need to write beej mantra then your name then again mantra on paper and after pooja dip that paper in honey....you can do any other proyog along with this related to Laxmi and if you are not doing so than increase the number of rosaries from 3 to 7 and days from 3 to 5. Day after the final jaap day take out all the papers from honey gat them dump under the flowing clean water and as the matter of honey you can use it to strengthen your memory as well as it can be used for Vashikaran sadhna. If you want to eat or drink that honey then don't forget to dip a cardamom (ilaichi) in it every day. It is just because of the blessings of our revered Sadgurudev that we have such a small, easy but meaningful proyog to get comforts in our life.

PLZ CHECK : - **http://www.nikhil-alchemy2.com/**

For more Knowledge:- **http://nikhil-alchemy2.blogspot.com**

Posted by Nikhil at 10:06 PM 1 comment: Links to this post
Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, TANTRA DARSHAN, TANTRA SIDDHI

MALA ME PRANPRATISHTHA



यंत्रो की सामान्य प्राण प्रतिष्ठा विधि तो हमने तन्त्र कौमुदी के विगत के अंक में दे हो चुके ही हैं , पर आपके सन्दर्भ में अनेको पत्र और इ मेल हमें मिले जिसमे हमसे पूछ गया था की क्या सामान्य से सामान्य से प्रयोग में संस्कारित माला की जरुरत होती हैं ??तो उत्तर यह हैं की हाँ बिना संस्कार की माला का प्रयोग करने से सम्बंधित देवता क्रुद्ध हो जाते हैं तो हर प्रयोग के लिए यह माला कहां से लाये तो आप सभी के लाभार्थ यह माला को संस्कारित करने की विधिया इस लेख में आप सभी के लिए

आप जानते हैं की विभिन्न प्रयोग के लिए विभिन्न मनको की माला का उपयोग होता हैं , कभी 51 तो कभी 31 पर अधिकांश प्रयोग और साधना में 108मनको से युक्त माला का प्रयोग होता हैं.

पर १०८ ही क्यों यूं तो सभी का एक विशेष अर्थ हैं हैं पर सदगुरुदेव भगवान् ने कहा हैं की मानव शरीर में 7चक्र नहीं बल्कि 108 चक्र होते हैं

, और उन्होंने इस संदर्भ में विभिन्न उदाहरण भी दिए हैं साथ ही साथ इस हेतु एक बार एक विशिष्ठ दीक्षा १०८ चक्र जागरण दीक्षा भी उन्होंने प्रदान की थी, तो जब भी हम 108 मनको की माला से मंत्र जप करते हैं तब हर मनके के माध्यम से एक विशेष चक्र पर स्पंदन होता ही हैं फिर उसे हम महसूस चाहे या न चाहे करे .यही एक गोपनीय तथ्य हैं इन मनको का 108 होने का तभी तो 108 मनको वाली माला सर्वार्थ सिद्धि प्रदायक कही जाती हैं

और यह माला ही तो इस साधना की एक विशेष उपकरण हैं , सदगुरुदेव भगवान् कहते हैं की की क्यों एक छोटी छोटी से बात पर अपने सदगुरुदेव पर भी निर्भर रहना , उन्होंने ही तो अनेक बार माला और यंत्रो को प्राण प्रतिष्ठित करने की विधिया बताई , उ ससमय के अनेक साधक इस बात के प्रमाण हैं ,

और जब हम आगे बढ़ कर सिद्धाश्रम तक जाने की बात करते हैं और हम खुद एक सामान्य सी माला प्राण प्रतिष्ठित न कर पाए तो आप ही सोच सकते हैं हम हैं कहाँ , अतः इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रक्रिया को आपके सामने रहा जा रहा हैं .

यह लेख आरिफ खान जी के द्वारा अनेको वर्ष पहले भी एक पत्रिका में प्रकाशित हो चूका हैं उसी का संक्षिप्त रूप आपके सामने हैं .

ध्यान रहे यहाँ हम माला निर्माण की प्रक्रिया नहीं बता रहे हैं वह एक और ही अलग विषय हैं .

प्रथम तरीका :सर्वाधिक सरल तरीका तो यह हैं की आप किसी भी माला /मालाओं को किसी भी ज्योतिर्लिंग या शक्ति पीठ में मुख्य विग्रह से स्पर्श करा ले, उनकी प्राण उर्जा से माला स्वतः हो प्राण प्रतिष्ठित हो जाती हैं .

द्वितीय तरीका : यह हैं की यदि आप से रुद्राभिषेक करते बनता हैं या आप के घर में किसी से या कोई पंडित द्वारा आपके घर में रुद्राभिषेक किया जा रहा हो उस समय काल में किसी भी पात्र में यह माला जिसे प्राण प्रतिष्ठित किया जाना हैं उसे रख दे , यह स्वत ही परं प्रतिष्ठित हो जाती हैं , रुद्राभिषेक की विधि आप गीता प्रेस की किताबों मेंपा सकते हैं .

तृतीय तरीका :आप के जो भी गुरु हो उनके हाथो के स्पर्श मात्र से भी यह प्रक्रिया सुगमता पूर्वक संपन्न हो जाती हैं .

चतुर्थ तरीका :माला को गंगा जल से स्नान कराये और निम्न मन्त्र उसी माला से १०८ बार जप कर ले , यह भी एक सुगम तरीका हैं .

माले माले महामाले सर्व तत्त्व स्वरूपिणी |
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्त स्तस्मंमे सिद्धिदा भव ||

पंचम तरीका : शास्त्रीय प्रक्रिया :

पीपल के नौ पत्ते को इस तरह से रखे की एक पत्ता बीच में और और अन्य पत्ते उसे केंद्र मानते हुए इस प्रकार रखे मानो एक अष्ट दल कमल सा बन जाये , बीच के पत्ते पर आप अपनी माला रख दे और हिंदी वर्ण माला से वर्ण ॐ अं से लेकर क्षं तक सभी का उच्चारण करते हुए उस माला को पंचगव्य से स्नान कराये. फिर सद्योजात मंत्र का उच्चारण करते हुए

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः |
भवे भवे नाति भवे भवस्य माँ भवो द्वावाय नमः ||

निम्न वामदेव मन्त्र से चन्दन माला पर लगा यें

बलाय नमो बल प्रमथ नाय नमः सर्व भूतदहनाय नमो मनो न्मथाय नमः ||

धुप बत्ती अघोरमंत्र से दिखाए

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्य: सर्वेभ्य : सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य :

फिर तत्पुरुष मंत्र से लेपन करे

ॐ तत्पुरुषाय विद्म्हये महादेवी धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात ।

फिर इसके एक एक दाने पर एक बार या सौ सौ बार इशान मंत्र का जप करे

ॐ ईशान: सर्व विद्यानामिश्वर : सर्व भूतानां ब्रह्मा धिपति र ब्रह्मणो ऽ धिपतिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवो ऽ म ।

अब बात आती हैं कि कैसे देवता की स्थापना की जाए तो यदि आप इस माला को शक्ति कार्यों में उपयोग करना चाहते हैं तो "ह्रीं " इस मंत्र के पहले लगा कर और लाल रंग के पुष्पों से इसका पूजन करें. और वैष्णवों को निम्न मन्त्र का उपयोग करें

ॐ ऐं श्रीं अक्षमाला यै नमः ।।

फिर हर वर्ण मतलब अं से लेकर क्षं तक लेकर इनसे संपुटित करके १०८ /१०८ बार अपने इष्ट मन्त्र का उच्चारण करे .

फिर यह प्रार्थना करे

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्व सिद्धिप्र्दा मता ।
तें सत्येन में सिद्धिं देहि मातर्नामो ऽ स्तू ते ।।

अब इस माला को हर के सामने दिखाए नहीं , आपको जो भी विधि उचित लगे उसका उपयोग करके एक प्राण प्रतिष्ठित माला का निर्माण आप कर सकते हैं उसे साधना में प्रयोग करसकते हैं .

पर यह तो प्रकिया मणि माला को संस्कारित करने की हैं पर विशेष शक्ति युक्त तांत्रिक माला का निर्माण कैसे किया जाए , यह विधान पहली बार ही सामने आ रहा हैं , तो इसमें आपको

ॐ सर्व माला मणि माला सिद्धि प्रदात्रयि शक्ति रुपिंयै नमः

ॐ sarv mala mani mala siddhi pradatrayi shakti rupinyai namah

१०८ बार उच्चारण करना हैं इस दौरान माला हाथ में घुमती यां उसे घुमाते रहे गी /रहे

****

We have already given the process how to make praan pratisthha of yantra can be done , but we have been continuous getting e mails regarding the one question is there any necessity of using sanskarit mala in any and every sadhana,?? Than answer is yes ,, if one is using the mala without having Sanskar than the related deity of that sadhana often get angry but where and how you can purchase separate mala for each and every prayog .

so for the benefit of you all here is the process by which you can also praan pratisthhit the mala or sanskarit mala.

As you are already aware that that there are many type of mala used in sadhana prayog some has 31 beeds some 51 and some 108 beeds , why it is so . but in majority of the cases beeds quantity of 108 haapens why??.

as each mala has his own value and these beeds quantity has a purpose , as Sadgurudev Bhagvaan has many times says that there are not 7 chakra but 108 chakra lies in human body and for that 108 chakra energization he gave a special Diksha names “108 chkra jagran Diksha” . so when we do jap with mala with 108 beeds than through each beeds than chakra related to that beeds get energize . this is one of the reason behind using 108 beeds mala and this mala has been called sarvarth siddhi pradayak means all siddhi provider .

And this mala is a special instrument in any sadhana, Sadgurudev Bhagvaan used to say that why you have to depends each times even for small problem to your Sadgurudev., he has given many times the process for how to energize the yantra and rosary process. many of the sadhak of that era clearly knew this and a self evidence of that.
When we are talking about going to siddhashram and not able to do/know how to energize a simple rosary than think about it where we are standing., taking care theses fact here are the process in front of you .
This articles is based on the arif ji, already written articles that has been appeared many years before in a magazine.
Please keep it in mind here we are not discussing the process how to make mala that is a different subject.
First way :one of the most easiest process is that have a opportunity to visit any shiv jyotirling or shakti peeth hand touch your rosary / rosaries to the main vigrah , automatically that mala/rosary has been sanskarit.
Second way: if you how to do rudrabhishek or any person of your home knew about that or through any pandit this rudrabhishek is going on than during that period place the required mala/rosary in any pot in front of that , so that mala automatically get sanskarit.

You can get the complete rudrabhishek process through gita prèss Gorakhpur books.
Third way: who so ever is your guru , and you have a faith in him than as the rosary get touch of his body or hand that automatically Sanskrit.
Fourth ways:wash rosary with ganga jal and during that period chant this mantra for 108 times this is also a easy process,
Maale maale mahamaale sarvtatvswrupini |

Chturvargstvyi nyast stsmanme siddihida bhav ||

Fifthways: shashtriy ways:

Place nine leaves of pipal tree in this way that place one leave in middle and remaining eight place in circular of that, so a asht dal lotus type fig formed. And place the rosary in middle

leave and wash that rosary with panchgavy and chant the complete varn mala like am, aam, to ksham , than chant

sandyojaat mantra:

Om sandyojaat prpadyaami sadyojaataay vai namo namah |

Bhave bhave naati bhave bhavsy maan bhavo dwavaay namh||

Then apply chandan to rosary and chant

vaamdev mantra:

Blaay namo bal pramthnaay namh sarv bhutdahnaay namo manomnmathaay namah|

Offer dhoop stick with this

aghor mantra:

Om aghorebhyoath ghorebhyo ghor ghor tarebhyah sarvebhyah sarv sarvebhyo namste astu rudrarupebhy

And againwith

tatpurusha mantra :

Om tatpurushay vidmahye mahadevi dhimahi tanno rudrah prachodyat |

Than chant ishan mantra either one times or100 times on each beeds of rosary .

Om ishanah sarv vidyaanamishwarah sarv bhutanaam bramha dhipatir brmhnoo dhipatir bramha shivo me astu sadhashivoaham||

Now the question rises how to make this mala energize of any deity, if you are using this mala for shakti sadhana, than add "HREEM" before this mantra a and offer red color flower to it.

Maale maale mahamaale sarvtatvswrupini |
Chturvargstvyi nyast stsmanme siddihida bhav ||

And vaishnav can use this mantra

Om ayem shreem akshmala yai namah||

Than use every varn means am to ksham means add thses varn to your isht mantra and chant108 /108 times, than do this prayer.

Om tvam maale sarvdevaanam sarv siddhipradamata |
Ten satyen men siddhim dehi maatarnaamostu te ||

Than not toshow this mala toevery one, than follow any one mothod whichever one you like most, and after that mala you can use in your sadhana.

Butthis sis the simplest process but how we canmake special shakti tantrak mala so for that just 108 times this mantra, while chantingthe mantra the rosary should be moving in your hand

Mantra :

ॐ sarv mala mani mala siddhi pradatrayi shakti rupinyai namah

DIVINE WEAPONS SUDARSHAN CHAKRA SADHNA



प्राचीन मुख्य १०८ विज्ञान मे कई ऐसे विज्ञान है जिसके बारे मे सामान्यजन को पता ही नहीं है. ऐसा ही एक विज्ञान जो की प्रचलन मे रहा वो था युद्ध विज्ञान. इस विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति को अपनी शक्ति और सामर्थ्य बढ़ा कर किस प्रकार से आत्मरक्षण तथा पर जन रक्षण कर सके इसकी शिक्षा दी जाती थी. साथ ही साथ शश्त्रो की तालीम भी दी जाती थी जो की सहायक रूप मे शक्ति संचार का कार्य करते है. इस विज्ञान के अंतर्गत ये भी बताया जाता था की व्यक्ति किस प्रकार से भूमि तथा वायु मे निहित शक्ति को संचारित कर के युद्ध कर सकता है. इस विज्ञान का ही बौद्ध काल मे विस्तरण हुआ जिसमे कई प्रकार नवोन्मेष कर मार्शलआर्ट आदि विविध ज्ञान कई देशो मे अमल मे आया. इससे यह जाना जा सकता है की उस समय जिव तथा भौतिक विज्ञान का विशेषतम ज्ञान हमारे ऋषियो के पास था. जब इसी विज्ञान को तंत्र पक्ष से जोड़ा गया तो कई त्तंत्र पद्धतिया अमल मे आई जिनका उद्देश्य युद्ध के दौरान विजय श्री के लिए किया जा सके. सैन्य स्तम्भन, सैन्य मारण, राज्य मोहिनी, राजा वशीकरण जैसे प्रयोगों को अमल मे लाया गया. साथ ही साथ सब से अत्यधिक महत्वपूर्ण जो साधनाओ का प्रचार हुआ वो थी अस्त्र साधनाए. हमारे शास्त्रों मे उल्लेख मिलता है की विविध अस्त्रों का प्रयोग युद्ध मे बराबर होता था, अग्नि, पावका, वरुण, नाग, अघोर, ब्रम्हा आदि विभ्भिन अस्त्रों के बारे मे विवरण मिलता है. इन सभी अस्त्रों को साधनाओ के माध्यम से आज भी प्राप्त किया जा सकता है. देवी देवताओ को सिद्ध कर उनसे अस्त्र प्राप्त करने के विवरण हमारे ग्रंथो मे मिलते है. इसी प्रकार विष्णु भगवान का अस्त्र सुदर्शनचक्र है. इन अस्त्रों को प्राप्त करने की साधना अत्यधिक कठोर तथा श्रमसाध्य है तथा इसमें कई साल का समय साधक को लग सकता है. लेकिन इन अस्त्रों से सबंधित कई विविध लघु प्रयोग भी है. जिससे देवी देवता प्रसन्न हो कर अपने अस्त्रों को साधक के पास भेज कर उनका रक्षण करने की आज्ञा देते है. लेकिन यह दुष्कर प्रयोग बहोत ही मुश्किल से प्राप्त होते है, यदा कदा मंत्रो का विवरण भी मिल जाए लेकिन सबंधित प्रक्रियाए मिलना मुश्किल ही है. सदगुरुदेव ने अपने कई सन्यासी शिष्यों को इन प्रक्रियाओ का ज्ञान दिया है. यह हमारा सौभाग्य है की हमारे वरिष्ठ भाई बहेनो के पास इस प्रकार के गुढ़ ज्ञान से सम्प्पन है. सदगुरुदेव की कृपा से एक प्रयोग जो की सुदर्शन चक्र से सबंधित है वह मे आप सब के मध्य रखना चाहूँगा.

इस साधना को किसी भी सुबह दिन शुरू किया जा सकता है. रात्रि काल मे ११ बजे के बाद साधक स्नान कर के सफ़ेद वस्त्रों को धारण कर के सफ़ेद आसान पर बैठे. और रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र का जाप

करे. साधक को ७ दिन मे १०००० मंत्र जाप करना है, साधक अपनी सामर्थ्य अनुसार दिनों का चयन कर अपना मंत्र पूरा कर ले लेकिन मंत्र जाप की संख्या रोज नियमित रहे. साधक चाहे तो १ दिन मे भी मंत्र जाप पूरा कर सकता है

ॐ सुदर्शन चक्राय शीघ्र आगच्छ मम सर्वत्र रक्षय रक्षय स्वाहा

मंत्र जाप के बाद साधक माला को धारण करे रखे तथा ग्रहण काल मे इस मंत्र की ११ माला जाप फिर से करे और शहद से अग्नि मे १००८ आहुतियां को इसी मंत्र से अर्पित करे. साधक का सौभाग्य होता है की उस समय सुदर्शन चक्र का दर्शन हो. तब साधक को चाहिए की वह नमस्कार कर रक्षण के लिए प्रार्थना करे.

इसके बाद सुदर्शन चक्र साधक के आसपास अप्रत्यक्ष रूप मे रहता है तथा सर्व रूप से शत्रु तथा अनेक बाधाओ से व्यक्ति का रक्षण करता ही रहता है. साधक का अहित करने का सामर्थ्य उसके शत्रुओ मे रहता ही नहीं है.

साधना के दौरान साधक अघोर मंत्र का भी जाप करे तो वह अत्यधिक उत्तम है.

From 108 ancient sciences, there are still some sciences about which common people do not know anything. Such one of the science which had remained famous was fight science (yuddh vijnana). Under this category of the science teaching used to be given to the person by developing one's power and ability for self and other's protection. With that teachings related to weapons were also be used to given which act as helper in power development. Under this science it had also been used to taught that how to use energy which is there in land and air to generate power and fight. This was the science which spread during Buddha era with which new innovations took place and various knowledge of martial art came in touch with different countries. With this, we get idea that our ancient sages must have special knowledge of bio and physic sciences. When this science was merged with tantra side then various processes came to know which were meant to win the fights. Many prayoga came in ront like Seinya Stambhan, Seinya Maaran, Raajya Mohini, Raja Vashikaran etc. with these, most important processes which came forward were astr sadhana. in our scriptures it is mentioned that in fight various astra were brought to use, we find mention of various astra like agni, paavakaa, varun, naag, aghor, bramha etc. all these astra could be gain with sadhana today even. To accomplish sadhana of various god goddess and to gain

astra from them such incidents are found in our scriptures. This way sudarshan chakra belongs to god Vishnu. Astra related sadhana are very hard and rigorous and may take several years for sadhak. But there are small ritual too exists related to these astra. By accomplishing which god and goddess send their astra to sadhana for their protection being pleased. But such rare processes are hard to get, somewhere mantra could be found mentioned but processes are hard to find. Sadgurudev have given knowledge about such processes to ascetic disciples. This is our fortune that our ascetic brothers and sisters hold knowledge of such rare processes. With blessings of sadgurudev I am here by sharing a process with you, which is related to sudarshan chakra.

This sadhana could be started on any auspicious day. In the night time after having bath sadhak should wear white cloth and sit on white aasan. And with rudraksh rosary one should chant mantra. sadhak should complete 10000 mantra in 7 days maximum, sadhak can make selection of the days according to their capacity but no. of mantra chanting should remain same daily. If one wishes, sadhak can also complete all mantra in 1 day.

Om Sudarshan Chakraay Sheeghra aagachchh mam sarvatr rakshay rakshay swaha

After mantra chanting sadhak should wear the rosary and when it is eclipse (solar/lunar) one should chant 11 rosary of the same mantra and should offer 1008 aahuti with the same mantra of honey in the fire. It is great boon that sadhak can have glimpse of sudarshan chakra at that time. Sadhak should bow down to it and pray for the protection. After that sudarshan chakra will remain in invisible form near sadhak and in every way it save from dangers ad enemies. Enemies no more can harm in any way to sadhak.

If during sadhana, sadhak chants aghor mantra will add extra benefit to get success in sadhana.

*******NPRU********

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

For more Knowledge:- http://nikhil-alchemy2.blogspot.com

Posted by Nikhil at 2:30 AM 2 comments: Links to this post

Labels: RAKSHA VIDHAN SADHNA, TANTRA SIDDHI

Saturday, December 31, 2011

नव वर्ष सौभाग्य प्रदायक –गुह्य रहस्य पद्धति प्रोक्त "आदित्य भैरव सायुज्य श्री सौभाग्य कृत्या प्रयोग"



वह दिन जब हम जीवन का प्रारंभ करते हैं हम सभी के लिए नव वर्ष कहलाता है,मान्यताओं,संस्कारों और तथ्यों के आधार पर एक सामान्य वर्ष में कई बार नव वर्ष मनाया जाता है,जैसे नवरात्री को हिंदू संस्कृति का तो भिन्न भिन्न प्रान्तों के अपने नव वर्ष होते है तो स्वयं का जन्मदिन भी व्यक्ति विशेष के लिए नव वर्ष ही होता है,और मानव चिंतन सदैव इस ओर रहा है की कैसे हम अपने मनोवांछित को प्राप्त कर न्यूनताओं को समाप्त कर सके और सार्थक कर सके अपना नव वर्ष .सदगुरुदेव हमेशा नव वर्ष के अवसर पर साधकों को विलक्षणता प्रदान करने वाले नवीन तथ्यों से परिचित तो करवाते ही थे साथ ही साथ दिव्यपात श्रेणी की विभिन्न दीक्षाओं को भी उन्होंने

देना प्रारंभ किया था जिससे साधक सामान्य न होकर अद्भुत हो जाये... परन्तु १९९८ के बाद वे सारे क्रम ही लुप्त हो गए और अन्य कोई उन तथ्यों को समझा पाए ऐसा संभव ही नहीं था. हमारे विभिन्न ज्ञात और लुप्त तंत्र ग्रन्थ प्रमाण हैं उन उच्चस्तरीय साधनाओं के जिनका प्रयोग कर साधक अपनी जीवन शैली में अमूल चूल परिवर्तन कर सकता है और वर्ष भर के लिए श्रेष्ठता तो प्राप्त कर ही सकता है ,ऐसा ही एक ग्रन्थ है **"गुह्य रहस्य पद्धति"** जो पूरी तरह **दिनों ,महीनों और वर्षों को अनुकूल बनाने और गतिमान वर्ष,माह और दिवस के अधिष्ठाता ग्रह ,देव शक्ति,मातृका और मुंथा को वश में करके स्वयं का भाग्य लेखन करने की गुह्यतम पद्धति पर आधारित है ,पूरा ग्रन्थ ही २२८ प्रयोगों से युक्त है**,भिन्न भिन्न दिवसों और माहों के अपने अपने प्रयोग हैं. परन्तु उन सबमे जो सभी के लिए प्रभावकारी पद्धति है उसी का विवेचन मैं इस लेख में कर रहा हूँ, सदगुरुदेव के सन्यासी और सिद्ध शिष्य **स्वामी शिव योगत्रयानंद जी** ने मुझे वो ग्रन्थ दिखाया था जो पूरी तरह हस्तलिखित था और उन्होंने उसे मुझे उन क्रियाओं को कैसे किया जाये और कब कब कैसे उनका प्रयोग किया जाता है ये भी समझाया था ,उन्होंने बताया था की इस प्रयोग को दो तरीकों से किया जा सकता है –

१. या तो जब सामूहिक मान्यताओं के आधार पर नव वर्ष प्रारंभ हो तब

२. या जब साधक का जन्मदिवस हो या उसकी पारिवारिक या धार्मिक मान्यताओं के आधार पर जब नव वर्ष प्रारंभ होता हो.

चाहे आप किसी भी क्रम को मानते हो तब भी आप दो तरीके से इस प्रयोग को कर सकते हो –

१. या तो सूर्योदय के समय का का आश्रय लेकर साधना की जाये

२. या फिर जिस समय साधक का जन्म हुआ हो उस समय पर इसे संपन्न किया जाये ,भले ही आप १ जनवरी को इसका प्रयोग कर रहे हो परन्तु तब भी आप इसे इन दोनों में से कोई समय पर कर सकते हो, अर्थात मान लीजिए की किसी का जन्म २४ अगस्त को रात्री में ९.३५ पर हुआ है तब ऐसे में साधक १ जनवरी को ही या तो सूर्योदय के समय इस साधना को कर सकता है या फिर रात्री में ९.३५ पर .दोनों ही समय प्रभावकारी हैं और कोई दोष नहीं है.

आप चाहे आत्मविश्वास की मजबूती चाहते हों या फिर रोजगार की प्राप्ति या वृद्धि,सम्मान चाहते हो या फिर संतान सुख या संतान या परिवार का आरोग्य ,आर्थिक उन्नति चाहते हो या कार्य में सफलता ,जीवन में प्रेम की अभिलाषा हो या फिर विदेश यात्रा का स्वयं के भाग्य में अंकन,ये प्रयोग सभी अभिलाषाओं की पूर्ती करता है. **सदगुरुदेव ने १९९१-१९९२ में पहली बार साधकों के सामने नवरात्री में सौभाग्य कृत्या का प्रयोग करवाया था .और नवरात्री चूंकि सनातन नववर्ष का आगमन पर्व होता है अतः उन्होंने उपहार स्वरुप इस क्रिया को सभी साधको को प्रदान किया था** ,उसी क्रम में उनके आशीर्वाद से ये **"आदित्य भैरव सायुज्य श्री सौभाग्य कृत्या प्रयोग"** हमारे लिए प्राप्त हुआ है ,गुरु मंत्र की १६ माला अनिवार्य हैं उन्ही क्षणों में साधकों के द्वारा इस प्रयोग के पहले तभी ये प्रयोग पूर्णता प्रदान करता है.

आप अपनी मान्यताओं के आधार पर जिस भी नव वर्ष के प्रारंभ में इस साधना को करना चाहे ,उस सुबह सूर्योदय के पहले उठकर स्नान कर ले और श्वेत वस्त्र धारण कर भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे .अर्घ्य पात्र में जल भर कर और उसको पहले सामने रखकर २१ -२१ बार निम्न मन्त्रों से अभिमंत्रित कर ले –

ओम आदित्याय नमः

ओम मित्राय नमः

ओम भाष्कराय नमः

ओम रवये नमः

ओम खगाय नमः

ओम पूषाय नमः

ओम ग्रहाधिपत्ये नमः

इसके बाद ही उस जल से अर्घ्य प्रदान करे.तत्पश्चात साधना कक्ष में स्वयं या परिवार के साथ बैठकर सदगुरुदेव और भगवान गणपति का पूजन करे .आज जिस गुरु ध्यान मंत्र का प्रयोग होता है वो भी इस अवसर विशेष के साथ योगित है और भविष्य में इस ध्यान मंत्र में छिपी उस विशेष साधना को भी आप सभी भाई बहनों के समक्ष रखने का प्रयास करूँगा . सद्गुरु पूजन से पूर्व निम्न ध्यान मंत्र का ७ बार उच्चारण करे –

“**अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया |**

चक्षुरुन्मीलितं एन तस्मै श्री गुरुवे नमः || ”

तत्पश्चात पंचोपचार विधान या सुविधाजनक रूप से सदगुरुदेव और भगवान गणपति का पूजन कर संवत्सर शुभता की प्रार्थना करे और १६ माला गुरु मंत्र की करे इसके बाद उनकी साक्षी में हाथ में जल लेकर उपरोक्त साधना में सफलता की प्रार्थना और संकल्प ले |

यदि आप परिवार के साथ पूजन कर रहे हैं तब भी और यदि आप अकेले पूजन कर रहे हैं तब भी किसी भी पारिवारिक सदस्य या आत्मीय के नाम से संकल्प ले सकते हैं .

जितने सदस्य ये प्रयोग कर रहे हैं उन सभी के लिए एक-एक घृत का दीपक लगेगा . जिस बाजोट पर गुरु यन्त्र या चित्र रखा हो उस बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछाना है और सदगुरुदेव के चित्र के सामने **“आदित्य भैरव यन्त्र”** का निर्माण अष्टगंध से करना है और जहाँ पर 5 लिखा है वह पर घी का दीपक जलाना है और उस यन्त्र और दीपक का पंचोपचार पूजन कर खीर का भोग लगाना है ,यदि आप अपने परिवार के अन्य सदस्यों या अपने आत्मीयों को भी इसका प्रभाव देना चाहते हो तो यन्त्र के चारो और १ व्यक्ति के लिए १ दीपक घी का प्रज्वलित कर सकते हैं और स्वयं की ११ माला की समाप्ति पर प्रत्येक व्यक्ति की तरफ से ३ -३ माला उनका संकल्प लेकर कर सकते हैं. गुरु रहस्य माला, या स्फटिक, रुद्राक्ष या सफ़ेद हकीक की हो सकती है .अन्य मालाओं में मूंगा या शक्ति माला का चयन भी किया जा सकता है. पूर्ण एकाग्र भाव से निम्न मंत्र की ११ माला जप करना है तत्पश्चात गुरु आरती संपन्न कर उस खीर के भोग को सपरिवार ग्रहण किया जा सकता है .

मंत्र-

ओम ह्रीं श्रीं आदित्य भैरवाय सौभाग्यं प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं कृत्याय श्रीं ह्रीं ओम

OM HEENG SHREEM AADITYA BHAIRVAAY SOUBHAGYAM PRASEED PRASEED HREENG HREENG KRITYAAY SHREEM HREENG OM .

नवीन संवत्सर की उपलब्धियों को आप अपने जीवन में स्वतः ही देखेंगे. इस प्रयोग के द्वारा आप सभी को अपने अभीष्ट की प्राप्ति हो और आपकी अशुभता और दुर्भाग्य की समाप्ति होकर नयून्ताओं का नाश हो,ऐसी ही मैं सदगुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ.

****

The day , when we started our life that is known as Nav varsh . on the common belief , the Sanskar and on various facts , in a year , we are /can celebrate many times new year (nav varsh). Like Navratri is considered for hindu culture, in the same way , each states has its own new year(nav varsh) and person's own birth day is also considered nav varsh for him. And human thinking always oriented on the plane that how can we remove our weakness and get the our desired things. so that nav varsh has fulfill its meaning for us. on this day , Sadgurudev ji used to provide some unmatchable things to the sadhak and also introduced some new horizon of the divine gyan and also stated to give the diksha's that comes in the category of divyapaat ,. so that a common sadhak should not became a common but became extra ordinary in his life . after 1998 all these things had gone/stopped and no one came forward to teach that divinity and continue that tradition set by him . We have many grantha's , some are available and some are not (lost) , that are itself the evidence for those sadhana, that can introduce miracle in sadhaka's life and able to get that power through that he can accomplish the desired things.
One such a granth is "Guhy Rahasy paddhati " that is totally based on how to get favor and complete help from days , months , years and not only that but also get favor from deity (or lord) of running month , days and dev shakti and muntha so that a person can write his bhagy (luck) as he wants, and various secretive process mentioned are in that and whole granth contains 228 such a processes. Thses are related to various months and related days . but the most effective process among in that , here , I am describing in this articles for you all. Swami yogtryanand ji , who is sanyashi siddh shishy of Sadgurudev ji, has showed me the granth that is hand written and also instructed me to how to do that kriyaye (processes) and when that has to be done . he also said this prayog can be done through two ways.

· When due to belief of the majority , a nav varsh has started .
· Or when sadhak birth day is celebrated or when nav varsh started due their family or religious belief or traditions.

Whether you are believing any one , mentioned above , but you can do this prayog through two ways
1. When sun is rising , than sadhana has to be done .
2. Or on the time when sadhak was born(birth took place). Even you are doing this prayog on 1 st January but you can choose any one time mentioned above , for example .. here is someone , whose birthdays falls on 24 august at 9:35 pm at night. So sadhak can do this sadhana either on sun rising hours or at night 9:35 pm. Both times will provide same effectiveness and there is no dosha .

Either you want improvement in your will power , Or want to get job, or promotion or samman (prestige) Or for happiness related to children Or want a child Or free from dieses to your complete family. Or success in the work Or want to get love in life. Or want to travel abroad , thses things can be written in your luck by you own . and this prayog fulfill all thses desire.

Sadgurudev ji in 1991-92 gave this “Soubhagy Kritya Prayog” on the time of Navratri to all sadhak’s ,since that day was the nav varsh for sanatan dharm so this prayog was a gift to all sadhakas. In the same series this prayog “ AADITY BHAIRAV SAAYUJJY SHRI SOUBHAGY KRITYA PRAYOG ” is available to us through his blessing . before started this prayog , The guru mantra reciting of 16 round of rosary is a must , only than this prayog became effective.

According to your common belief , when any sadhak want to do this prayog on any nav varsh as per his belief , has to awake early in the morning , take a bathe wear white colored clothes and offer ardhy to Bhagvaan sury /sun. and fill that ardhy patra with water and before doing that chant 21 -21 times thses mantra so that ardhy patra became abhimantrit (energized)

Om aadityay namah

Om mitrayay namah

Om bhaskaray namah

Om ravye namah

Om khagay namah

Om pushaay namah

Om grahadhiptye namah

Only after that offer ardhy offering , than in the pooja room , he can alogwith his member of his family , can start the Sadgurudev poojan and after that Bhagvaan ganpati poojan. And the dhyan mantra used in that prayog is also describing here and in the future , also try to provide the sadhana hidden in that to all our brother and sisters.

Before Sadgurudev poojan do chant 7 times this dhyan mantra.

Agyan timirandhsy gyanajan shalakya |

Chakshurunmilit ev tamsmayi shri guruve namah||

After that you can do poojan as per panchopchar or as per your convenience (Sadgurudev ji and bahgvaan ganpati ji) and pray for good wishes in coming samvtsar , and recite the guru mantra 16 round of rosary . and after that take sankalp through taking water in your hand for success in this sadhana . Either you are doing this sadhana alone or with all the family member , you can take sankalp on the behalf of any family person and your close one. Light a earthen lamp filled with ghee , one lamp for each member taking part in this sadhana , than on the bajote (a small wooden table) place Sadgurudev chitr (photograph) on white color cloth and make a Aadtiy bhairav yantra through asht gandh on that white color cloth in front of Sadgurudev chitr. Light an earthen lamp filled with ghee on the place , where no 5 is written. And do poojan and panchopchar or that Deepak (placed on no 5) and offer kheer as a bhog . and if you wish to offer the effect of this prayog to your close one or family member , than you can place one Deepak for one person around this yantra, and when your 11 mala mantra jap has completed than you can do recite 3 - 3 mala (3 round of rosary) of mantra jap for each person for whom you want to offer the result . Mala can be guru rahsy mala or sphatik or rudraksha or white hakeek would be fine. And if not available than you can use shakti mala or moonga mala .and after that with full concentration and devotion do chant /recite 11 round of mala mantra jap of the mantra mentioned below. And than offer guru aarti and offered kheer can be distributed among the family member .

मंत्र-

ओम ह्रीं श्रीं आदित्य भैरवाय सौभाग्यं प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं कृत्याय श्रीं ह्रीं ओम

OM HEENG SHREEM AADITYA BHAIRVAAY SOUBHAGYAM PRASEED PRASEED HREENG HREENG KRITYAAY SHREEM HREENG OM .

And you are able to see your self the achievement of yours , in this new samvatsar in your life . through this prayog you all can achieve your desired things and your bad luck can be change d to good one and all your weakness be removed in your life , this is what I am a praying to sadguru dev .

****NPRU****

for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

PLZ CHECK : - http://www.nikhil-alchemy2.com/

For more Knowledge:- http://nikhil-alchemy2.blogspot.com

Posted by Nikhil at 1:43 AM No comments: Links to this post

Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, TANTRA SIDDHI

Tuesday, November 29, 2011

AMAL RUHE HAMJAAD



अचानक उस टूटे हुए कमरे का वातावरण और अधिक रहस्यमय हो गया था ,शनैः शनैः रात्रि का तीसरा प्रहर प्रारंभ हो गया था,उन्होने अपने अमल को और तीव्रता दे दी थी,मेरा आसन उन्ही के बगल में बिछा था,और उनकी सभी प्रक्रियाओं पर मैं बहुत बारीकी से ध्यान दे रहा था.

उन्होंने मुझे बताया था की आज वो **सदगुरुदेव** द्वारा प्रदत्त **सिद्धात्मा आवाहन** की विशिष्ट साधना को करेंगे,आज उन्हें ऐसा ही आदेश हुआ है.

क्या आपने पहले ये क्रिया कभी नहीं की-मैंने उत्सुकतावश **हसद बक्स** जी से पूछा .

बहुत बार की है मेरे बच्चे......अक्सर मैं उच्च कोटि की साधनाओं और रहस्यों की प्राप्ति के लिए सदगुरुदेव की आज्ञा से इस साधना का प्रयोग करता रहता हूँ-उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा.

क्या आप इस साधना को मुझे समझायेंगे ???

क्यों नहीं...आज रात्रि को तुम मेरे साथ ही इस साधना के लिए बैठना और ध्यान पूर्वक इसकी प्रक्रियाओं और विधान को देखना,तंत्र की अत्यधिक गोपनीय साधना है ,जिसके द्वारा उच्च लोकों में स्थित दिव्य व सिद्ध आत्माओं को प्रत्यक्षतः आवाहित करके उनसे अभीष्ट ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है .

वाह क्या बात है ....मजा आ गया.

बेटे ये साधना मजे के लिए नहीं की जाती है ,अपितु अत्यधिक गंभीर और एकाग्र भाव से ही इस प्रकार की साधनाओं में सफलता पाई जा सकती है ,इस बात का हमेशा ध्यान रखन और गलती से भी कभी मात्र परखने या मनोरंजन के लिए इस साधना को नहीं करना चाहिए.

जी माफ कीजिये... मैं इन बातों का ध्यान रखूँगा- मैंने सकुचाते हुए झुकी निगाहों से उत्तर दिया.

अरे कोई बात नहीं ,बस साधक को गंभीर होना चाहिए.

रात्रि को बाजना मठ के पास स्थित सरोवर के मध्य में स्थित रानिवास हमाम को इस क्रिया के लिए चुना गया ,और सारी तयारी कर गुप्त मार्ग से हम दोनों उस जगह पर पहुच गए,जबलपुर की विशेषता रही है की यहाँ के महलों या पुराने मंदिरों के गर्भ में कई तहखाने रहते हैं,जिनमे जाने का रास्ता इतना सुगम नहीं है,परन्तु तंत्र और शाक्तों का किसी समय में गहरा वर्चस्व रहा है यहाँ पर खास तौर पर चुरी नरेशों ने शैव शाक्त साधनाओं के अद्भुत प्रभाव से पूरी नगरी और उनके भग्न मंदिरों और महलों को अद्भुत रूप से शक्तिमय बना दिया था ,और जिसका प्रभाव आज भी कोई भी साधक अपनी साधना के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभूत कर सकता है.शरीरस्थ १०८ चक्रों और ३२४ केन्द्रों पर इन शक्तियों का इतना तीव्र प्रभाव पड़ता है की सारा शरीर साधना काल में और उसके बाद भी तीव्र गति से स्पंदित और रोमांचित होता रहता है.

खैर ये सब प्रथक विषय है जिस पर फिर कभी हम बात करेंगे,अभी तो.... हाँ... हम साधनाकाल की बात कर रहे थे ,सभी सामग्रियों का विधिवत स्थापन और पूजन करने के बाद हसद बक्स जी ने मन्त्र जप प्रारंभ कर दिया और बीच बीच में सामने रखे मिटटी के धूपदान में सुलग रहे कोयलों के अंगारों पर लोहबान डालने लगे,जिससे वातावरण में मादक सुगंध फैलने लगी और धुएं का तीव्र गोला जैसा बनने लगा.मंत्र उच्चारण करते हुए उन्हें ३ घंटे हो गए थे ,अचानक वातावरण में बहुत ही भीनी और धीमी धीमी सुगंध फैलने लगी ,और हसद भाई अपने दोनों हाथों को जोड़कर उस धुएं में देखने लगे ,मैंने भी उनका अनुसरण किया तो देखा की धुआँ हल्का हो गया था और अधर में एक आकृति का निर्माण होने लगा,और धीरे धीरे वो आकृति स्पष्ट होने लगी ,सफ़ेद साफा और सफ़ेद ही चोगा पहने हुए,हाथ में तस्बीह लिए हुए,लंबी सफ़ेद दाढ़ी,और चेहरे पर गजब का तेज लिए हुए आकृति और आँखे इतनी चुम्बकीय शक्ति से युक्त और नूरानी की बस जिस पर पड़े वो थम सा जाये.

आरिफ इन्हें सलाम करो.....ये सिद्ध औलिया **रूहाफिन अदब** हैं ,रूहानी ताकतों और ज्ञान में इनसे बड़ा कोई नहीं हुआ है अब तक ..अनगिनत अमलों को जो की खत्म हो गए हैं और जिनकी जानकारी भी आज किसी को नहीं है ,वे सब इनके पास सुरक्षित हैं और इन्होने उनमे नए नए अमलों को इन्होने जोड़ा है .

मैंने अदब से उन्हें सलाम किया .

उन्होंने भी जवाब देकर बहुत प्यार से मेरी और देखा और भाई जी अपने बुलाने का कारण पूछा .

भाई जी ने कहा -जी मैंने कभी सदगुरुदेव से सुना था की रूहे हमजाद और बादशाहे जिन्नात के कई सिफलि और अजायबात अमल आपने अपने पीरों मुर्शिद से पाए हैं,मैं कई सालों से इन अम्लों को तलाश रहा था,यदि आप को सही लगे तो क्या आप मुझे इनमे से कुछ बताने की तकलीफ करे .

तब उन्होंने अपने चोगे में से एक हस्तलिखित उर्दू में लिखी हुयी मोटी सी किताब दी और कहा की ये मेरे जीवन भर का निचोड़ है .इसमें वो सारे अमल हैं जिन्हें मैंने खुद आजमाए और अपने उस्ताद से पाए हैं.तत्पश्चात उन्होंने उस किताब को कैसे प्रयोग करना है बहुत देर तक समझाया और वापिस जाने की ख्वाहिश की,हमने तकलीफ के लिए माफ़ी मांगी और उनका शुक्रिया अदा किया.

सारा सामान समेट कर वापिस हम भाई जी के डेरे पर पहुचे और सदगुरुदेव से मानसिक आज्ञा प्राप्त कर उस किताब को खोल कर बैठ गए ,किताब का नाम था “ **अमल-ए-रूहानी अजायबात**”.और उस किताब में बने विभिन्न यंत्रों और क्रियाओं को समझाने लगे,रूहानी और गैबी ताक़तों की दुनिया से जुडी ऐसी जानकारी मैंने आज तक किसी भी जगह नहीं पढ़ी है. अद्भुत साधनाएं भरी पड़ी हैं उस किताब में. सबसे बड़ी बात ये रही है की सरल और सहज उपलब्ध सामग्री से होने वाले ये सभी विधान रहे हैं .

२ साल बाद जब मैं हसद भाई से मिलने गया तो वहाँ पंचमी भाई और मेरे प्यारे बंगाली दादा भी थे,जब मैंने हसद भाई से उस किताब के प्रयोगों के बारे में पूछा तो उन्होंने वो किताब मुझे थमा दी और कहा की इसके सारे प्रयोग सत्य हैं .परन्तु बहुत से प्रयोग बहुत ही भयानक है और यदि आमिल इसे करते हुए डर जाए तो उसकी जान पर भी बन सकती है,परन्तु बहुत से प्रयोग अत्यधिक सरल है और यदि इन्हें विशेष प्रकार से किया जाये तो ये तत्काल पूर्ण लाभ देते हैं.और गैबी ताक़तों को आपका मित्र भी बना देते हैं ,परन्तु मेरी सलाह ये है की बिना सद्गुरुदेव की आज्ञा और दृढ़ इच्छा शक्ति के ऐसे प्रयोग नहीं करना चाहिए. फिर उन्होंने मुझे जिन्नात,पीर और हमजाद साधनाओं के कई प्रयोग सामने करके दिखाया .हमजाद साधना के बारे में उन्होंने बताया की आकाश तत्व के योग से ही ब्रह्माण्ड के उन रहस्यों को आत्न्सात किया जा सकता है और जीवन में उतारा जा सकता है.ये नितांत सत्य है की यदि आकाश तत्व को समझ लिया जाये तो किसी भी व्यक्ति के मन को मष्तिष्क को पढ़ा जा सकता है,और उन विचारों की नकारात्मकता को सकारत्मक रूप में परिवर्तित किया जा सकता है,इसी तत्व का मूल रूप होता है छायापुरुष या हमजाद ,जो की व्यक्ति विशेष के आकाश तत्व और अग्नितत्व से निर्मित होता है ,यदि इन्हें सही तरीके से सिद्ध कर लिया जाये तो ये आपका सभी अभीष्ट पूरा कर सकते हैं ,हाँ एक बात ध्यान रखने वाली है की ये आपका काला रूप अर्थात आपकी परछाई होती है और परछाई का रंग हमेशा काला इसलिए होता है ,क्योंकि कुदरत आपको बताती है की ये आपकी नकारात्मक ताकत है और ये कभी भी आपसे छल कर सकती है ,यदि आपने सही तरीके से इनका रूपांतरण अच्छाई में नहीं किया तो ये आपको भ्रमित करते हुए आप पर ही राज करने लगती है .परन्तु मैंने सबसे निरापद और अन्य साधनाओं की अपेक्षा **अमले रूहे हमजाद साधना** को ज्यादा आसान पाया है और जल्दी सिद्ध होने वाला भी अतः मैं उसका समर्थन अन्य के मुकाबले ज्यादा कर सकता हूँ. हमजाद साधना के बहुत से गूढ़ रहस्य हैं ,चूँकि ये गैबी और रूहानी ताकट है अतः यहाँ पर ज्यादा लिखना उचित नहीं होगा,यहाँ मात्र मैं उतना ही लिख रहा हूँ जितना मैंने स्वयं करके सत्य पाया है और परख कर उसकी सत्यता देखि है ,पूर्ण श्रृद्धा

और सदगुरुदेव की कृपा और उनके आशीर्वाद से आप निश्चय ही इस साधना का प्रभाव देख सकते हैं .

किसी भी शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से इस साधना को आप प्रारंभ कर सकते हैं ,एकांत कक्ष की व्यवस्था कर लेनी चाहिए और कक्ष में १४ दिनों तक कोई ना जाये इस बात का ध्यान रखे.पश्चिम दिशा की और मुह करके बैठना है ,सफ़ेद हकीक माला से मंत्र जप होगा ,ये साधना २ चरण की है पहले ३ दिन दरूद शरीफ को सिद्ध करे और उसके बाद ४ थे दिन से नित्य 24 माला मंत्र जप होगा, हर माला के बाद लोहबान की धुप देना है या बेहतर होगा की आप लोहबान की अगरबत्ती सुलगा ले और उसे बुझने न दे, बल्कि बुझने के पहले ही नयी जला लें. रात्री का दूसरा प्रहर इसके लिए उपयुक्त रहता है. तहमद (लुंगी) पहनकर और सर पर टोपी लगी हो सफ़ेद कुरता पहना हुआ हो.शुरू के तीन दिन अपने सामने आंटे का गोल घेरा बनाकर उसमे मिटटी का दीपक रख दे और उसमे चमेली या मेहँदी का तेल भर दे और उस दीपक के चारो और ३ गोमती चक्र,सफ़ेद आकडे की ३ अंगुल लंबी जड़ और तीन हकीक पत्थर रख ले और माला से नित्य ७ माला निम्न दरुद शरीफ की करे .माला करने के पहले एक बार ..

“**बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम**” बोले और फिर माला करे .

दरूद शरीफ-

“**अल्लाह हुम्मा सल्ले अल्ला,सैयदना मौलाना मुहम्मदिव बारिक वसल्लम सलातो सलामो का या रसूल्लाह सल्ललाहो तआला अलैह वसल्लम**”

तीन दिन तक यही क्रिया रहेगी ,तीन दिन बाद उस दीपक को जिसमे तेल भरा है साफ़ रुई की बत्ती डालकर अपने पीछे लगाना है और दीपक प्रज्वलित करना है ,याद रखिये आपका आसन सफ़ेद होना चाहिए और अपने आसन के चारो और आंटे से एक घेरा दरूद शरीफ पढते हुए बनायें. सामने जो भी वस्तुए स्थापित हैं वो वैसी ही रहेगी ,अब जबकि आपके पीछे जल रहे दीपक की वजह से आपकी परछाई सामने दिखाई दे रही होगी

आपको उस की गर्दन पर आपको निगाह केंद्रित करनी है और मंत्र जप करना है ,पलकें झपक भी जाए तो कोई बात नहीं ,यथा सम्भव दृष्टि उसी पर केंद्रित करे.हाँ जप के पहले १ माला दरुद शरीफ की अवश्य करना है ताकि क्रिया हानि न पहुचाये .और सबसे पहले बिस्मिल्लाह ..... भी अवश्य कहे.मूल मंत्र जप के ७ वे दिन से ही आपकी परछाई विचित्र खेल खेलने लगेगी ,कभी गायब हो जायेगी ,कभी आकार बड़ा या छोटा कर लेगी अजीब सी आवाज सुनाई देने लगेगी,आगे के दिनों में आपको ऐसा लगेगा जैसे आपके साथ साथ कोई और आपकी आवाज में ही बोल रहा है. अंतिम दिवस आप आंटे का हलवा बनाकर रख ले और जप के मध्य में भोग लगा दे ,मंत्र जप की आखिरी मालाओं में एकाग्रता की जरुरत है क्यूंकि आपका ध्यान बांटने के लिए हमजाद जोर से धमाके करता है पर अंततः आखिरी माला से थोडा पहले ही आपकी परछाई आपका ही रूप लेकर सामने बैठ जाती है ,और मुस्कुराकर आपकी और देखती है .माला पूरी होने के बाद वो आपसे पूछती है की "बताओ मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ" तो आप कहे की जब मैं तुम्हे इस मंत्र का १४ बार उच्चारण करके बुलाउंगा तो तुम हाजिर होगे और मेरे सभी नेक काम में मेरा साथ दोगे ,तो वो बदले में आप क्या दोगे तो आप उसे कहिये की हर काम के एवज में मैं सवा पाँव आंटे का हलुआ तुझे दूँगा.आपके इतना कहते ही वो "ठीक है" ऐसा कहकर चला जाता है ,दुसरे दिन आप हलवे समेत सभी सामग्री एक गढ्ढे में दबा दे .और माला को संभल कर रख ले तथा कमरे को धो ले.और जब भी नेक काम के लिए जरुरत हो,तब उसका आवाहन करे.

मंत्र-

हमजादे हमजाद पीरो मुर्शिद का तू गुलाम ,या कुफ्र गैबी अजायबात ,हमजाद कहना मान,जो ना माने तो कुफ्र टूटे तेरे सर पर तुझे माँ का दूध हराम, पीरो पैगम्बरों की आन.

--

Suddenly that ruined room environment becoe so mysterious, gradually third part of night was started, he had speeden up his implementation. My asan was placed near by his asana only. And i was minutely observing his actions.

He told me, today we are going to do a specific Sadhna given by Shree Sadgurudev called Siddhatma Avahan sadhna, today same has been ordered.

Due to eagerness i asked to Hasad Baks ji – Have you done this before? He said – yes my son, many times i did this sadhna....Very smiling usually i take permission from Sadgurudev to performing this sadhna, so as to achieve information regarding the high level of Sadhnas & their secrets.

Will you make me understand this sadhna???

Why not... tonight you sit with me and watch keenly the preparations and procedures. Its the most secretful sadhna in Tantra because of which we can earn great knowledge from different spheres from high level of people.

Oh Wow...Thats so nice....

Son, this sadhna is done mere for pleasure rather only with high level of concentration and devotion can help you to achieve success in it. Mind well, never perform this sadhna just for sake of entertainment or authencity of it.

With consiousness and guilty eyes i said - Oh forgive me... I will adhere these points..

Oh thats fine, just sadhak need to be very serious at that time.

In night time, in centre of river, a place called Ranivas Hamam at Bajna Math was choosen for this sadhna. With all preparation we reached there via secret path on time. Its speciality of Jabalpur, that the old palaces are consists of underground rooms. from which the path is not that easy but in the Tantra and shakt had deep vigorousness over the old times. Especially the Churi Prince had activated the whole area, temples and palaces due to impact of Sahiva Shakt Sadhnas which can be validate at today's date also by any sadhak via performing sadhna. Bodily this impact hits on 108 chakras and 324 centres of body and keeps you activated, vibrated for long time.

Anyways theses are different subjects on which we can converse some other time. Now.. ya where were we...Yaa we were talking about the sadhna duration, After establisment and worship of each and every thing, Hasad Baksji started mantra chanting. Meanwhile he was flaming the Lohban Dhup on the burning coals placed infront of him. Due to this aroma the environment became mesmerizing. Vapour was converting in dense circle. While mantra chanting already three hours paased on. suddenly whole environment filled with light aroma smell. Then Hasad Bhai was greeting with folded palms in that smoky area. I followed him as it is. Now the smoke density has ben reduced and converted into a humanly shape. gradually that shape becomes clear to us. wearing whole white cloths and white hat sort of on head, holding tasbeeh in hand, long beard and terrific glow on face personality was that attractive that whosoever see it once will bound to keep eye on it.

Then he said - Arif, Greet them... He is Siddh Auliyaa Ruhafin Adab.. In Ruhaani Powers and knowledge no one touched his achievement yet... indefinite Amala which are vanished and are now invincible, are safe with him only. Even he has invented and added in them.

With due respect, I greeted him..

In return he also saw me with adorable eyes and asked whats the reason for calling me..?

Bhai ji said – I have heard some time from sadgurudevji regarding Ruhe Hamjaad and Baadshaahe Jinnaat whose various sifil and ajayabaat have been earned by you from Peero Murshid. I have been searching this since long. If you feel right, then could you please oblige me with few of them?

Then from his bag, he took out heavy weight handwritten book and said this is the extract of my whole life. It consists of all those amals which are tested by me and which I earned by my Ustad. Thereafter he explained the usage of this book. Then expressed his returning wish, we apologized u for bothering and expressed our thanks..

After winding up all things we returned at Bhai ji's place and took the metal permission from Sadgurudevji and opened that book. The name of that book was "Amal-E-Ruhaani Ajaayabaat" and started imbibing the various types of yantras and kriyas mentioned in it. I have never seen nor read the types of Ruhani and Gaibi powers before in whole life. Its full of wonderful sadhnas. The most importantly fact is that they can be done by easily available facts and figures.

After 2 years when I met Hasad bhai, I found Panchami Mai and Bangali Dada too. When I asked the experiments mentioned in that book, he then took that book in my hand simply and said all are authentic. But many of them are too dangerous and if the performer gets scared while doing this prayogs the he can die then and there.

Where as many are so easy to perform. if they are performed with special way they can give you results instantly. And make you a friend of gaibi Powers. But still I advise not to do this prayogs without Sadgurudev's permission and strong heart. Then he did Jinnat, Peer and Hamjaad Prayogs infront of me. Regarding Hamjaad sadhna he told me, with the joint of Aakash tatva, one can imbibe those secrets of universe and implement in his own life. This is mere truth, that if understood the akaash tatva correctly then you can read any person's mind and brain. Even you can convert the negative thoughts into positive. Chaayapurush is the original form of this only which is formed with Sky element and Fire element of a person. If they could be accomplishes in correct way then you can achieve any wish.

Hmm one thing you should keep in your mind i.e. this is your black form i mean shadow. and this is in black colour because Nature reminds you that this is your negative power and this can decieve you any time. If you doesn't convert it into the positive form then she will create illusion infront you and

in result rule on you.

But I found Amale Ruhe Hamjaad Sadhna much easier and safer that any one else. Even it gets easily accomplish as compared with others. Hamjaad Sadhna consists of many secrets in it. As it belongs to Gaibi and Ruhani Powers so much explaination is recommended here. Only that much can be expressed which i have found correctly and tested. With complete devotion and blessings of revered Sadgurudev You can definitely be successful in this sdhana.

On any new to moon night (Shukla Paksh) you can start this sadhna on friday. Arrange a lonely cabin, so as no one enter in atleast for 14 days. facing towards western direction, chanting with white hakik rosary.the complete sadhna is devided in 2 charan,in the first face we need to siddh Darud sharif. and in secand daily 24 rosaries should be done. After each rosary present a lohbaan dhup (aroma) or lohbaan Agarbaatti. But it should not slaked of from fire. Rather before slaking a new one should enlighted.

Dwiytiya prahar of Night is best for it. Wear a (Tahmad/ Lungi) a long cloth, white kurta and hat should be the dress. In starting 3 days make a circle of wheat flour(as u make it for chapatis) and place it infront of you and enlight the mud lamp on it. fill it with jasmine or heena oil in i, draw a gomti chakraaround the mud lamp, take the root of white Akada app. 3 inch long and 3 hakik stones and do darud sharif for 7 rosary daily before rosary chanting...
"Bismillah hirrahmanirraheem"

Darud Sharif –

“Allah humma salle allah, saiyadanaa maulana muhammdiv barik vasallam salato salamo ka ya rasulallah salallallaho taaala aleah vasallam”
Do it continuously for 3 days, after three days take that lamp filled with oil, and with cotton thread enlight it at back side of your asana. Asan should be white. And make a boundary line made up of wheat flour around your asan and pronounce darud sharif while drawing it. Established things should remain as it is, now point to be noted that due to flaming lamp is behind you so the shadow will reflect in front of you. And you have to concentrate on neck of that shadow.

And you have to do mantra chanting, you can blink your eyes, try to concentrate on it. Before mantra chanting, chant 1 rosary of Darud Sharif so that kriya doesn’t cause you harm. First of all say Bismillah also. From the 7th day of Original Mantra chanting onwards you may find your shadow is playing different games, sometime it may disappear or some time it may enhance or it may shrink, strange noises may come, in further days you may find that any body else is repeating your voice.

On last day make a sweet made up of wheat flour, sugar and milk/ water called as Halva and meanwhile chanting mantra just represent it, At last mantra chanting of rosaries more concentration is needed as to interrupt or divert you hamjaad makes different types of blasts. At last before few rosaries Hamjaad takes form exactly like you and sits infront of you. And with smiling face just stairs

at you and says "Tell me what can i do for you" Then you should say, whenever i will chant this mantra for 14 times then you should appear infront of me and will follow and support my each good hearted intensions.

Then in return you will say "I will give you 250 gm Halva against of every work" Instantly he will agrees and says "OK" and disappears infront of you. Then on next day just put all the things along with Halva in deep under ground. and Keep the rosary safe with you. and wash the cabin. Then at every good work if you need him then you can call him with the following mantra.

Mantra

"Hamjaade Hamjaad peero murshid ka tu gulaam, yaa kufra gaibi ajaayabaat, Hamjaad kehnaa maan, jo naa maane to kufra tute sar par tuze maa ka doodh haraam, peero paigambaro ki aan"

****NPRU****

for our facebook group-http://www.facebook.com/groups/194963320549920/

Posted by Nikhil at 2:53 AM 3 comments: Links to this post

Labels: MUSLIM TANTRA, TANTRA SIDDHI

Sunday, November 20, 2011

SHABAR LANKESH DARSHAN PRAYOG



रावण | एक ऐसा नाम जो की आज घर घर मे प्रचलित है, लेकिन एक तंत्र साधक के लिए ये नाम कोई की व्याख्या पूर्ण रूप से बदल जाती है| वह व्यक्तित्व जो की एक महान शिव भक्त था, शैव तन्त्रो मे अत्यधिक उच्चता प्राप्त व्यक्ति जिस के सामने शिव हमेशा ही प्रत्यक्ष रहते थे. जिसने 'श्रीशंकरं', 'उड्डीश', 'लंकेश', 'तंत्रेश' जैसे अत्यधिक महान तंत्र ग्रंथो की रचना की थि. ज्योतिष विज्ञान व् नक्षत्र तंत्र मे सिद्ध हस्त वह आचार्य अपने आप मे अजय था जिसकी भृकुटी संकेत मात्र से ग्रह अपनी स्थिति को परावर्तित कर लेते थे ज्योतिष के क्षेत्र मे रुचिवान व्यक्ति इस महान सिद्ध के ज्ञान के बारे मे रावण संहिता को देख कर ही अंदाज़ लगा सकते है. संगीत का असाधारण ज्ञान तथा संगीत के माध्यम से सम्प्पन होने वाली तांत्रिक क्रियाओ का भी एक वृहद ज्ञानी जिस विषय पर उसने अपने ग्रन्थ 'रावणीय' मे अपने असाधारण व्यक्तित्व का परिचय दिया है. काल विज्ञान के क्षेत्र मे भी रावणीय निर्णय अपने आप मे बेजोड ग्रन्थ है. नितिशास्त्र मे उसने भाष्य लिखा जो की राज्य किस प्रकार से चलाया जाय उसके सिद्धांत पर आधारित है. इतिहास गवाह है की लंका मे उसके राज्य के समय विश्व के श्रेष्ठतम राज्यों मे वह एक था. पारद विज्ञान के माध्यम से अपनी पूरी लंका को सोने की बना दी थि, साथ ही साथ मृत्युंजय पारद की वजह से उसे चिरंजीवी स्थिति प्राप्त हुई थि. पारद के सिद्धआचार्यो मे आज भी उसकी गणना लंकेश नाम से होती है. उसका लंकेश सिद्धांत तथा अन्य कई ग्रन्थ अपने आप मे बेजोड है. कर्मकांड के क्षेत्र मे भी उसने ऊंचाईयो को प्राप्त किया था. इसके अलावा उसे यन्त्र विज्ञान का भी अद्भुत ज्ञान था, त्रियक विमान जैसे जटिल और असाधारण उपकरणों पर उसने शोध कर कई विमान का निर्माण किया था, साथ ही साथ विभ्भिन यंत्रो के वह ज्ञाता रहे है. सदगुरुदेव ने भी कई बार इस व्यक्ति के प्रशंशा मे कहा है की तंत्र के क्षेत्र मे विश्वामित्र रावण और त्रिजटा के आगे किसी की गति नहीं है. एक सामान्य से भिक्षुक परिवार मे जन्म लेके एक साधक अपने आप पर ही तूल जाए तो क्या कर दिखा सकता है वह जनमानस के मध्य रख कर उसने एक नए ही अध्याय की रचना की. आज यह ग्रन्थ भले ही अप्राप्य हो गए है लेकिन लुप्त नहीं, कई तांत्रिक घरानों तथा गुप्त आश्रमो ने इसकी बराबर रक्षा की है.

सिद्धाचार्य रावण प्रणित साधनाओ का विवरण तो यदा कदा मिल जाता है लेकिन उन से सबंधित साधनाओ का आभाव ही है. सदगुरुदेव ने कई विधिया अपने शिष्यों के मध्य प्रसाद रूप मे दी है जिन से सिद्धो का आवाहन संभव होता है. ऐसे ही उन्होंने विश्वामित्र, नागार्जुन, वसिष्ठ जैसे महा ऋषियो के आवाहन की कई विधियाँ स्पष्ट की थि. साथ ही साथ उन्होंने रावण से सबंधित ऐसा लघु विधान भी प्रदत किया था जिसके माध्यम से सिद्धाचार्यलंकेश स्वप्न मे या भावावस्था मे दर्शन दे कर साधक को आशीर्वचन प्रदान करते है. सदगुरुदेव से माफ़ीसह प्रार्थना करते हुए और सिद्धाचार्यरावण को श्रद्धासुमन प्रणाम करते हुए आप सब के मध्य यह विधान प्रस्तुत कर रहा हू.

साधक इस साधना को सोमवार रात्रि मे १० बजे के बाद शुरू करे. अपने सामने पारदशिवलिंग और भगवान शिव का कोई फोटो स्थापित करे और उसका पूजन करे. उसके बाद मन ही मन सिद्धाचार्यरावण को दर्शन के लिए प्रार्थना कर निम्न मंत्र की ११ माला रुद्राक्ष माला से करे. इस साधना मे दिशा उत्तर रहे, वस्त्र व् आसन सफ़ेद रहे.

ओम लंकेशसिद्ध लंका थापलो शिव शम्भू को सेवक दास तिहारो दर्शय दर्शय आदेश

यह क्रम अगले सोमवार तक (कुल ८ दिन) नियमित रहे. साधना के बीच मे या आखरी दिन साधक को लंकेश के दर्शन हो जाते है. माला को विसर्जित ना करे, उसे पहना जा सकता है.

Raavan. The name which is known in almost every home today, but for a sadhak of tantra field the meaning of this name gets a complete change. The great being who was devotee of lord shiva, the person highly accomplished in shaiv tantra that before Shiva used to be present always. Who created great tantra scriptures like 'shrishankaram', 'uddisha', 'lankesh', 'tantresh'. He was Victorian an great command holder over subjects of astrology science and nakshatra tantra who is moves his eye, planets were used to change their positions; people interested in astrology can imagine about his vast knowledge just by mere going through once with raavan samhita. An ultimate knowledge of music and tantra process relating same; it gives us idea about his great knowledge in his scripture 'Raavaniya'. On the subject of Kaal Nirnaya the scripture 'raavaniya nirnay' stand singular. He even wrote essay scripture about the concepts that how to run a kingdom. History is proof itself that in his time duration lanka was one of the best kingdoms on the earth. With paarad vigyan he completely made his kindom lanka of gold, with that by the help of Mrutyunjay paarad he had the almost position of infinity of life. In the great scholars of the paarad (siddhacharya) he has a place with a name of Lankesh. In this field his scripture Lankesh Siddhant and others have remained non-compatible. He has also touched heights of knowledge in the field of karmakand. With that he also had fantastic knowledge of yantra vigyan (machinery science), researching and preparing complicated and abnormal machines like Triyak Vimana, he had remained knowledge holder of other different type of machines.

Sadgurudev have also appreciated this person by telling that in the field of tantra no one is ahead than Vishwamitra, Raavan and Trijata. Born as normal and poor family; if sadhak move ahead with his total mind set then what he can make; the example in the history have made by him. Today these scriptures might be unavailable but not extinct, in many traditional tantra houses and in secret aashram have protected those scriptures. Sadhanas of him are found to be mentioned somehow at few locations but sadhana related to him are very rare. Sadgurudev have many time gave sadhana in the form of blessings to call siddha. This way he explained many processes to call (avahan) of great sages like vishwamitra, nagarjuna, vasistha etc. With that he also gave small ritual related to raavan with which Siddhacharya raavan give his glimpses and blessings in either sub conscious stage or in dreams. With apology and prayer to sadgurudev and with devotional greetings to siddhacharya Raavan I am here by sharing the process with you all.

Sadhak should star this sadhana on Monday night after 10'o clock. Establish paarad shivaling and photograph of lord shiva and do the poojan. After that with prayer in mind to have darshan of siddhacharya raavan do the 11 round mantra chanting of the following mantra with rudraksh rosary. In this sadhana direction should be north, cloths and aasan should be white.

Om LankeshSiddh Lankaa Thaapalo Shiv Shambhu Ko sevak Daas Tihaaro Darshay Darshay Aadesh.

This process should be continued till next Monday (total 8 days). In between of the sadhana or on the last day of sadhana sadhak will have glimpses of Lankesh. Keep the rosary after sadhana, it could be worn.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 12:07 AM 4 comments:

Labels: SABAR SADHNA, TANTRA SIDDHI, VIGYAAN VA TANTRA BHED

Thursday, November 17, 2011

Kaal bhairav sadhana - to overcome unwanted incidents



जीवन की उपयुक्त और योग्य गतिशीलता को ग्रहण लगाने वाले मुख्य शत्रु है समस्या और अकस्मात. अगर ये दो मुख्य बाधक जीवन की गति मे ना हो तो व्यक्ति अपने भौतिक व् आध्यात्मिक पक्ष को अत्यधिक मजबूती दे सकता है. काल की गति अनंत है जो की निरंतर रूप से चलती रहती है. फलस्वरूप हमारे बोध काल से विगत को भुत तथा गंतव्य को भविष्य नाम दिया गया है. लेकिन सब घटनाये मुख्य रूप से अपने अपने स्थानों पर काल की गति मे होती ही है और जब आप काल के उस निश्चित बिंदु पर पहोचाते है तो वह वर्तमान के रूप मे आपसे प्रत्यक्ष हो जाता है. यु हमारे जीवन मे कोई भी स्थिति होती है या आती है तो वह कर्म प्रधान कारण स्वरुप पहले से ही काल मे निश्चित थि. इसी क्रम मे वह सब घटनाये काल के गर्भ मे निहित ही है चाहे वह आपके अनुकूल हो या फिर प्रतिकूल. ज़रा सोचिये की अगर हम उन प्रतिकूल पल को निकाल दे तो जीवन प्रत्येक समय मधुर हो जाएगा. लेकीन क्या ऐसा संभव है. साधना तो प्रक्रिया ही असंभव को संभव बनाने की है. इस क्षेत्र मे असंभव तो अपने आप मे एक छोटा सा शब्द बन कर रह जाता है. तंत्र मे कई ऐसे विधान है जिनकी मदद से आने वाली दुर्घटनाओ तथा विकट समस्याओ को पहले से ही जाना जा सकता है. लेकिन प्रस्तुत विधान इस प्रकार से है की वह आने वाली दुर्घटनाओ तथा विकट समस्याओ के मात्र संकेत नहीं देता लेकिन उस प्रतिकूलता को दूर कर के आप को उससे बचाता भी है. इस प्रकार के कुछ विधान तो निश्चित रूप से पुरातन तंत्र ग्रंथो मे प्राप्य है लेकिन वे सब विधान गुढ़ तथा समयगम है. अत्यधिक जटिलता तथा लंबे समय तक साधना काल होने के कारण आज के इस युग मे इस प्रकार की साधना करना अत्यधिक दुस्कर है. लेकिन सदगुरुदेव ने अपने गृहस्थ शिष्यों के मध्य ज्यादातर सरल और त्वरित परिणाम देने वाली साधनाऐ ही रखी.

निम्न साधना के लिए साधक रुद्राक्ष या काले हकीक की माला का प्रयोग करे. आसान तथा वस्त्र लाल रहे और दिशा दक्षिण. यह ११ दिन की साधना है जिसे साधक शनिवार या मंगलवार की रात्रि मे ११ बजे के बाद शुरू कर सकता है.

साधक अपने सामने काल भैरव की फोटो या विग्रह स्थापित करे. उसका पूजन कुमकुम तेल सिन्दूर पुष्प वगेरा से करे. धुप तथा तेल का दीपक अर्पित करे. उसके बाद हाथ मे जल लेके संकल्प करे की मे ये मंत्र जाप भविष्य मे आने वाली सभी दुर्घटना समस्या तथा बाधा के समाधान के लिए कर रहा हू आप इसमें मेरी सहायता करे. इसके बाद निम्न मंत्र की २१ माला जाप करे.

ॐ कालभैरव अमुक साधकानां रक्षय रक्षय भविष्यं दर्शय दर्शय हूं

इसमें अमुक साधकानां की जगह स्वयं के नाम का उच्चारण करना चाहिए.

भविष्य मे जब भी कोई समस्या या दुर्घटना होने वाली हो तो किसी न किसी रूप मे भगवान काल भैरव साधक को सूचना दे देते है. साधक अपने कार्यों को उस प्रकार से परावर्तित कर सकता है. यु तो भगवान भैरव साधक की प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप मे मदद करते ही रहते है.

==

In the path of life the basic two obstacle creator enemies are certain problems and unexpected accidents. If these main two obstacles are not there in the life; a person can have a good hold over the progress of material and spiritual life. The movement of the time is infinite which runs continuous. This resulting us in present to term went off as ‘past’ and expected as ‘future’. But every incident are basically pre-placed in the motion of time and when you reach at that particular point of the time it comes in front of you as ‘Present’. This way in our life if any situation is there or arriving situations all those were prearranged in the time as a result enforced with karma. This way all those incidents are safe in the time rather it is favourable for you or not. Just think, if anyhow we remove those unexpected unfavourable moments from the life, how beautiful our life will start acting! But, is it possible? Sadhana is process to make impossible a possible thing. In this field, impossible remains as very small word only. In tantra there are

several processes through with help of which we may get to know about the problems and unwanted incidents before it occur. But the here presented is the process through which not only meant to let you knew about the forthcoming troubles but it also saves you from the effect of the same. Such processes are for sure present in the many old tantra scriptures but those all are in codes and time consuming. As having a complicated processes and long time durations to do such sadhanas are really hard in this particular time period. But Sadgurudev have majority of the time provided simple and fast result giving sadhana to his disciples of material world.

In sadhana below, the rosary should be used of rudraksha or black hakeek. Aasan and cloth should be Red in colour and direction should be south. This is 11 days sadhana which could be started on any Saturday or Tuesday after 11 in night.

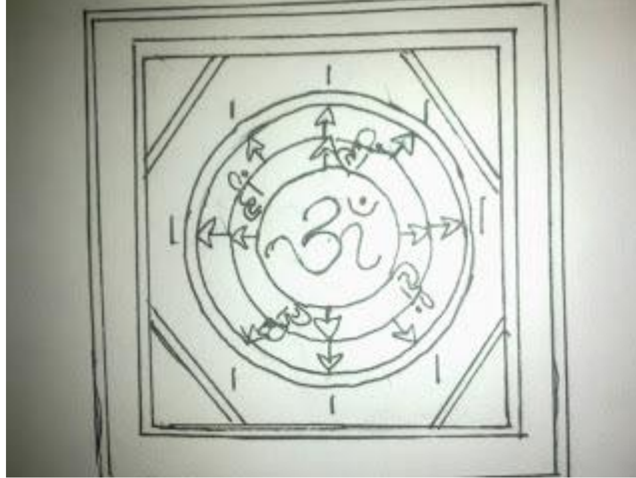
Sadhak should establish photo or idol of Kaal Bhairav infront of him. The poojan of the same should be done with red vermillion, oil, Sindoor, flower etc. Dhoop and oil lamp should be offered. After that one should take sankalp with water on palm that I am doing this mantra chanting to overcome all the accidents, problems and troubles I request you to help me. After that, chant 21 rosary of following mantra.

Om kaalBhairav amuk saadhakaanaam rakshay rakshay bhavishyam darshay darshay hum

In this mantra one should chant their own name on the place of 'Amuk saadhakaanaam'.

In future when ever any troubles or unwanted incident is about to happen, Lord kaal Bhairav will inform sadhak with any of the form. Sadhak can convert his task that way. Though lord Bhairav will keep on helping sadhak directly indirectly.

SHAKTIPAAT SIDDHI YANTRA FOR TANTRA KOUMUDI-8



तंत्र कौमुदी-८ में दिए हुए प्रयोग के लिए उपरोक्त यंत्र का प्रयोग किया जाता है. जो की उस अंक में प्रिंट नहीं हो पाया था.

******NPRU******

Posted by Nikhil at 10:41 PM No comments:
Labels: TANTRA KOUMUDI E MAG INFRMATION, TANTRA SIDDHI

Sunday, October 30, 2011

BRAHMRISHI VISHVAMITR PRANEET DIVY DEH SIDDHI SADHNA-POORN AROGYA,ROG MUKTI AUR ASAN SIDDHI HETU



कहा गया है की **पहला सुख निरोगी काया**-अर्थात स्वस्थ्य शरीर ही जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है और उसी से आप अन्य सुखों का उपभोग कर सकते हैं तथा साधना में आसन की दृढ़ता को प्राप्त कर सकते हैं।

कायिक सुख,चित्त की स्थिरता और एकाग्र भाव से साधनात्मक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिस क्रिया का प्रयोग किया जाता है,उसे आसन कहा जाता है । सामान्य बोलचाल की भाषा में सुविधापूर्वक एकाग्रता पूर्वक स्थिर होकर बैठने की क्रिया आसन कहलाती है ।जिस प्रकार इस महत्वपूर्ण क्रिया का पतंजलि ऋषि द्वारा जिस योगदर्शन की व्याख्या व प्राकट्य किया गया उसमे विवृत अष्टांग योग में आसन को उन्होंने तृतीय स्थान दिया है परन्तु इसी आसन की महत्ता को सर्वाधिक बल नाथ संप्रदाय की दिव्य सिद्धमंडलियों द्वारा प्रवर्तित षडंगयोग मे मिला है ,जहाँ पर गुरु गोरखनाथ आदि ने आसन को प्रथम स्थान पर रख कर साधना में सफलता के लिए अनिवार्य माना है । अर्थात जिसका आसन ही नहीं सधा हो भला वो साधना में सिद्धियों का वरण कैसे कर सकता है ।मैंने बहुत पहले श्वेतबिंदु-रक्तबिंदु लेख श्रृंखला में इस तथ्य का विवरण भी दिया था की **यदि व्यक्ति साधना काल में मन्त्र जप के मध्य हिलता डुलता है ,पैर बदलता है तो सुषुम्ना की स्थिति परिवर्तित होने से ना सिर्फ उसके चक्रों के स्पंदन में अंतर आता है अपितु मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्र पर तीव्र वेगी नकारात्मक प्रभाव पड़ने से साधक में काम भाव की तीव्रता भी आ जाती है और उसे स्वप्नदोष,प्रदर,प्रमेह जैसी बिमारियों का भी प्रभाव झेलना पड़ता है**।

आसन का स्थिरीकरण और शरीर की निरोगता साधना का मूल है ,इसके बाद ही चित्त को एकाग्र करने की क्रिया की जा सकती है और साधना में सफलता प्राप्त होती है ,जब साधक एकाग्र मन से लंबे समय तक जप करने में सक्षम हो जाता है तो **“जपः जपात् सिद्धिर्भवेत”** की उक्ति सार्थक होती है अर्थात सिद्धि को आपके गले में माला डालने के लिए आना ही पड़ता है ।

परन्तु ये इतना सहज भी नहीं है क्यूंकि जब तक साधक का शरीर रोग मुक्त ना होजाये तब तक वो आसन पर दृढ़ता पूर्वक बैठ ही नहीं सकता,स्वस्थ्य शरीर से ही साधना की जा सकती है ,आसन स्थिरीकरण किया जा सकता है और तदुपरांत ही साधना में सफलता प्राप्त कर तेजस्विता पायी जा सकती है । सदगुरुदेव ने स्पष्ट करते हुए कहा था की “**जब शरीर ही सभी दृष्टियों से साधना में सफलता प्राप्त करने का आधार है ,तो स्वस्थ्य शरीर की प्राप्ति के लिए विश्वामित्र प्रणीत दिव्य देह सिद्धि साधना अनिवार्य कर्म हो जाती है ,इस साधना को संपन्न करने के बाद आत्म सिद्धि का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, देहसिद्धि की सम्पूर्ण क्रिया ६ क्रियाओं का समन्वित रूप होती है**”-

मष्तिष्क नियंत्रण- साधना के लिए सदैव सकारात्मक भाव से युक्त मष्तिष्क ,जिसमे असफलता का कदापि भाव व्याप्त न हो पाए ।

आसन नियंत्रण- हम चाहे जितनी भी माला जप संपन्न कर ले,तब भी हमारे बैठने का भाव और शरीर विकृत न हो ।

चक्षु नियंत्रण- साधना काल व अन्य समय हमारे नेत्रो में कोई हल्का भाव ना आने पाए और सदैव हमारी दृष्टि तेजस्विता युक्त होकर सिद्धि प्राप्ति के गूढ़ सूत्रों को देख कर प्रयोग कर सके,आत्म सात कर सके ।

श्वांस नियंत्रण- मन्त्र जप के मध्य श्वांस की लय व गति में परिवर्तन ना हो और साधक मंत्र जप सुगमता से कर सके। क्यूंकि प्रत्येक प्रकार के मंत्र की दीर्घता और लघुता में भिन्न भिन्न प्रकार की श्वांस मात्र की आवश्यकता होती है ।

अधोभाग नियंत्रण-साधना में बैठने की क्रिया कमर से लेकर पैरों के ऊपर निर्भर होती है, उनमे दृढ़ता प्रदान करना ।

पंचभूतात्मक नियंत्रण- हमारे शरीर में व्याप्त पंचभूत तत्व यथा जल,अग्नि,वायु,आकाश और पृथ्वी की मात्रा को साधना काल में घटा-बढ़ा कर शरीर को साधनात्मक वतावर की अनुकूलता प्रदान की जा सकती है ।तब ऐसे में हमारा शरीर बाह्य और आंतरिक रोगों और पीडाओं से मुक्त होता हुआ साधना पथ पर अग्रसर होते जाता है,प्रकारांतर में वो पूर्ण आरोग्य की प्राप्ति कर लेता है ।

इस प्रकार की क्रियाओं के बाद ही शरीर साधना के लिए तत्पर हो पाता है ,और बिना शरीर को नियंत्रित किये या अनुकूल बनाये साधना में प्रवेश करने से कोई लाभ नहीं होता है ।

वस्तुतः रोगमुक्त निर्जरा काया की प्राप्ति आज के युग में इतनी सहज नहीं है ,क्यूंकि आज का युग पूरी तरह से प्रदूषित,शापित और भोग युक्त है ,तब ऐसे में **दिव्यदेह सिद्धि साधना** हमारा मार्ग सुगम कर देती है । सदगुरुदेव ने इस साधना का विवेचन करते हुए स्पष्ट किया था की **साधक जगत को ये साधना ब्रम्हर्षि विश्वामित्र जी की देन है, उपरोक्त ६ क्रियाओं का इस साधना में पूर्ण समावेश है,वस्तुतः इस मंत्र में माया बीज,काली बीज और मृत्युंजय बीज को ऐसे पिरोया गया है की मात्र इसका उच्चारण ही ब्रह्माण्ड से सतत प्राणऊर्जा का प्रवाह साधक में करने लगता है और उसकी आंतरिक न्यूनताओं का शमन होकर उसकी देह कालातीत होने के मार्ग पर अग्रसर होने लगती है**।

पारद की वेधन क्षमता अनंत है और वो अविनाशी तत्व है ,अतः इस साधना की पूर्णता के लिए महत्वपूर्ण सामग्री **पारद शिवलिंग** और **पंचमुखी रुद्राक्ष** है, इस साधना को किसी भी सोमवार या गुरूवार से प्रारंभ किया जा सकता है,सूर्योदय से,श्वेत वस्त्र,उत्तर दिशा का प्रयोग इस साधना के लिए निर्धारित है।

प्रातः उठकर पूर्ण पवित्र भाव से स्नान कर सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे तथा उनसे साधना में पूर्ण सफलता की प्रार्थना करे,तत्पश्चात साधना कक्ष में जाकर सफ़ेद आसन पर बैठ जाये और सामने बाजोट पर सफ़ेद वस्त्र बिछाकर सदगुरुदेव का दिव्य चित्र, उनकी दाई तरफ भगवान गणपति का विग्रह या प्रतीक रूप में सुपारी की स्थापना करे फिर गुरु चित्र के सामने दो ढेरी चावलों की बनाये अपने बायीं तरफ की ढेरी पर गाय के घृत का दीपक प्रज्वलित करे(याद रखियेगा की सदगुरुदेव के चित्र के सामने दो ढेरी बनानी है और गणपति विग्रह के सामने इतनी जगह छोडनी है जहाँ एक इतना बड़ा ताम्बे का कटोरा रखा जा सके जिसमे आधा लीटर पानी आ जाये) और दाई तरफ तेल का दीपक रखना है । इसके बाद गणपति जी के सामने ताम्बे का पात्र रख कर उसमे रक्तचंदन से एक गोला बनाकर उसमे **"ह्रौं"** लिख दे और उसके ऊपर पारद शिवलिंग तथा रुद्राक्ष स्थापित कर दे । इस क्रिया के बाद आप गणपति पूजन,गुरु पूजन और शिवलिंग पूजन पंचोपचार विधि या सामर्थ्यानुसार करे और गुरुमंत्र की ११ माला जप करे ।तत्पश्चात **ॐ** का ११ बार उच्चारण करे ताम्बे के पात्र में रखे स्वच्छ जल से (जिसमे गंगा जल मिला लिया गया हो) १-१ चाय के छोटे चम्मच से शिवलिंग के ऊपर **दिव्य देह सिद्धि मंत्र** का उच्चारण करते हुए जल अर्पित करे, ये क्रिया १४ दिनों तक नित्य १ घंटे करनी है ।याद रहे उपांशु जप करना है ,जो जल आप नित्य अर्पित करेंगे उसे अगले दिन अपने स्नान के जल में मिलकर स्नान कर लेना है ।

दिव्य देह सिद्धि मंत्र-

ॐ ह्रौं ह्रीं क्रीं जूं सः देह सिद्धिम् सः जूं क्रीं ह्रीं ह्रौं ॐ ॥

OM HROUM HREENG KREENG JOOM SAH DEH SIDDHIM SAH JOOM KREENG HREENG HROUM OM ।

१४ दिनों के बाद आप शिवलिंग को पूजनस्थल पर स्थापित कर दे और रुद्राक्ष को यथाशक्ति दक्षिणा के साथ भगवती काली या दुर्गा मंदिर में अर्पित कर दे तथा बाद के दिनों में मात्र २१ बार मंत्र का नित्य उच्चारण करते रहे,सदगुरुदेव की असीम कृपा से हम सभी के समक्ष ऐसी गोपनीय साधनाए बची रही है है,अतः साधनात्मक उन्नति की प्राप्ति

के लिए अपनी कमियों को दूर करे और स्वस्थ्य शरीर के द्वारा साधना करे तथा आसन की स्थिरता को प्राप्त करे जिससे उच्च स्तरीय साधनाओं की सहज प्राप्ति हो सके।

"A Sound Mind Lives In a Sound Body" it means fit body is honored as one of the most important assets of this entire world because without it we won't be able to enjoy other luxuries of our life and it is our body which helps us to be solidify on our altar i.e. called aasn.

Aasan is what??? Actually it is a means which helps us to enjoy physical comfort, stability of heart and mind so that we can attain our divine destination. Generally if you are able to sit in a single posture without any waving in your and mind than it is called aasan. Saint Patanjali defines and explains this procedure through Yogdarshan and in that too he ranks this process at third position but this process got more sophistication by the changed Shhdangyog divine sidh-mandalies of Nath Sect because in it Guru Gorakhnath regarded this aasan process the first step of success and ranks it at number one position. It means a person who is unable to make his grip strong on his aasan that can never ever have success in the field of sadhnaa. I have already explained this issue in the series of Shvetbindu-Raktbindu that during meditation or sadhnaa if a person moves his body or changes his sitting posture during mantra jaap than it is quite obvious that with his position his spinal will too change its direction and that is wrong as when spinal changes its position then with her it changes the position of our chakras too and not stop here with the changed position of spinal Mooladhaar and Swadhishthaan chakras releases negative energy and this negative energy causes erotic desires in saadhak and he started suffering from the problems as Night fall, Prader, Prameh and all that……….

Stability on aasan and fit body these two things are basic requirements for success in sadhnaa because without it, it is impossible to make your mind constant as when a saadhak can seated for a long time without any moment on his aasan then the power of "Japaah Japaat Sidhibhervaet" comes into life and when this position can attain then it is dead sure that he can get what he wants.

But let me remember you that it is not as easy as it sounds because with ill body no-one can get his/her aasan permanent stable but do not forget

that if once you will attain this position then nobody can dare to stand between you and your success. Sadgurudev himself told that" it fit body is a fundamental requirement for success in sadhnaa then to have fit and fine body it is very important to do Divya Deh Sidhi Sadhnaa as this sadhnaa will open the door for the further step i.e. called aatam sidhi. Deh sidhi sadhnaa is a collective form of six different procedures and that are-

Control over mind- during sadhnaa one should keep his mind charged with positive energy…..and there should be no thought of failure.

Control over aasan- during sadhnaa one should not depend upon the counting of rosary as keep on sitting until or unless you can.

Control over eyes- during in or out duration of sadhnaa there must not be cheap or baseless emotions should flow into your eyes…..one should keep his eyes focused on the accessories of sadhnaa so that your inner soul can absorb their qualities.

Controlled breathe- during mantra jaap there must be a deadly combination between the inhaling and exhaling process as your respiration speed depends upon the length and shortness of mantra as in different mantra different type of respiration system used.

Control over body i.e. Adhobhaag Niyantran- how much time you can sit in a single posture during sadhnaa it all depends upon your back and legs so you should pay special attention on this portion.

Control over five basic elements of body i.e. Panchbhootatmak Niyantran- if one comes to know that how he can increase or decrease the quantity of five basic elements i.e. water, fire, air, sky and earth, of his body then easily he can make his body suitable for the environment of his surrounding then slowly- slowly his body gets itself free from external and internal diseases and finally becomes pure.

After all these procedures body becomes suitable for sadhnaas as without this purity there is no use of doing any type of sadhnaa.

But the disturbing fact is that in this present scenario when everything is polluted, mall nourished to have perfect body is just like dream but with the help of Divya Deh Sidhi sadhnaa we can have an ideal body. Once while speaking about this sadhnaa Sadgurudev explained that in the field of sadhnaa this procedure is invented by Bhramrishi Vishwamitra ji

which include all 6 procedure in it with collective energy of Maya Beej, Kaali Beej and Mrityunjay Beej which are systematically arranged in a single thread and only by enchanting of it divine natural universal power starts entering in sadhak's body and when this happens all the pit falls get vanishes from his soul and with pure heart, mind and body he gets lost in his sadhnaas.

If we talk about the quality of divines and purity then without any doubt the first name which comes into our mind is Mercury (parad) so in this sadhnaa too the most important useable things are Parad Shivling and Panchmukhi Rudrakshh. This sadhnaa can be started on any Monday or Thursday and in other accessories sun rising time, white clothe and North direction is already decided.

For this sadhnaa one should gets up at early morning and take bath. After bathing he should offer water as divine offering to the sun and gets his blessings for success. Then in your sadhnaa room be seated on white altar and in front of you on wooden slab spread white cloth and put picture of Sadgurudev on it. On the left side of picture put supari in the form of Lord Ganesha. After that make two heaps of rice in front of Sadgurudev's photo and then lit a lamp (Deepak) of cow's ghee on the heap of your left side. Remember in front of Sadgurudev's photo there must be two heaps of rice similarly in front of supari ,which we has been taken as Lord Ganesha , there must be as much place that a copper bowl with half liter water can be placed there and on right side place oil lamp(Deepak). When all this done then in front of Ganpati ji put copper bowl and in it make a circle with raktchandan and in that circle write "Hroum" and then placed Parad Shivling and Rudrakshh on it. After this you need to do Ganpati Poojan, Guru Poojan and Shivling Poojan with panchopchaar procedure or as per your capacity and then enchant 11 rosary of Guru Mantra. Further while speaking OM (11 times) take water from that copper bowl (in which Ganga jal is already mixed) with the help of small tea spoon and offer that water on Shivling while speaking Divya Deh Sidhi Mantra. Carry on this procedure for 14 days and it will take just an hour. Remember you have to do Upanshu Jap and that water which you offer to Shivling, use that water during your bath on next day.

Divya Deh Sidhi Mantra-

OM HROUM HREENG KREENG JOOM SAH DEH SIDDHIM SAH JOOM KREENG HREENG HROUM OM ।

After 14 days place Shivling at your poojan place and rudraksh at Kaali or Durga Temple with some alms. After this you need to enchant this mantra 21 times daily. It is just because of our revered Sadgurudev that we still have these types of secret sadhnaas so to achieve success in sadhnaas firstly get rid of your short-comings as it is only with healthy body we can make our aasan capacity as much solid and durable as we want.

****NPRU****

Posted by Nikhil at 3:23 PM 3 comments:
Labels: GURU SADHNA, KAARYA SIDDHI SADHNA, TANTRA SIDDHI

Wednesday, October 12, 2011

HIDDEN SECRETS OF YAKSHINI SADHNA



यक्षिणी साधना के लिए साधक का चिंतन क्या होना चाहिए ?

वस्तुतः सिर्फ यक्षिणी के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक साधना के लिए साधक का चिंतन पूर्ण सात्विक होना ही चाहिए, जब एक सामान्य स्त्री भी आपको देखकर आपके मनोभाव का पता आपकी दृष्टि से लगा लेती है तो फिर अपार शक्ति संपन्न यक्षिणी भला क्यूँ कर आपके मनो भाव को नहीं समझ पाएंगी. शायद तुम्हे पता नहीं है की जैसा चिंतन हमारे मन में होता है तदनुरूप ही साधक के चारो और रहने वाला ओरा भी होते जाता है .भले ही सामान्य मानव अपनी सामान्य दृष्टि से उस ओरा को नहीं देख पाता हो पर जिनकी आकाश दृष्टि और दिव्य दृष्टि जाग्रत होती है ,उनसे ये सूक्ष्म परिवर्तन नहीं छुपाया जा सकता है. तामसिक भाव से युक्त होने पर साधक का ओरा गहरे धूसर वर्ण का ह जाता है और ये एक ऐसा रंग है

जिससे निकलने वाली किरने दृश्य या अदृश्य रूप में मन को उच्चाटित ही करती हैं. और ये किरणे अन्य रंगों की प्रभावी किरणों के मुकाबले कही ज्यादा तीव्र गति से संवेदन शील प्राणियों में असुरक्षा को पनपाती हैं ,जिसके कारण उस प्राणी, मानव या वर्ग को तुमसे असुरक्षा का अहसास होता है.ऐसे में वे कदापि उत्सुक नहीं होंगे तुम्हारे समक्ष आने के लिए.और यक्षिणी तो साक्षात् शक्ति का ही पूर्णांश होती हैं अतः उनसे आपके मन के सुक्ष्मतिसुक्ष्म परिवर्तन भी नहीं छुप पाते. अतः साधक को मन के विकारों को दूर करके ही साधना पथ पर बढ़ना चाहिए,साधना का मूल उद्देश्य ही अपने मन को व्यर्थ के भ्रम जाल से मुक्त कर विकार रहित हो अपनी समस्त न्यूनता पर विजय पाकर मानसिक और आत्मिक रूप से स्वतंत्र होना है.

और बात सिर्फ यही नहीं है बल्कि आपका चिंतन एक प्रकार से मौन वार्ता ही है अर्थात शब्द जो की मुख से निकलते हैं और ईथर में परिवर्तित होकर सम्पूर्ण ब्रम्हांड के चक्कर लगाते हैं ठीक वैसे ही हमारे शरीर का प्रत्येक रोम छिद्र मुख ही है और हमारे मष्तिष्क या ह्रदय का सम्पूर्ण मन: चिंतन अन्तः ब्रम्हांड के साथ बाह्य ब्रम्हांड को प्रभावित करता ही है. और ये शक्ति ब्रम्हांडीय ही होती हैं, साधना के द्वारा हम अपनी कल्पना योग को साकार योग में परिवर्तित करता है, वो जिस रूप में अपने साधना इष्ट का ध्यान करता है उसी ध्यान का संगठित रूप भविष्य में हमारी साधना शक्ति से प्रत्यक्ष होता है.

मंत्र मात्र किसी शब्द विशेष का समूह नहीं होता है. बल्कि जब सद्गुरु अपने स्वयं के प्राणों से घर्षित कर शिष्य या साधक को मंत्र प्रदान करते हैं तो वो अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाला दिव्यास्त्र ही हो जाता है .हाँ ये सही है की साधक के प्रारब्ध के कारण उस पर एक प्रकार का आवरण आ जाता है जिससे साधक को मंत्र का प्रभाव कुछ समय तक दृष्टिगोचर नहीं हो पाता परन्तु जैसे जैसे साधक मंत्र जप में अपनी एकाग्रता और समय बढाता जाता है या उसका जप प्रगाढ़ होते जाता है वैसे वैसे वो आवरण शिथिल होते जाता है और अंत में पूरी तरह से नष्ट हो जाता और बाकी रह जाता है तो पूर्ण दैदीप्यमान मन्त्र जो साधक के मनोवांछित को प्रदान करने समर्थ होता है. इसीलिए कहा जाता है की जितना ज्यादा जप होगा उतना ज्यादा आप सफलता के नजदीक होते जाओगे ,है ना.....

जी बिलकुल.

पर जैसा मैंने कहा की चिंतन से तो ब्रम्हांड भी प्रभावित होता है तो भला तुम्हारा मन्त्र क्यों नहीं होगा. इसीलिए जिस साधक को सफलता चाहिए होती है उसे अपना चिंतन आत्मविश्वास से लबालब और पूर्ण सात्विक रखना चाहिए, यद् रखो जरा सा भी नकारात्मक विचार आपके पूरे किये कराये पर पानी फेर देता है ठीक वैसे ही जैसे दूध से भरे हुए पात्र को फाड़ने के लिए मात्र एक बूँद नीबू ही बहुत होता है.

आपके मन्त्र जो की ईथर के रूप में ब्रम्हांड के चक्कर लगाते हैं उन्ही के आकर्षण बल से ये शक्ति आबद्ध होकर खिची चली आती है, चिंतन की नकारात्मकता उस आकर्षण बल को भी कमजोर कर देती है.जिससे वो शक्ति प्रकट नहीं हो पाती.अतः चिंतन के प्रभाव से सफलता अछूती नहीं रह सकती.इसलिए सकारात्मक चिंतन और सफलता का दृण संकल्प लेकर जब साधक साधना के लिए तत्पर होता है और मन पर संयम रखते हुए साधना पथ पर आगे बढ़ता है तो उसको सफलता मिलती ही है.

साधना में स्थिरता का क्या महत्व है ?

साधना के प्रारंभ में नए साधक उत्तेजित अवस्था में रहते हैं. जिससे उनकी श्वास-प्रश्वास की गति तीव्र होती है .और एक बात भली भांति समझ लेना आवश्यक है की श्वांस की ये तीव्रता मन को भी स्थिर नहीं होने देती है अतः मन की एकाग्रता के बगैर साधना सही तरीके से न तो संभव हो सकती है और न ही उससे उचित परिणाम मिल सकते हैं.क्यूंकि विचलित मन साधना में व्यवधान उत्पन्न करता है और साधक साधना के लिए जिन ध्यान मन्त्रों की परिकल्पना कर अपने इष्ट की छवि की अपने मन में स्थापित करता है ,और यदि मन विचलित होगा तो वहाँ पर जिस छवि का निर्माण हम करते हैं वो टूटती और जुड़ती रहती है.जब ये ध्यान बिम्ब ही स्थिर नहीं होगा तो सफलता कैसे मिल सकती है.इसलिए साधना के प्रारंभ में

प्राणायाम का विधान होता है और अतः साधना के लिए हम जिस भी आसन जैसे की सिद्धासन ,सुखासन या पद्मासन में बैठते हैं तो मन्त्र जप के पूर्व अपनी सुविधा अनुसार आसन पर सीधा बैठ कर अपने हाथ के अंगूठे को तर्जनी से मिला कर ध्यान मुद्रा बना ली जाये और ऐसा दोनों हाथों से करके अपने घुटने पर रख लो, ऐसा करने से साधना के द्वारा निर्मित उर्जा बाह्य गमन नहीं कर पाती और इस दौरान मूलबंध का अभ्यास करना चाहिए. इस क्रिया को करने से धीरे धीरे शरीर स्थिर होने लगता है तथा आसन में साधक अधिक लंबे समय तक बैठ पाता है.और जब साधक स्थिर मन और आसन से मन्त्र जप की क्रिया करेगा तो उसकी प्रतिक्रिया में ये ब्रम्हांडीय शक्तिया सफलता का वरदान तो देंगी ही ना.

मन्त्र कैसे कार्य करता है ?

मन्त्र का चयन कभी भी ग्रन्थ देखकर नहीं किया जाना चाहिए बल्कि मंत्र की अपने गुरु से विधिवत प्राप्ति की जनि चाहिए अर्थात गुरु के चरणों में जाकर अपने अनुकूल मन्त्र प्राप्ति की याचना करनी चाहिए.तब गुरु रिपु,सार्थक और और स्व प्राणों से घर्षित मंत्र साधक की सफलता के लिए अपने आशीर्वाद के साथ प्रदान करते हैं.अधिकांश साधक इस भय से की न जाने हम जो साधना कर रहे हैं उसे जानकर गुरुदेव हमारे बारे में क्या सोचेंगे अपने गुरु से साधना और मन्त्र के बारे में कोई बात नहीं करते हैं ,पर आप खुद ही सोचो की उस परब्रम्ह गुरु सत्ता से भला क्या छुपाया जा सकता है ,और आपको सफलता प्रदान कौन करेगा ??? वही गुरु ना. तब सफलतादायक मन्त्र भी तो आप उन्ही से प्राप्त कर पाओगे ,उनके श्रीमुख से मन्त्र की मूल ध्वनि और उसका आरोह अवरोह भी आप को भली भांति समझ में आ जायेगा. यदि किसी मजबूरी वश उनके श्रीचरणों में जा पाए तब उनके द्वारा निर्देशित या लिखित मन्त्र की साधना उनसे पूर्ण विनम्रभाव से मानसिक आज्ञा लेकर ही करना चाहिए.और यदि इसी मध्य आपको गुरुधाम जाने का अवसर प्राप्त हो जाये तो उनसे मिलकर अपना जप मन्त्र बता दे ताकि यदि उच्चारण में या मन्त्र में कोई मात्र या वर्ण दोष हो या गलती से वो आपके शत्रुकुल का हो तो गुरु उसका परिहार कर सके.

ये शत्रुकुल क्या है ?

अष्टादश सिद्ध विद्याओं को छोड़कर अन्य देवी देवताओं के मन्त्र ग्रहण में काफी विचार करना पड़ता है,शास्त्रों में इसके लिए कई प्रावधान और नियम बताये गए हैं जैसे की क्या मन्त्र देव अपने कुल का है,उसकी राशि और अपनी राशि में क्या सम्बन्ध है,उसका नक्षत्र क्या है.तथा जो मंत्र हम जप करने जा रहे हैं वो किस तत्व को प्रतिनिधित्व करता है ,वो तत्व हमारे नामांक तत्व का मित्र है, शत्रु है या तठस्थ है.और ये सारी क्रिया अत्यंत जटिल है.क्यूंकि यदि गलती से भी साधक शत्रु मंत्र का चयन कर लेता है तो मंत्र देव अपनी प्रतिकूलता से साधक को परेशां कर देते हैं. इसलिए इतने लफड़ों में न पड़कर सबसे अच्छा यही है की साधक गुरु मुख से ही मन्त्र की प्राप्ति करे या उनके द्वारा निर्देशित मन्त्र की साधना करे. क्यूंकि उसमे ऐसा कोई भय नहीं होता है.

मैंने सुना है की मन्त्र का पुरश्चरण करना पड़ता है, तभी सफलता मिलती है.ये पुरश्चरण क्या है ?

गुरु के द्वारा निर्दिष्ट जप संख्या को क्रम विशेष से निर्धारित अवधि में पूर्ण करना ही पुरश्चरण कहलाता है.तथा इस अवधि में साधक को संयमित जीवन यापन करना पड़ता है .इन दिवसों में वो सामाजिक कार्यों से दूरी बनाये रखता है.

पुरश्चरण के पांच अंग होते हैं-

जप-इसमें मंत्र के देवी या देवता का विधिवत पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन किया जाता है,इन उपचारों के अतिरिक्त देवता पूजन का विशेष क्रम तांत्रिक साधना में किया जाता है.

भूमि शोधन-साधना कक्ष के स्थान का पूजन भूमि शोधन कहलाता है.द्वार देवताओं का पूजन कर धरती को अर्घ्य प्रदान करे,फिर आसान शोधन मंत्र से भूमि पर पुष्प,अक्षत आदि अर्पित कर आसान बिछाए और उस पर बैठे.

देह शोधन-साधक प्राणायाम संपन्न करता है,फिर भूत शुद्धि,मातृकाओं से न्यास, अपने इष्ट मन्त्र आर ऋष्यादिन्यास,करन्यास आदि संपन्न करने से साधक का शरीर शुद्ध हो जाता है .

द्रव्यदिशोधन-साधक की साधना का अनिवार्य अस्त्र होती है उसकी साधना सामग्री,इसमें साधना में प्रायोजित सभी सामग्री जैसे, यन्त्र, माला,पुष्प,दीप,धुप,वस्त्र आदि सभी सामग्री आ जाती है.इनका पूर्ण रूपेण मन्त्रों केर द्वारा शोधन किया जाता है तत्पश्चात आगे की क्रिया की जनि चाहिए.(द्रव्यशोधन एक अनिवार्य और लंबी साधनात्मक क्रिया है जिसका पूर्ण साधनात्मक विवरण इसी पत्रिका में अन्यत्र दिया जा रहा है)

माला पूर्ण रूपेण संस्कारित होना चाहिए ,असंस्कृत माला से जप करने पर सफलता तो मिलती नहीं उलटे मानसिक तनाव की अप देवताओं के द्वारा प्राप्ति होती है वो भी मुफ्त में.यदि जप काल में साधक अखंड दीपक प्रज्वलित कर ले तो कही ज्यादा अनुकूल रहता है.और यदि ऐसा न हो सके तो कम से कम जप काल में दीपक न बुझने पाए ऐसी व्यवस्था कर लेनी चाहिए.

होम-नित्य प्रति के जप का दशांश हवन नित्य यदि कर दिया जाये तो उचित होता है ,कई व्यक्ति हवन के बदले दशांश जप कर लेते हैं , पर मेरे मतानुसार हवन करना कही ज्यादा अनुकूल और लाभदायक होता है.क्योंकि हवन करने से मंत्र दीप्त होता है और उसमे विशेष चैतन्यता आती है.

तर्पण-हवन करने के बाद बड़े से ताम्बे के बर्तन में या किसी सरोवर में हवन की मात्र का दशांश तर्पण करे. बर्तन को अष्टगंध,कपूर ,दूर्वा आदि मिश्रित जल से पूरित कर दे और जो भी देवता या देवी हो उसका नाम लेकर 'तर्पयामि नमः' कह कर जल अर्पित करें.

मार्जन-तर्पण के बाद उसकी दशांश संख्या से सरोवर में खड़े होकर अपने सिर पर दूर्वा द्वारा कुम्भ मुद्रा से देवता का नाम लेकर "अभिषिन्चामि नमः' कहकर जल का अभिषेक करें.

उसी दिवस या अंतिम दिवस ब्राम्हण भोज और कुमारी भोज का आयोजन करे.

तत् पश्चात अपनी साधना की पूर्णता प्राप्ति के लिए गुरु के श्री चरणों में प्रार्थना ज्ञापित करे. यदि कोई इस प्रकार का क्रम साधना में अपनाता है तो उसे निश्चय ही अनुकूलता मिलती ही है.

किन स्थानों पर साधना करने से यक्षिणी साधना में शीघ्र सफलता मिलती है ?

सिद्धपीठों,गुरु गृह,नदी तट,पर्वत शिखर,एकांत वन ,विल्व या पीपल वृक्ष के नीचे, साधना करने से सफलता शीघ्र ही मिलती है. इस साधना को यदि कामाख्या पीठ के सौभाग्य कुंड या प्रांगण में संपन्न किया जाये या फिर अलकापुरी में या पचमढ़ी ,माउन्ट आबू ,हिडिम्बा मंदिर आदि स्थानों पर साधना करने से कही ज्यादा अनुकूलता मिलती है. यदि ऐसा संभव ना हो पाए तो घर में भी ये साधना की जा सकती है .पर साधना काल के मध्य कोई और उस कमरे में ना जाने पाए.

इस साधना में सौभाग्य कुण्ड की क्या महत्ता है ?

यदि साधक यक्षिणी साधना के प्रारंभ में " **ॐमम सर्व मनोरथान पूर्णार्थे अस्य सौभाग्य वारिः पूर्ण यक्षिणी सिद्धये नमः**" बोलकर २१ बार जल का तर्पण का माँ कामाख्या से करता है तो उसे सफलता की प्राप्ति होती ही है.ये क्रिया सिर्फ सौभाग्य कुण्ड में ही हो सकती है.इस प्रकार की साधनाओं में उस स्थल की अपनी अलग महत्ता और प्रभाव है.

साधक का आहार क्या होना चाहिए ?

साधक को यथा संभव अत्यधिक तिक्त या अत्यधिक मधुर भोजन ना करके शुद्ध सात्विक आहार का प्रयोग साधना काल में करना चाहिए यदि हविष्यान्न का प्रयोग किया जाये तो और बेहतर है. इसके अतिरिक्त भूमि शयन,पूर्ण मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन भी किया जाना चाहिए.

यक्षिणी साधना में मंत्रजाप के पूर्व क्या कोई विशेष क्रिया कर लेनी चाहिए ?

यदि साधक यक्षिणी मंत्र के पहले **'स्त्रीं'** का जप अपने विशुद्ध चक्र पर ध्यान लगाकर और उसका स्पर्श करके १० बार कर ले तो उचित है.तथा मंत्र जप के पूर्व **'ओम'** का १० बार उच्चारण भी कर लेना चाहिए.प्रत्येक यक्षिणी साधना के पूर्व पूर्णिमा को पूर्ण पवित्र होकर शुद्ध चित्त से ११ दिनों तक महामृत्युंजय मंत्र का ५००० जप अवश्य संपन्न कर लेना चाहिए.और इसके साथ नित्य प्रति कुबेर मंत्र की भी तीन माला संपन्न करनी चाहिए.ये एक अनिवार्य कर्म है ,अधिकांश साधक साधना को सिर्फ खानापूर्ति मानते हैं,जितना जप बताया है ,उतना कर लिया और गिनती गिनते गए और कह दिया की भाई मैंने तो मंत्र जप किया था, न तो शुचिता –अशुचिता का ध्यान रखा और न ही अपने मनोभावो को और अपने दृष्टिकोण को परखा.बस मुह उठाकर कह दिया की भाई साधना-वाधना सब बकवास है.यक्षिणियों के अधिपति कुबेर होते हैं.और यदि आप अधिपति को ही प्रसन्न नहीं कर पाएंगे तो बगैर उनकी अनुमति के क्यूँकर कोई यक्षिणी आपका अभीष्ट साधने आएगी.इसी प्रकार भगवान मृत्युंजय की उपासना और मन्त्र से ही कुबेर सिद्धि का द्वार खुलता है और वे प्रसन्न होकर आपका मनोरथ पूर्ण करते हैं. यदि वर्ष में मात्र एक बार गुरु पूर्णिमा से अगली पूर्णिमा तक किसी भी विल्व-वृक्ष के नीचे बैठ कर भगवान शिव का पूर्ण षोडश उपचारों से पूजन और अभिषेक करने के बाद उत्तराभिमुख होकर मृत्युंजय मंत्र का जप रुद्राक्ष माला से करे.तत्पश्चात निम्न कुबेर-मन्त्र की ३ माला जप करे –

ॐयक्षराज नमस्तु शंकरप्रिय बांधव,एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीम् कुरु ते नमः.

ठीक इसी प्रकार से पूर्ण रूप से कुबेर साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए कुबेर की शक्ति कुबेर यक्षिणी मंत्र की भी एक माला नित्य करनी चाहिए ,वैसे कुबेर यक्षिणी को प्रत्यक्ष करने और उनका अनुग्रह प्राप्त करने का अपना एक विशेष विधान होता है परन्तु अन्य यक्षिणियों की साधना और कुबेर साधना में सफलता प्राप्ति के निमित्त भी इस साधना के मंत्र की १ माला कुबेर मन्त्र के साथ होनी ही चाहिए.इसके प्रभाव स्वरुप जहाँ आर्थिक अनुकूलता प्राप्त होती है वही यक्षिणी के पूर्ण साहचर्य की प्राप्ति हेतु कुबेर देव की कृपा भी मिलती है-

ॐकुबेर यक्षिण्यै धन धान्य स्वामिन्यै धन धान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा

इसके बाद मूल यक्षिणी साधना प्रारंभ करना चाहिए ,और हो सके तो नित्य कुमारी पूजन करना चाहिए.

यक्षिणी कितने प्रकार की होती हैं,और इनके कितने प्रकार होते हैं ?

यक्षिणी के कई वर्ग होते हैं,ये अलग अलग पांच तत्वों से सम्बंधित होती हैं और इनमे उसी तत्व विशेष के अनुसार शक्ति होती हैं.जैसे कोई रसायन क्षेत्र का ज्ञान देती है तो कोई निधि दर्शन और प्राप्ति का सामर्थ्य प्रदान करती है,कोई अतीन्द्रिय लोक का ज्ञान देती है तो कोई पत्नी सुख देती है, किसी के सहयोग से रससिद्धि की प्राप्ति होती है तो कोई प्रेम के साथ अतुलनिय संपदा प्रदान करती है. इसी प्रकार विभिन्न वनस्पतियों में भी इनका वास होता है,जैसे-

बिल्व यक्षिणी
निर्गुण्डी यक्षिणी
कुश यक्षिणी
आम्र यक्षिणी
सहदेवी यक्षिणी
पिप्पल यक्षिणी
तुलसी यक्षिणी

आदि पर जब भी इन यक्षिणियों की साधना की जाये तो सम्बंधित वनस्पति के आस पास ही की जानी चाहिए , वैसे बसंत ऋतू और श्रावण मास इनकी साधनाओं के लिए अधिक उपयुक्त होता है ,क्योंकि इस काल में सम्पूर्ण प्रकृति में मानो आपकी सहयोगी हो जाती है. परन्तु ये भी ध्यान रखने योग्य है की जो

वनस्पति जिस काल में विकसित होती हैं उसी ऋतू विशेष में उस वनस्पति से सम्बंधित यक्षिणी की साधना करनी चाहिए. उपरोक्त वानस्पतिक यक्षिणियों की शक्ति भी भिन्न भिन्न होती है, जैसे कोई ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री होती है तो कोई अशुभ का निवारण करती है, कोई विद्या प्रदान करती है तो कोई वाक् सिद्धि और राज्य सुख प्रदान करती है.पूर्ण सफलता के लिए प्रायः सभी यक्षिणियों की कम से कम एक माह तक तो साधना करनी ही चाहिए.

क्या मृत्युंजय अभिषेक की भी कोई गोपनीय पद्धति है?

हाँ अवश्य है,यक्षिणी साधना में सफलता के लिए **'लाकिनीश मृत्युंजय'** की उपासना व अभिषेक किया जाता है.क्यूंकि इनका निवास मणिपूर चक्र में होता है और ये स्थान अग्नि और अमृत दोनों का ही होता है अतः इनका अभिषेक करने से अग्नि की आकर्षण शक्ति आपमें तेज की वृद्धि कर देती है और निसृत अमृत आपको जरा रोगों से मुक्त कर कायाकल्प करता है,और यही तेज व पौरुष बल यक्षिणी को आपकी और खीचता है.इसके लिए पारद शिवलिंग के ऊपर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूर्ण विनम्र भाव से अक्षत अर्पित करे.

ॐपरम कल्याणाय नमः

ॐविश्वभावनाय नमः,पार्वतीनाथाय,उमाकान्ताय ,विश्वात्मनाय,अविचिन्ताय,गुणाय,निर्गुणाय,धर्माय, ज्ञानमक्षाय,सर्वयोगिनाय,कालरुपाय,त्रैलोक्य रक्षणाय,गोलोकघातकाय,चन्डेशाय,सद्योजाताय,देवाय,शूल धारिणे, कालान्ताय,कान्ताय,चैतन्याय,कुलात्मकाय,कौलाय,चन्द्रशेखराय,उमानाथाय,योगीन्द्राय,शर्वाय, सर्वपूज्याय,ध्यानस्थाय, गुणात्मनाय,पार्वतीप्राणनाथाय,परमात्मनाय.

उपरोक्त नामो के पहले ॐतथा बाद में नमः लगाकर अक्षत अर्पित करे. इसके बाद मृत्युंजय मंत्र का जप करते हुए कच्चे दूध और जल के मिश्रण से अभिषेक करे.मृत्युंजय मंत्र सदगुरुदेव की पत्रिका में कई बार प्रकाशित हुआ है.

सर्व सामग्री को उत्कीलन करने का क्या विधान है ?

पूजा या साधना में प्रयुक्त सामग्री जैसे,यंत्र,माला,पुष्प,फूल,फल आदि लगभग सभी सभी सामग्रियों का नितांत शुद्ध होना आवश्यक है.यदि इनमे से कोई भी सामग्री में जरा सी भी वैचारिक या स्पर्श की वजह से अशुद्धता आ गयी तो फिर इनके प्रयोग से साधना में कोई लाभ नहीं होता.हम साधना के निमित्त बाजार से पुष्प,फल इत्यादि लेते हैं,अब जिनसे आपने लिया है वो किस शारीरिक या मानसिक स्थिति में थे किसे पता,उन्होंने शंका निवारण के पश्चात हाथों को धोया था या नहीं और कैसी मनः स्थिति में उन्होंने आपको सामग्री दी है,इसी प्रकार पूजा स्थल में यन्त्र माला इत्यादि रखे हैं और उसे घर के बच्चो या अन्य सदस्य ने उठा लिया या स्पर्श कर लिया तब भी उनकी प्राणशक्ति और शारीरिक मानसिक शुचिता से वे साधना सामग्री प्रभावित होंगी ही. रसोई से नैवेद्य बनकर साधना कक्ष में आते आते न जाने किसकी दृष्टि पद जाये या जब भोजन तैयार हो रहा था उस समय बनाने वाले का चिंतन कैसा था.यन्त्र के ऊपर कीट,पतंगे,चूहे,छिपकली आदि के चलने से भी यन्त्र माला इत्यादि दोषपूर्ण हो जाते हैं.अतः ऐसी स्थिति में उन्कपरिहार करने के लिए या उत्कीलन करने के लिए एक विशेष मंत्र का प्रयोग किया जाता है ,जिसे पहले सिद्ध करना अनिवार्य है.

निम्न मंत्र को पहले ५१ माला मंत्रजप करके सिद्ध कर लेना चाहिए,बाद में जब भी आप साधना हेतु सामग्रियों का प्रयोग करे तो इस मन्त्र को १०८ बार जप कर उससे जल को अभिमंत्रित कर सभी सामग्रियों पर छिड़क दे.

मन्त्र- **ॐह्रीं त्रिपुटि त्रिपुटि कठ कठ आभिचारिक-दोषं कीटपतंगादिस्पृष्टदोषं क्रियादिदूषितं हन हन नाशय नाशय शोषय शोषय हुं फट् स्वाहा.**

यक्षिणी साधना के अन्य गोपनीय तथ्य क्या है,जिनका प्रयोग करने से निश्चित सफलता मिल ही जाये ?

यक्षिणी साधना के मूल यंत्र के साथ दो सामग्रियों की और अनिवार्यता होती ही है-

अप्सरा यक्षिणी तंत्र प्रतीक

निश्चित यक्षिणी सायुज्य पारद गुटिका

इसके अतिरिक्त स्वयं के हाथो से या गुरु के द्वारा निर्मित यक्षिणी का चित्र या विग्रह भी पास में होना चाहिए ,इससे ध्यान में अनुकूलता मिलती है.यक्षिणी साधना में यक्षिणी कीलन की गोपनीय क्रिया भी की जाती है ,इस क्रिया में भोजपत्र या सफ़ेद कागज पर त्रिगंध से यक्षिणी का लघु चित्र या यन्त्र बनाया जाता है और उस चित्र के मध्य में मूल मंत्र लिखा जाता है. यदि आपने यन्ता का अंकन किया है यतो उसके मध्य में मंत्र नहीं लिखना है.अब उस चित्र के चारो और गोलाकार में मंत्र लिखना रहता है .उसका तरीका ये है की पहले मंत्र लिखा फिर मूल मंत्र का पहला अक्षर फिर मंत्र लिखा फिर दूसरा अक्षर इसी प्रकार मंत्र फिर अक्षर फिर मन्त्र फिर अक्षर और अंत में फिर मंत्र लिखा जाता है ,circle वृत्त या गोलाकार रूप में और ये क्रिया साधना के प्रारंभ में की जाती है तथा मंत्र लिखते समय जब आप मंत्र के अक्षरों को लिखते हो तो उस अक्षर पर २१ बार मूल मंत्र को जप कर अनामिका अंगुली का स्पर्श करना चाहिए ,ये क्रम अंतिम अक्षर तक रहता है .ये क्रिया कीलन कहलाती है और इस क्रिया के द्वारा यक्षिणी को साधक अपने मन्त्रों से कीलित या बांध लेता है.और यक्षिणी को प्रत्यक्ष होने और सिद्धि देने के लिए बाध्य होना पड़ता है. ये क्रिया और आगे का पूर्ण जप वीर भाव से ही होना चाहिए वो भी क्रोध मुद्रा में. इसके अतिरिक्त निश्चित यक्षिणी सायुज्य पारद गुटिका को प्राप्त कर उस पर भी मूल मंत्र की ५ माला कर लेना चाहिए जिससे वो गुटिका उस यक्षिणी विशेष से सम्बंधित हो जायेगी.इस गुटिका पर आप अलग अलग कई यक्षिणियों की साधना कर सकते हैं. इसी प्रकार ध्यान के बाद साधना के पूर्व यक्षिणी का आवाहन करने, उन्हें आसन देने ,उन्हें आसान पर बैठने और उनके सान्निध्य के लिए,उन्हें हृदय में स्थापित करने के लिए , उनका पूजन करने के लिए तथा जप के उपरांत उनका विसर्जन करने के लिए भी कुछ विशेष क्रिया की जाती है जिनका वर्णन नीचे किया जा रहा है.

इसी प्रकार कुछ मूल मंत्र के अतिरिक्त कुछ विशेष मन्त्रों और मुद्राओं की भी अनिवार्यता होती है.(**मुद्राओं के चित्र तो आपको ग्रुप के फाइल सेक्सन में मिल जायेंगे,क्योंकि अभी वेब साईट का कार्य चल रहा है इसलिए उसे कामाख्या कार्य शाला के बाद अपलोड कर दिया जायेगा)**

यक्षिणी मुद्रा- क्रोधान्कुशी मुद्रा-जिसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व को ही आकर्षित किया जा सकता है.

इस मुद्रा का प्रयोग करके निम्न मंत्र से यक्षिणी का आवाहन करे.

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ अमुक यक्षिणी स्वाहा.

आवाहन के बाद सम्मुखिकरण मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए निम्न मंत्र को उच्चारित करे-

ॐमहा यक्षिणी मैथुन प्रिये स्वाहा.

फिर सान्निध्य करण मुद्रा का प्रदर्शन करते हुए –

ॐकामभोगेश्वरी स्वाहा

मंत्र का उच्चारण कर आसन प्रदान करे.इसके बाद दोनों हाथ की मुट्ठी एक साथ बांध कर अपने वक्षस्थल पर रखे और

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः

का उच्चारण करे .फिर प्रमुखी मुद्रा अर्थात दोनों हाथ की मुट्ठी बांध कर तर्जनी और मध्यमा अंगुली को फैलाये तथा निम्न मंत्र से यक्षिणी का गंध,पुष्प,धुप,दीप,नैवेद्य आदि से पूजन करे –

ॐसर्व मनोहारिणी स्वाहा.

सम्पूर्ण जप के पश्चात पुनः आवाहन मुद्रा का ही प्रयोग करते हुए बाये को बाहर की और हिलाते हुए निम्न मंत्र का प्रयोग कर विसर्जन करे, याद रखे आवाहन में दाये अंगूठे को बाहर से अंदर हिलाते हैं और विसर्जन में बाये अंगूठे को अंदर से बाहर .

ॐह्रीं गच्छ गच्छ अमुक यक्षिणी पुनरागमनाय स्वाहा

यदि इन क्रियाओं का प्रयोग करने पर भी इन यक्षिणियों का साहचर्य न प्राप्त हो तब क्या करना चाहिए?

वैसे ऐसा संभव नहीं होता है की इन क्रियाओं का प्रयोग किया जाये और आपका मनोरथ सिद्ध न हो ,यदि आपको उपरोक्त मुद्राओं का ज्ञान न हो पा रहा हो तो भी **तंत्र रहस्यम** केसेट्स में बताई गयी पांच मुद्राओं का १०-१० सेकेंड प्रदर्शन करने से भी अनुकूलता मिलती है .यथा **दंड,मत्स्य,शंख,अभय और ह्रदय मुद्रा**.

उपरोक्त मन्त्र के प्रभाव से जप और पुरश्चरण अवधि पूर्ण होने पर भी यदि हाथ धर्मिता के करण ये शक्तियां सामने नहीं आ रही हो तो –

ॐबंध बंध हन हन अमुकी हुं मंत्र का ८००० बार जप करे तथा २१ माला **ॐसर्वसिद्धियोगेश्वरी हुं फट** मन्त्र की जप करें ,इससे निश्चय ही सफलता की प्राप्ति होगी ही. उपरोक्त सभी क्रियाएँ गोपनीय व दुर्लभ हैं. इनका प्रयोग निश्चित ही कालानुसार करना चाहिए.

===

FOR YAKSHINI SADHNA HOW A SADHAK'S MENTALITY SHOULD BE?

Without any second thought for every sadhnaa his heart and mind should be pure because if a common lady can read your thoughts by looking at into your eyes than it is thousand times easy for powerful YAKSHINI to read your thoughts at once. May be you do not know that according to your thoughts your surrounding release the same vibrations. Though a common man cannot see or catch these vibrations but one who has his AKASH DRISHTI and DIVYA DRISHTI activated can see all these micro changes. If Sadhak poccess TAMSIK BHAV than this aura get visible in smoky black color and this color directly or indirectly tempt the mind and as compare to other color rays these rays work faster and give birth the feeling of insecurity in the mind of a person, community from you. And in this situation they will not come closer to you and YAKSHINI is lively source of energy so you cannot hide these micro emotions of your mind from her. So for this reason before starting any sadhnaa Sadhak should make him free from all these temptations and sins so that he can feel himself mentally and spiritually free.

Not enough yet because your meditation is just like speechless conversation(MOUN VAARTA) just like the sounds which are changed into ether(upper air)

after spoken move into the whole universe just like every pore(ROME SHIDRA) of our body is just like a mouth and our every concentrated thought cast effect on universe. By sadhnaa we change our imagination (KALPNA YOG) into reality (SAKAAR YOG) and in which shape or form we think about our ISHT DEV in near future that shape will take real form in front of us.

Manta is not just a collection of words because at that time when it given to a SHISHYA by his GURU it becomes divine power to achieve everything. It is true that at the beginning Sadhak does not realize the actual power of it but as he does more and more concentration and gives more and more time to this MANTRA JAPP then he comes to know that he can get whatever he wants with this. That is why it is said that as much JAPP you do success will come as much closer to you. Isn't so…..

Yes...It is.

As I told earlier that concentration has power to effect the universe than why your MANTRA not. For this one who wants to have success he should do his meditation with self confidence and with pure heart and mind as well. Always remember that to spoil a jug of milk one drop of citric acid is enough just like that to spoil your sadhnaa one negative thought is enough.

Your MANTRA which moved in open air has the power to attract divine powers and negative thoughts spoil this attraction power too and you do not get success. That is why when a Sadhak starts his sadhnaa with positive thoughts and strong resolution than surely he gets success.

WHAT DO WE MEAN BY STABILITY IN SAADHNA?

At the beginning of sadhnaa new Sadhak becomes more excited which makes his process of SHWAAS PRSHWAAS faster and it is this fastness of SHWASS which don't keep the concentration stable and without concentration sadhnaa will give no result because as without concentration during sadhnaa with the help of MANTRAS the picture of our ISHTT which we make get at once destroyed and

re-built. For this reason at the beginning of sadhnaa there is a PRAANAAYAAM VIDHAAN exists so for sadhnaa in which posture we sit it can be SIDH-AASAN, SUKH-AASAN or PADDAASAN before starting MANTRA JAPP sit straight on aasan and make DHYAAN MUDRAA by touching your hand thumb with TRJANI. Do this with both of your hands and then put your hands on your knees. By doing so the energy which will produce during sadhnaa cannot move out and remember feel MOOLBANDH during this process. By this process body becomes stable and Sadhak can devote more time. And when Sadhak will carry on MANTRA JAPP with great concentration then DIVINE POWERS will surely blessed him with success.

HOW A MANTRA FUNCTIONS?

Do not choose any mantra from granths as it should be taken from GURU while following some rules as one should ask for MANTRA while sitting at the feet of GURU. Then GURU himself blessed him for success by providing him MANTRA which comes out from RIPU, SAARTHAK and HIS INNER SOUL. Sometimes some Sadhak thinks what will their GURU think about them when he comes to know about their sadhnaa they do not tell anything about it to him but they forget nothing remain secret from GURU'S eye and without him who will give them success?? It is only GURU who can tell you which MANTRA you need to get success in your desired sadhnaa and again it is only from his mouth you will come to know how you have to pronounce this MANTRA but if for any reason you cannot go to GURU than you can take help from written mantra but then should be you need to take his permission mentally. And in between if you get chance to visit GURU DHAAM then tell him about your sadhnaa and MANTRA so that if there is any mistake in it pronunciation he can correct it and if it is against you (SHTRUKAAL) then GURU can protect you.

FOR WHAT SHATRUKUL STANDS FOR?

Except ASHTAADASHH SIDH VIDYAON all the mantra related to any god and goddess should choose carefully. There are many rules written in SHAASTRAA

about it as JAISE KI KYA MANTRA DEV APNE KUL KA HAI, USKI RAASHHI AUR APNI RAASHHI MEIN KYA SMBNDH HAI, USKA NKSHHTRA KYA HAI and the MANTRA which we are going to meditate is represented by whom, whether that NAMAANK TATV is our friend, enemy or TATTHATSATH and all this is very complicated because if by mistake Sadhak choose SHTRU MANTRA then power related to it make his life hell. So to avoid all these it is better to have MANTRA JAPP AND DIRECTIONS from GURU.

I HAVE HEARD THAT TO GET SUCCESS ONE SHOULD PERFORM PURUSH-CHARAN; WHAR DOES THIS PURUSH CHARAN MEAN?

Number of JAPP SNKHYA as told by GURU and do this MANTRA JAPP systematically in given time is called PURUSH-CHARAN. During this time period Sadhak follows SANYMITT LIFE and he also avoids social functions as well.

THERE ARE FIVE SUB-DIVISIONS OF PURUSH CHARAN-

-

JAPP- In this MANTRA KE DEVI DEVTA KA PNCHOPCHAAR YA SHHDCHHOPCHAAR SE POOJAN KIYA JATA HAI. Beside these UPCHAAR VISHESH KRMM of DEVTA POOJA is followed in TANTRIK SADHNAA.

BHOOMI shodhan- POOJA of SADHNAA KAKSHH is called BHOOMI shodhan. In it do the POOJA OF DEVTA and then offer ARGYAA to earth then with the help of AASAN SHOODH MANTRA offer PUSHP (FLOWERS), AKSHHT (RICE) to the earth then set your AASAN and sit on it.

DEH SHODHAN- Sadhak firstly complete PRAANAAYAAM then does BHOOT SHUDHI, MAATRKAAO SE NYAAS, his ISHTT MANTRA and RISHYAADINYAAS, KARANYAAS get completed to make his body pure.

DRAVYADI SHODHAN- For Sadhak the most important thing is his SADHNAA SAMAGRI which includes YANTRA, MALA(ROSARY), PUSHP(FLOWERS), DEEP(EARTHREN LAMP), DHOOP(INCECSE), VASTRAA(CLOTHES).Firstly get them pure by mantra then carry on the next step,(DRVAASHOODHAN is an

important but long process and in this magazine its complete procedure has been given)

MALA (ROSARY) should be completely SANSKAARIT (PURE) because with impure rosary you are going to have mentally tensions from divine powers, instead of blessings, that too free of cost. If Sadhak can lit (PRJVALIT) AKHAND DEEP that will increase JAPP effect and if it is not possible then make sure during JAPP KAAL that DEEP should not get down.

HOM- It is quite good to do NITYA DASHHANSHH HAWAN of NITYA JAP some people do DASHHANSHH JAPP instead of HAWAN but according to me to do HAWAN is much better because it gives special energy and power to MANTRA.

TARPAN-After HAWAN in a big BRONZE POT (TAMBE KA BRTAN) or in a pond (SROVER) do the DASHHANSHH TARPAN of HAWAN SAMAGRI. In pot put ASHTGANDH, KAPOOR (CAMPHER), DOORVA and water and what so ever GOD, GODDESS is call his name speak 'tarpyaami namah' and offer water.

MARJAN- After TARPAN take its 1/10 part means DASHHANSHH SNKHYAA SE while standing in pond on your head make WATER ABHISHEK by DROOVA in KUMBH MUDRA and say “abhishinchaami namah”

On that very day or on the last day arrange BRAHMAN BHOJ or KUMARI BHOJ.

Then for success pray in your GURU's HOLY FEET. If anybody follows this process then definitely success will be his.

TO GET QUICK SUCCESS AT WHICH PLACES YAKSHINI SAADHNA SHOULD BE PERFORMED?

To get quick success in sadhnaa perform it at SIDHPEETH, GURU GREH, NADI TATT (BANK OF RIVER), PERVAT SHIKHR (MOUNTAIN PEAK), EKAANT VANN (LONELY FOREST), VILV YA PEEPAL VRIKSHH KE NEECHE. To get more desired results carry on it at KAAMAAKHYAA PEETH's SOUBHAAGYAA KUND or IN PRAANGANN. It may also perform successfully in ALKAPURI, PNCHMDHI, and MOUNT AABU and at HIDAMBAA MANDIR. If it is not possible

do these sadhnaa at home only but must check no other person can enter in the room.

WHAT IS THE IMPORTENCE OF SAUBHAGYA KUNDA IN THIS SADHNA?

If at the beginning of YAKSHINI SADHNA Sadhak "**OM mam sarv manorathaan poornaarthe asya saubhagya vaarih poorn yakshini siddhaye namah**"speak above given MANTRA 21 times and offer water at the name of MAA KAAMAAKHYAA then without any second thought he is bound to meet success. This process can carry on only at SOUBHAAGYAA KUND because for these types of sadhnaas this place has its own importance.

WHAT SHOULD A SAADHAK'S DIET DURING IT?

Sadhak should eat pure vegetarian food and avoid spicy and sweet food but it will be best if he used HAVISHHYA-ANN. beside this he should also follow BHOOMI SHYAAN (SLEEP ON EARTH), POORN MAANSIK AUR SHAAREERIK BRHAMCHAARYA (COMPLETE CELEBACY).

IN YAKSHINI SAADHNA IS THERE ANY PARTICULAR PROCESS WHICH SHOULD CARRY OUT BEFORE MANTRA JAAP?

If sadhak do the "Streem" mantra chanting and concentrate on the Vishuddha chakra and touches it for 10 times would be fair. And before mantra chanting "Om" also the accent should be 10 times. Before each Yakshini sadhna pure urself completely and then from full moon till 11 days chant Mahamrityunjay mantra jap for 5000 counts surely must perform. And along with it one should do with the continual mantra of three malas of Kuber Mantra should also carry out. It is an essential act, most spiritual seeker just treat it light way. Believe me some of them used to say, bhai the way you have described as chanting, as has been done and but they merely take care of purity impurity, nor they have inspeted their menta feelings and their attitude toward the sadhna and not even tested their approach.And ultimately just vaging ur tongue without thinking and said sadhna vadhna is nonsense.Yakshani's chief is Kuber. And if you will not please the governor of Yakshani, without their permission you will act intended.Dont u

think so? Similarly by worshipping the lord Mrityunjay and their mantra of this type u can acquire Kuber siddhi, and as they pleased the door are opened and you wish to complete. Only once in the year when Guru purnima occurred on full moon to the next full moon under any Vilva tree if u sit under the tree and complete the full worship of Lord Shiva and the inaugural after full shodash therapies through and chant facing towards north direction Mrityunjay mantra,the mala should be of Rudraksha. Then chant the 3 malas of the following kuber mantra-

"Om Yaksharaj Namastu Shankarpriya Bandhav,ekaan me vashangam nityam yakshineem kurute namah"

Exactly in the same way if u want success in Kuber sadhna then u must chant the kuber Shakti i.e. kubers yakshini mantra atleast one mala per day.By the way appearance of Kuber yakshini and getting theirs blessings have their own a specified method.but the rest other yakshini sadhnas and kuber sadhnas and to get success ,purposefuly have to attempt this and chant this one mala along with the kuber mantra should be done on daily basis.It influences in the financial conditions and u also get the Lord kuber's boons and blessings in form of complete help from Yakshini.

"Om kuber yakshinyai dhan dhaanya swaminyai dhan dhaanya samridhhi me dehi daapay swaha"

Thereafter start original Yakshini sadhna and if possible do kumara pujan on daily basis.

How many types of Yakshinis are their in existences? How many categories are there?

There are various classifications of yakshini.They are related to five tatvas and they are inclusive of the different tatvas power respectively.For eg one of them is about Rasayan fiels I mean Alchemy and bow u wisdom in that particular field

only or the other one in field of NIdhi Darshan and accomplishment,another one gives u the Ateendriya Lok knowledge, or someone gaves u partner happiness, or the Ras siddhi or along with love can have the financial assistance too.Similarly their presence is also observed in herbs. Like –

Bilva Yakshini

Nirgundi Yakshini

Kush Yakshini

Aamra Yakshini

Sahadevi yakshini

Pippal Yakshini

Tulsi Yakshini etc.. But whenever these yakshini sadhnas are attempted then it should be done nearby those herbs only.Anyways the springs and rainy seasons are most favourable time for doing this sadhnas.because u know why? As whole nature comes for your support in each aspect.But here u must adhere that the herb which is germinated in in such season the same yakshini sadhna related to that herb must be done to achieve the success.As they differ similarly the herbs go differ.likewise some one which is owner of wealth prosperity though on otherhand vanishes the evil things, some of them bows u wisdom knowledge, though someone masters ur conversation skills or gives u the king size happiness.For achieving complete success generally sadhnas should be done of all yakshinis.

What are other secrets of Yakshini sadhnas? Whom are guaranteed in success?

Well along with Yakshini Yantra the two more things are required and important too

Apsara Yakshini Tantra Prateek

Nishchit Yakshini sayujya Parad gutika

Beside all this one must have the picture of Yakshini either by his or her own handmade else given by guru.This favours u in ur meditation.n yakshini sadhna

the yakshini keelan is also done.In this process on the bhojpatra or any white paper the small picture of yakshini is drawn by trigandh and yantra is also made and middle of it the original mool mantra is written.If u have counted the yanta else don't write the mantra in middle.Then u have to write the mantra all around it. It should be written in such a way that first write the mantra then mool mantra's first letter then again mantra then second letter of mool mantra then again mantra and so on.It should be in circled way and must be done before starting the sadhna. And when u write the mantra while doing it the mool mantra should be enchanted for 21 times and should be written by ring finger.it should not be changed until last word get finished.This procedure is known as Keelan.And via this procedure sadhak is able to control or tie the yakshini for him.In this way yakshini is bound to bow u success or to complete ur wish. This whole activity must be accomplished in veer bhav that to be in anger mudra.Apart from it take Nishchit Yakshini sayujya Parad gutika then chant the 5 malas of mool mantra by which it would get directly connected to related yakshini.Now on this gutika u can attempt various types of yakshini sadhnas. Similarly after meditation before sadhna call yakshini, offer her asan, req her to sat on it, to demand for her closeness, to establish her in heart, then worshipping her and thereafter devoting her, various specific methods are done which are explained below. Likewise apart from mool mantras some other specific mantras and mudras are also equally significant.

(U can avail the pictures of mudras from File Section,because right now website work is under construction,so it would be uploaded after the Kamakhya Workhop)

Yakshini Mudra : Krodhankushi mudra – by which the whole world can be attracted.after using this mudra chant the following mantra and call the yakshini.

Om hreem aagachhagachh amuk yakshini swaha

After calling showing the sammukhikaran mudra chant the following mantra-

Om maha yakshini maithun priye swaha.

Then while expressing Sannidhya Karan Mudra –

Om Kaambhogeshwari swaha

After pronouncing the mantra offer her asan.After the closeknit the both palms place it on chest and

Om hreem hridayaay namah.

chant this mantra. Then in Pramukhi mudra means by both the hands closeknit spreadup the index and middle finger and chant the following mantra and worship the yakshini by gandh,flowers,lamp, dhup, sweets etc..

Om sarva Manoharini swaaha.

After whole jap again call in Avahan mudra shake the left hand outside and chant the following mantra and do the consecration process, remember while calling the right thumb is wobbled from outer side to inner side and inconsecration process left thumb is wobbled from inner to outer side.

Om hreem gachh gachh amuk yakshini punaragamanaay swaha

Well its impossible if u use such processes and ur wish is not fulfilled,If u are really not getting the proper knowledge of above mudras then u can listen Tantra Rahasyam cd or cassete and do the five mudras mentioned in it for 10-10 seconds.Is also favours u i.e. Dand,Matsya,Shankh,Abhay, and hriday mudra.

From influence of above mantras the jap and Purashcharan Avadhi completes deliberately these powers are not appearing then –

Chant the 'Om Bandh Bandh han han amuki hum' mantra for 8000 times and 21 malas of – 'Om sarvasiddhiyogeshwari hum phat ' mantra. It will surely lead u towards success.

All above process are very secretful and rare.It should be used accordind to appropriate time.

To establish a friendly relation between near and dear one



आधुनिक सभ्यता हमारे सामने एक एक से ऐसे अजूबे रखती जा रही हैं की जो कुछ समय पहले संभव नहीं था, वह आज तकनिकी के कारण सभव होता जा रहा हैं और विज्ञानं के नये नए आविष्कार से हमारा जीवन सुख सुविधा से और भी संपन्न होता जा रहा हैं , और यह स्वीकार करने में किसी को कोई भी हिचक नहीं होगा की आज इस आधुनिक सभ्यता के वरदान के बिना जीना असंभव तो नहीं पर बहुत कठिन अवश्य ही हो जायेगा

.

पर इस सुख सुविधा की आड़ में कुछ क्या बहुत कुछ खोता भी तो जा रहे हैं ,,हम सभी महसूस तो क रते हैं पर क्या करे जीवन की आप धापी ही ऐसी हैं , और अकेले हम क्या कर लेंगे पर ऐसी सुख सुविधा का अर्थ क्या हैं जब मन में शांति न हो ,, पर चलिए मन कि शान्ति को छोडिये वह तो एक अलग विषय हैं पहले संयुक्त परिवार थे ... जो आज के दिन एक आश्चर्य से बन गए हैं लोग बहुत ही आश्चर्य से देखते हैं कि आप के यहाँ अभी भी इतने लोग साथ में ..

..

पर चलिए यह भी संभव न हो पाए कि एक साथ रहे ,, तो दूर से ही सही कम से कम एक दुसरे के दुःख सुख में साथ रहे यही भी किसी वरदान से कम नहीं हैं, की जब भी वे हमारे यहाँ या हम उनके यहाँ जाए ,, तो पूरे स्नेह के साथ वह भी हमारा स्वागत करे ,और हम भी ऐसा करे,

पर हम तो करना चाहते हैं पर वह लोग ही अड़ियल हैं ,,उनका स्वभाव् ही ऐसा हैं,,उन्हें अपने उपर बहुत घमंड हैं .अगर एक वह सुधर जाये तो हम लोग का स्नेह वापिस आ सकता हैं ऐसी अनेक बातो से कौन नहीं बचना चाहता क्योंकि तीज त्यौहार का एक अपना ही आनद हैं यदि चाचा ,मामा , फूफा सभी के परिवार स्नेह से मिले ..

पर चलिए यह भी बहुत बड़ी सी बात हैं अब तो विवाह के नाम से ऐसे ऐसे सम्बन्ध आ रहे जो बस अभी एक दशक पहले सुने भी नहीं गए थे , जहाँ पति पत्नी का एक ही कमरा होता था उन्हें एक ही इकाई माना जाता हैं/ था , पर अब तो इधर भी अलग अलग कमरे चाहने लगे हैं ,,

किसे समझाए की स्नेह ही जीवन का आधार हैं उसके बिना सारी चीजे एक यांत्रिक हैं

इस बात को ध्यान में रखते हुए एक सरल सा प्रयोग जिसकी पूरी बुनियाद आपके विस्वास पर ही टिकी हैं आपके सामने हैं.

मन्त्र :

धां धीं धूं धुर्जटे पत्नि वां वी वूं वाग्धिश्वरि
क्रां क्रीं . क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं शुभं कुरु ||

आपको भगवती महाकाली की जो भी सामान्य पूजन बन सके करके इ स प्रयोग को संपन करे , हर पूजन में दीपक का एक अर्थ होता हैं वह वास्तव मे अग्नि देवका प्रतीक ही होता हैं तो एक दीपक जप काल में तो लगा रहना ही चाहिए

अब कितने दिन तक करे , यह तो आप के ऊपर हैं वेसे तो यह कोई कठिन नहीं हैं तो जब तक आपके अनुसार आपके या तो अपने परिवार में या आपके रिश्तेदारों मतलब निकट संबधीयो से जब तक अनुकूलता न मिले करते जाये पर कितना करे जप यह भी आपके ऊपर ही हम छोड़ देते हैं वेसे एक माला तो कम से कम करना ही चाहिए ....

****

There are many miracles that has been brought in front of our eye by the modern science, what that has not been possible , some times back , is now became a reality . and our way of life is full of more and more comforts. And no one can deny the blessing of modern technology . without that our life would be much harder.

But we are paying a lot for these comforts , we all are feeling the same but what we can do , this is the way of modern life and what we can be done alone . when you are not having peace in your heart/mind, ok just leave this question, that became a separate subject, in the beginning there were united family , but now a days those also become a very rare things, people now a days can not believe that still there are still some united family.

But when this would not be possibility to have united family than even we are residing a distance but common love and respect should be part of our relation , like that when we visit there , they became really happy and same is applicable to us.

We all want to do that , but these are the common excuse like he is not co operating, they are very rigid , they are very egoistic are very common . but

we all feel that when any good or festive occasion comes and if we all together than our joy will be thousand fold increases.

But just leave that , consider relation between husband and wife sometimes back they (both)are considered a single entity /unit but now a day such a relationship coming/increasing in that even both are demanding separate rooms in many family.

Who has the time to understand that sneh/love is the basic foundation of any relation. Other wise things become just mechanical .

To consider all those things here is the very simple prayog , the success of that totally rests upon your faith ,

Mantra :

dhaam dhiim dhoom dhoorjateh pathni vaam vim vum vaagadheeshwari

kraam krim kroom kalikaa devi shaam shiim shoom me shubham kuru

just do the simple poojan of goddess Mahakali and light an earthen lamp .

how many days this prayog has to be done is totally depend upon you, when you feel that the needed happiness and cooperation comes than you can stop, and second how many round of rosary is need , at least one round is must. no other rules are required .

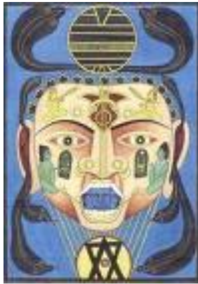
****NPRU****

Posted by Nikhil at 9:15 PM No comments:

Labels: KAARYA SIDDHI SADHNA, TANTRA SIDDHI

Friday, September 16, 2011

Mekhala prayog for tantra siddhi



तंत्र में एक से एक विधान कहे जाते हैं या दिए जाते हैं साधारण साधक को यह बहुत अचरज लगता हैं की की यह भी प्रयोग करना चाहिए फिर आ जाता हैं की यह भी करना चाहिए , फिर यह भी जरुरी भी हैं इसके बिना सफलता नहीं मिल सकती हैं , या फिर इसके लिए यह भी विधान भी जरुरी हैं , अब क्या क्या हम और क्या नहीं या तो यह विधान यह साधना को ही करते रह जाये , मूल साधना को कब करे ?? तो पहले यह हम समझ ले , की यह क्षेत्र ऐसा नहीं हैं की बस यन्त्र माला ले ली और कल एक अनुष्ठान कर लिया और हम और आप विश्व प्रसिद्द हो गए , थोडा सा देखें की जिन्होंने सफलता पाई हैं कितनी कठिनाई सहन की हैं .

पर आप कहेंगे की वह एक ,आपके पहचान का हैं उसे तो एक ही बार में .. उसने तो यह नहीं और यह भी नहीं किया था .....तब भी ..

मित्रों , तंत्र जगत में कुछ भी एक दम से नहीं होता हैं अगर किसी ने विगत जन्मो में साधना की हैं या वह साधना की हैं और उसका थोडा सा ही रास्ता बाकि था तो उसे इस जीवन में जल्दी ही सफलता मिल ही जाएगी/जाना ही चाहिए न पर इसका मतलब हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे की कोई आ कर पहले हमें हमारे विगत जीवन के बारे हमें बताये की यह साधना करो ..

नहीं नहीं .

यह तो भाग्य वादी दृष्टी कोण हो गयी हैं . तो हमें जब तक सफलता नहीं मिल जाये तब तक अपनी साधना के लिए विशेष विशेष विधान समय समय पर अपनाना ही चाहिए , यह बिलकुल हैं की कोई मात्र एक किताब पढ़ कर टॉप कर लेता हैं तो किसी किसी को tution भी लेनी पड जाती हैं पर सफल तो सभी कहलाते हैं .

ठीक इसी पूज्य सदगुरुदेव जी ने अनेको विधान दिए हैं आप से जिसको लगे यह विधान उनके लिए उपयोगी हो सकता हैं वह आगे आये और इस विधान को करे

Imp:

पर ध्यान रखे यह विधान या बहुत ही उग्र हैं इसलिए कमजोर ह्रदय वाले को इस के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए

मंत्र :

ॐ मेखले सर्व सिद्धिं तन्त्र सिद्धिं कुरु कुरु नमः

साधारण नियम :

- दिशा दक्षिण.
- इस मंत्र को रुद्राक्ष या काली हकीक माला से जपना हैं
- काले वस्त्र पहन कर और काले आसन ही उपयोग करना हैं
- निखिलेश्वरानंद कवच का उपयोग करे और आवश्यक रक्षा विधान करके ही इस प्रयोग में जाये
- क्योंकि स्मशान कोइ मजाक या प्रयोग करने की जगह नहीं हैं इसका विशेष ध्यान रखे ,
- स्मशान मे रात्रि काल मे (after 10 pm)२१ माला २१ दिन तक जपने से आगे की जाने वाली साधनाओं में तन्त्र सिद्धि होती है

और साधक को आगे की साधनाओ के लिए देवी बिम्बात्मक रूप मे दर्शन देकर आशीर्वाद देती है

आज के लिए बस इतना ही

****

There are various sadhana and prayog are in tantra sadhana jagat , and its very natural that a common sadhak often get confused on reading that this sadhana /prayog is must , and this too , and without this prayog one cannot get success , and this is an essential sadhana , than what to do or not to do is a big question ?, if we go this way so it seems when we have time for our main sadhana ,???

Than at first we understand that , this is not such a field that you have taken one yantra and mala and just do a single anusthan and get world fame. Just see those who have got success how much hard work they took.

But on replying this simply you would say that , he is one whom you know , did not do any of such thing and got success in one attempt. why Is it so …

Friend there is no sanyog/coincidence in tantra sadhana , if he undertook that sadhana in his previous life and just little more was needed to have the success, s o its quite natural that in this life he will get success in very little minimum efforts. And it should be , but that does not means that we just sitting effortlessly , waiting for some one to come and tell that this sadhana you have to do ,since in past life..

No no

Than is just not a good approach ,we should apply each and every sadhana that will give us success in our aimed sadhana, which is in someone views helpful for success in sadhana . this is just like that someone get top in exam by just reading a

book and other one has to take tuition , but on the success both are considered successful and equal .

So considering these facts poojya Sadgurudev ji has given so many prayog , which ever you think good for you , go ahead .

Imp: keep it in mind this prayog is tough , so do not undertake it in any cost if you are having weak in heart.

Mantra :

Om mekhle sarv siddhim tantra siddhim kuru kuru namah

General rules :

- Direction would be south
- Do jap with using either rudraksha or black hkik mala .
- Use black color aasan and clothes.
- Chant nikhileshwaranand kavach and do necessary rakshatmak vidhan .
- Always remember shamshan is not a place for joke or for experimenting .keep this always in mind.
- In shamshan , night time(after 10pm) do jap 21 round of rosary for 21 days , than you got tantra siddhi .

And devi will bless you for getting success in coming sadhana .

This is enough for today